

इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



भारतीय विद्ययावर्धन 180000 दिगम्बर जैन जी का संयम स्वर्ण महोत्सव 17 जुलाई 2018
Sanskritization: Anniversary of Mohanji Digambaracharya 180000 DIGBHAR JAIN SAMVART SANGHAT
Sankshipta: 180000 Year 2017/18

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
जनवरी 2022			
16	रविवार	चतुर्दशी	आर्द्रा
17	सोमवार	पूर्णिमा	पुनर्वसु
18	मंगलवार	प्रतिपदा	पुष्य
19	बुधवार	द्वितीया	आश्लेषा दि/रा
20	गुरुवार	तृतीया	आश्लेषा
21	शुक्रवार	चतुर्थी	मघा
22	शनिवार	पंचमी	पूर्वाफाल्गुनी
23	रविवार	षष्ठी	उत्तराफाल्गुनी
24	सोमवार	सप्तमी	हस्त
25	मंगलवार	अष्टमी	चित्रा
26	बुधवार	नवमी	स्वाती
27	गुरुवार	दशमी	विशाखा
28	शुक्रवार	एकादशी	अनुराधा
29	शनिवार	द्वादशी	मूल
30	रविवार	त्रयोदशी	पूर्वाषाढ़
31	सोमवार	चतुर्दशी	उत्तराषाढ़
फरवरी 2022			
1	मंगलवार	अमावस/प्रतिपदा	श्रवण
2	बुधवार	द्वितीया	धनिष्ठा
3	गुरुवार	तृतीया	शतभिषा
4	शुक्रवार	चतुर्थी	पूर्वाभाद्रपद
5	शनिवार	पंचमी	उत्तराभाद्रपद
6	रविवार	षष्ठी	रेवती
7	सोमवार	सप्तमी	अश्विनी
8	मंगलवार	अष्टमी	भरणी
9	बुधवार	अष्टमी	कृत्तिका
10	गुरुवार	नवमी	रोहिणी
11	शुक्रवार	दशमी	मृगशिरा
12	शनिवार	प्रतिपदा	आर्द्रा दि/रा
13	रविवार	द्वितीया	आर्द्रा
14	सोमवार	तृतीया	पुनर्वसु
15	मंगलवार	चतुर्दशी	पुष्य

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: जनवरी-14,23,24,27 फरवरी-6,7,11
मशीनरी प्रारंभ: जनवरी-24,28 फरवरी-2,7,14
वाहन खरीदने: जनवरी-17,24 फरवरी-2,3,7,11,14

तीर्थंकर कल्याणक

- 16 जनवरी: भगवान अभिनंदननाथ जी ज्ञान कल्याणक
- 17 जनवरी: भगवान धर्मनाथ जी ज्ञान कल्याणक
- 23 जनवरी: भगवान पद्मप्रभ जी गर्भ कल्याणक
- 29 जनवरी: भगवान शीतलनाथ जी जन्म तप कल्याणक
- 31 जनवरी: भगवान आदिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
- 01 फरवरी: भगवान श्रेयासनाथ जी ज्ञान कल्याणक
- 02 फरवरी: भगवान वासुपुत्र ज्ञान कल्याणक
- 04 फरवरी: भगवान विमलनाथ जन्म तप कल्याणक
- 06 फरवरी: भगवान विमलनाथ ज्ञान कल्याणक
- 10 फरवरी: भगवान अजितनाथ जी तप कल्याणक
- 11 फरवरी: भगवान अजितनाथ जी तप कल्याणक
- 13 फरवरी: भगवान अभिनंदननाथ जी जन्म तप कल्याणक
- 14 फरवरी: भगवान धर्मनाथ जी जन्म तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

- 18 जनवरी: षोडशकारण व्रत प्रारंभ
- 31 जनवरी: मोक्ष दिवस
- 01 फरवरी: लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
- 04 फरवरी: लब्धिविधान व्रत पूर्ण
- 05 फरवरी: दशलक्षण व्रत प्रारंभ
- 05 फरवरी: पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
- 10 फरवरी: पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
- 14 फरवरी: रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
- 15 फरवरी: दशलक्षण व्रत पूर्ण
- 16 फरवरी: रत्नत्रय व्रत पूर्ण
- 17 फरवरी: षोडशकार व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

- 17 जनवरी : 28/37 बजे से 31/09 बजे तक ।
- 23 जनवरी : दिन रात बजे तक ।
- 27 जनवरी : 08/51 बजे से 31/07 बजे तक ।
- 30 जनवरी : 24/23 बजे से 31/06 बजे तक ।
- 31 जनवरी : 21/57 बजे से 31/06 बजे तक ।
- 06 फरवरी : 17/10 बजे से 31/03 बजे तक ।
- 08 फरवरी : 21/27 बजे से 9-31/02 बजे तक ।
- 14 फरवरी : 11/53 बजे से 30/59 बजे तक ।
- 15 फरवरी : 13/49 बजे से 30/58 बजे तक ।



संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 274 • जनवरी 2022

• वीर नि.संवत् 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

- भारत के संविधान में संस्कृति और शांति के संदेश 08
- भारतीय संत विवेकानंद 10
- आजाद भारत में पाश्चात्य संस्कृति के गुलाम 14
- अंतरिक्ष पर्यटन 16
- नारी शिरोमणि कालल देवी के बाहुबली 19
- शाकाहार के लोकव्यापीकरण हेतु मानवीय वैज्ञानिक आधार 23
- अर्थ और प्रकाश को ज्ञान का करण मानने की समस्यायें 36
- पंडित (डॉ.) दरबारी लाल तजी कोठिया समाधि दिवस 38
- वरिष्ठ नागरिक: वृद्धावस्था में आशा, आस्था और साहस का महत्व 40
- प्रवचन: ऐसा पुण्य अर्जित करिये जो कई पीढ़ियों तक खत्म न हो 40
- समयसार में विवेचित तत्व विद्या के स्रोत 47
- टीबी (ट्यूबरकुलोसिस) के लक्षण, कारण इलाज 51
- आवश्यकता अवसाद के विरुद्ध जोरदार शंखनाद 54
- मोटापा में जीवन शैली से बचाव संभव है 56
- अंधेरी दुनिया का बिंदुओं से कम्प्यूटर का सफर 60

बाल कहानी

- मूँछ दिखायें या माक्स लगायें जरूरी कौन 59

कविता

- हे जैनत्व प्राण विद्यासागर 09
- आत्म संतुष्टि 15
- मन्नत पूरी कर दे 25
- उनकी दास्तान केलम्हे अजीब से 34
- जिंदगी की बिसात है 39
- क्यों तकरार अपनी 41
- उम्मीद-ए-किरण 49

कहानी

- उदास ऊषा 43

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
- चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन : 21 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28
- दुनिया भर की बातें : 29 • इसे भी जानिये : 34 • दिशा बोध : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
- वरिष्ठ नागरिक : 40 • हमारे गौरव : 50 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
- बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का बाकी सदस्यता शुल्क जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन : 2100/- (15 वर्ष)
-संरक्षक : 5001/- (सदैव)
-परम सम्माननीय : 11000/- (सदैव)
-परम संरक्षक : 15001/- (सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक -ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)

• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय, सलमान खुशीद ने विगत माह हिन्दुत्व की तुलना आतंकवादी संगठन आई.एस.से की जिसे लेकर पूरे देश में वैचारिक उथल-पुथल हुई सच यह है कि हिन्दुत्व को बदनाम करने के लिये देश-विदेश में कुछ लोग समय-समय पर हरकत करते रहते हैं उनके पास एक ही एजेन्डा होता है कि हिन्दुत्व का अपमान कैसे करें कभी-कभी हिन्दु देवी देवताओं को भी खुले आम अपमानित करते हैं। लेकिन जब चुनाव का समय आ जाता है तो हिन्दुओं का वोट प्राप्त करने के लिये ऐसे लोग ही तिलक लगाने लगते हैं जनेऊ पहनने लगते हैं और हिन्दु का हितेष्टी सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं पर यह वोट बैंक का धिनौना खेल तो चलता ही है परन्तु कुछ लोग हिन्दुओं के प्रति नफरत फैलाने का समय समय पर प्रयोग करते हैं हिन्दुत्वमात्र धर्म नहीं अपितु एक जीवन पद्धति है इस पर चिंतन करना बहुत आवश्यक होगा।



महसूस कर रहा हूँ कि जब महत्वाकांक्षा की पूर्ति व्यक्ति की नहीं हो पाती है तो वह अवसाद के घेरे में आ जाता है अवसाद को आचार्य समन्तभद्र देव ने संल्लेखना में बाधक का सबसे बड़ा कारण बताया है शोक, भय और अवसाद तीनों मानवीय विकार व्यक्ति के चिंतन को शून्य कर देते हैं और यह मन की छाया उदासी उन्माद में बदल देती हैं परन्तु अवसाद का प्रारंभ तनाव से होता है यह अवसाद जीवन रूपी वृक्ष की जड़ पर दीमक का काम करता है परन्तु अंधविश्वासी लोग देवी-देवताओं का प्रकोप मानकर के भ्रमित हो जाते हैं अतः अवसाद का सच जानकर समाज को अंध विश्वास से बचाने के लिये एक सटीक अभियान की आवश्यकता है जिसकी भूमिका संस्कार सागर पत्रिका बखूबी निभा सकती है।

अंशुल पारासर लटेरी

• सम्पादक महोदय, हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिले 72 वर्ष गुजर चुके हैं किन्तु इस मातृ भाषा को अभी तक व्यवहारिक रूप से अम्लार्थ जामा पहनाना संभव नहीं हो पा रहा है अनुभवों से यह सिद्ध हो चुका है कि केवल संवैधानिक प्रावधान गति को बढ़ा नहीं सकते हैं किन्तु जन भावना ही हमारी राजभाषा को राष्ट्रभाषा में बदल सकती है यह कार्य संभव नहीं है क्योंकि पिछले सात दशकों में हिन्दी भाषा के प्रति सकारात्मक परिवेश का निर्माण हुआ है एक समय अंग्रेजी भाषा भी कमजोर और नगण्य भाषा में थी फ्रेंच भाषा ने अंग्रेजी को पीछे ढकेल दिया था किन्तु वह आज व्यवहारिक भाषा बन चुकी है। अतः हमें भी हिन्दी के प्रति अथक प्रयास जारी रखना चाहिये मेहनत रंग लायेगी हिन्दी एक दिन राष्ट्रभाषा अवश्य बन जायेगी।

विवेक जैन, जामघाट

श्रीमती खुशबू जैन, गुना

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के पिछले अंक में हमारे गौरव स्तंभ के अंतर्गत पट्ट महादेवी शान्तला का जीवन चरित्र पढ़ने को मिला होयसल वंश की महारानी शान्तला का व्यक्तित्व हर दृष्टिकोण से महान था जीवन व्यवहार के हर पक्ष को उन्होंने आत्मसात करते हुये लोक व्यवहार को भी प्राथमिकता दी थी उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण भगवान बाहुबली की शरण में श्रवणबेलगोला में बिताये थे निस्पृह, निष्काम साधना पट्टमहोदवी शान्तला की एक अनूठी विशेषता रही है उनकी सफल संल्लेखना तत्त्वज्ञान की गहराई को प्रदर्शित करती है इस ऐतिहासिक महादेवी का संस्कार सागर ने स्मरण कराके युवा पीढ़ी में जागरूकता पैदा करने का अनूठा कार्य किया है। एतदर्थ संपादक जी को धन्यवाद!

अभिषेक जैन, सांवरमति

भक्ति तरंग चेतन ज्योति



देखे सुखी सम्यकवान ।
सुख दुख को दुःख रूप विचारें
धारे अनुभवज्ञान ॥
नरक सात में दुःख भोगें,
इन्द्र लखै नित मान ।
भीख मांगकै उदर भरें,
न करें चक्री को ध्यान ॥1॥
तीर्थकर पद को नहीं चावें,
जदपि उदय अप्रमान ।
कुष्ठ आदि बहु व्याधि न,
चहत मकर ध्वजथान ॥2॥
आधि व्याधि निरबाध अनाकुल,
चेतन ज्योति पुमान ।
द्यानत मगन सदा तिहिमाहीं,
नाहीं खेद निदान ॥3॥

इस संसार में सम्यक्त्वी पुरुष ही सुखी देखे जाते हैं जो संसारिक सुख व दुख दोनों को दुख रूप ही समझते हैं, विचारते हैं। जो मात्र अनुभवज्ञान को केवलज्ञान को धारण करते हैं।

जो सातवें नरक के दुखों को भोगते समय दुखी नहीं होते हैं इन्द्र के वैभव को तिनके के समान तुच्छ समझते हैं भिक्षा मांगकर पेट भरना हो तब भी चक्रवर्ती के सुखों का ध्यान वांछा नहीं करते अर्थात् दोनों स्थितियों को महत्त्व नहीं देते सब स्थितियों में समानभाव/समताभाव रखते हैं ऐसे सम्यक्त्वी पुरुष ही इस संसार में सुखी देखे जाते हैं।

जो तीर्थकर पद की कामना नहीं करते यद्यपि अभी कर्मों का उदय अप्रमाण/असीम है। न कुष्ठ आदि व्याधियों की पीड़ा से अपने को दुखी करते न वे मकरध्वज (कामदेव) के जैसी सुन्दर देह की कामना करते ऐसे सम्यक्त्वी पुरुष ही इस संसार में सुखी देखे जाते हैं।

आधि-व्याधि से परे, बाधारहित निराकुलता ही उस चैतन्य पुरुष की ज्योति हैं, तेज हैं, ऊर्जा हैं, बल है। द्यानतराय कहते हैं कि वह उसमें ही सदा मगन रहता है उसे किसी प्रकार का कोई खेद नहीं और न किसी प्रकार की कोई कामना या निदान ही ऐसी सम्यक्त्वी पुरुष ही इस संसार में सुखी देखे जाता है।



हिंसा बनाम प्रदूषण अहिंसा बनाम पर्यावरण

जलवायु की चिंता को लेकर ग्लासगो में विश्व के सभी देश एकत्रित हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोलर विद्युतीकरण का सूत्र देकर सारे विश्व को चकित कर दिया भारत के इस प्रस्ताव से दुनिया के देशों को यह एहसास कि भारत में अभी भी वह चिंतन है जो विश्व को प्रदूषण से बचा सकता है और पर्यावरण सुरक्षा में अहम् भूमिका निभा सकता है। भारत के संतों ने और भगवंतों ने एक ही आवाज दी कि अहिंसा पर्यावरण सुरक्षा का अमोघ आधार है और हिंसा प्रदूषण विस्तार का मुख्य कारण हैं जल विद्युत और तापीय विद्युत में हिंसा और प्रदूषण दोनों ही बिन्दु दिखाई देते हैं किन्तु सोलर विद्युतिकरण में न तो हिंसा है और न प्रदूषण। जलवायु परिवर्तन को सीमित करने के लिये एक मात्र अहिंसा के सिद्धांत को व्यवहार में आत्मसात करने की आवश्यकता है नदियों को साफ करने के लिये कोई अलग से प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है बस हम इतना करें कि नदियों में गंदगी डालना बन्द कर दें नदियां अपने आप साफ हो जायेगी। वनों की सुरक्षा करने के लिये वृक्षारोपण करने की आवश्यकता नहीं है बस आवश्यकता अगर कोई है तो हम वृक्षों की हिंसा करना बन्द कर दें अर्थात् हम वृक्षों को काटना बन्द कर दें तो वनों की सुरक्षा स्वयमेव हो जायेगी, वायु प्रदूषण को बन्द करने के लिये हमें एक ही कार्य करना होगा वह यह कि हम अनावश्यक यातायात से बचें तथा इलेक्ट्रॉनिक वाहनों का प्रयोग करें। तथा प्लास्टिक का प्रयोग रोक करके पृथ्वी पर कचरे का भार बढ़ाने से रोका जा सकता है क्योंकि प्लास्टिक कचरे से समुद्र वायु व नदियाँ प्रभावित होती है पराली जलाने से कीटाणुओं की हिंसा होती है प्रदूषण फैलता है हवा जहरीली होती है इसलिये कर्तव्यनिष्ठ नागरिक एवं जैन श्रावक एक दूसरे पर दोषारोपण करने की अपेक्षा स्वयं जागरूक रहते हैं और अहिंसापथ अपनाकर सबके आदर्श बनते हैं।

भारत के संविधान में संस्कृति और शांति के संदेश

* ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर *

विश्व के सभी देशों के पास अपना एक संविधान है क्योंकि संविधान ही किसी राज्य की सुचारू व्यवस्था बनाने में सक्षम होता है संविधान के बिना कानून व्यवस्था लचर हो जाती है। अथवा यह भी कह सकते हैं कि संविधान बिना अराजकता और आतंक अपनी जड़े जमा लेता है और कानून व्यवस्था भंग हो जाती है लोकतंत्र खतरे में पड़ जाता है वर्ग संतुलन बिगड़ जाता है यूं भी कह सकते हैं किसी वर्ग का शोषण होने लगता है राजधर्म का पालन करना संभव नहीं हो पाता है तानाशाही सर उठाने लगती है और अहिंसा के बादल मड़राने लगते हैं सरकारें अस्थिर हो जाती हैं गृह युद्ध जन्म लेने लगते हैं अतः हम कह सकते हैं विश्व शांति के लिये हर देश का संविधान चुस्त दुरुस्त होगा तो विश्व शांति भी सुरक्षित होगी।

भारत का अपना संविधान है जिस संविधान में 9 अध्याय और 396 अनुच्छेद हैं इस संविधान में समानता के आधार पर हर नागरिक की स्वतंत्रता और सुरक्षा करने का प्रावधान किया गया है धर्म निरपेक्षता या पंथ निरपेक्षता को प्राथमिकता देते हुये भारतीय संस्कृति के सभी अभिन्न अंगों का सम्मान किया गया है अतः जब भारत के संविधान की पाण्डुलिपी तैयार की जा रही थी तब संविधान की हस्त लिखित पाण्डुलिपि पर चित्र बनाने वाले प्रसिद्ध चित्रकार नन्दलाल बोस के दिल और दिमाग में सर्वधर्म सम्भाव की अनूठी कल्पना तैर रही थी उन्होंने भारतीय संविधान की रिक्तता को पूर्ण करने के लिये कुछ ऐसे चित्र बनाये जो भारत की गौरव गाथा के अध्याय बन गये। उनमें भगवान राम का चित्र उनकी मर्यादा का प्रकाशन कर रहा है करुणा को मुखरित करने वाले गौतमबुद्ध का भी चित्र संविधान में दृष्टि गोचर होता है तथा अहिंसा के महान अवतार तीर्थंकर महावीर का चित्र जैनत्व का सम्मान परिलक्षित करता है।

संविधान के निर्माताओं ने भारत के सभी धर्मों को सम्मान देकर राजधर्म के परम कर्तव्य का निर्वाह करने का सफल परिचय दिया है। जैन धर्म भारतीय संस्कृति की माटी का अभिन्न अंग है जब से भारत का सांस्कृतिक प्रवाह गति शील हुआ है तब से ही वैदिक और श्रमण संस्कृति की पुनीत धारायें अपने अस्तित्व को भारत की माटी में समावेशित करती हुई चली हैं। भारत के संविधान निर्माता निर्मात्री संविधान सभा में पाँच प्रतिनिधि श्रमण संस्कृति जैनत्व से संबंध रखने वाले रहे हैं इससे यह सिद्ध होता है कि जैन धर्म संविधान निर्माताओं के नयनों के सामने तैरता रहा है अतः संविधान की मूल हस्तलिखित पाण्डुलिपि में छठवें भाग पर भगवान महावीर का चित्र चित्रकार नन्दलाल बोस ने बड़ी श्रद्धा के साथ सृजित किया है यह

चित्र जिस तूलिका से बनाया गया है उस तूलिका में उन रेखाओं को अपनी कोख से निकाला है जिन रेखाओं ने भारतीय श्रमण संस्कृति के प्रवर्तक भगवान महावीर को साकार किया है यह भगवान महावीर की साकार हुई चित्रकृति बल खाली हुई रेखाओं से आकर्षक रूप पैदा कर रही है इन रेखाओं ने विश्वशांति के आधार भूत अहिंसा पक्ष को शक्तिमान बनाया है और यही अहिंसा पक्ष जब शक्तिमान हुआ तो विश्वशांति का सपना भारतीय संविधान निर्माताओं को साकार होते हुये दिखा। जैन श्रमण संस्कृति के सिद्धांतों के आधार पर ही अमन चैन को विश्वव्यापी बनाया जा सकता है बशर्ते अहिंसा का साथीदार सत्य को भी जीवन व्यवहार में अपनाया जाये और राजनैतिक मंच पर सत्य अहिंसा को प्रभावी तौर पर प्रस्तुत किया जायें। यही विश्व शांति का मूल मंत्र बनेगा।

कविता

हे जैनत्व प्राण विद्यासागर

हे महा संत विद्यासागर
आपने भर दी धर्म की गागर
कलयुग को दिया, सतयुग का वेश
आपके श्री सान्निध्य में लगता है,
चतुर्थ काल सा भारत देश।
आपका त्याग, आपकी तपस्या
जीव कल्याण का चाव स्तुत्य है।
आपको नमन है, अन्तर के अंतरंग भावों से
सहस्रादिक बार।

हे श्रमण श्रेष्ठ विद्यासागर, धर्म की समीक्षायें
जो काल के प्रभाव से, हो गई थी मौन
जाग चुकी हैं, आपके श्रीमुख से
अनवरत गुंजायमान हैं,
भूतल पर ही नहीं, पवन पर सवार होकर,
आसमान में भी, द्रुत वेग से,
तीर्थंकर वाणी के समान।

हे महामुनि विद्यासागर हमने पढ़ा है सुना है
भारत देश में, पंचमकाल में,
जन्म नहीं लेंगे तीर्थंकर
नहीं होगा तीर्थंकर विहार
नहीं सजेंगे समवशरण

पर आपके आहार से, विहार से
आचार से विचार से,
वाणी की गूँज से, ज्ञान के भण्डार से,
आप तीर्थंकर नहीं होकर भी,
प्रभावी हैं तीर्थंकर के समान।
हे जैनत्व प्राण विद्यासागर,
अक्षय पुण्य फलित होगा
आप तीर्थंकर रूप ही जन्म लेंगे
तीर्थंकर रूप ही विहार करेंगे
महान भारत देश में, आगामी चतुर्थ काल में।
स्वर्ग से देवगण आकर ही,
आपका समवशरण सजायेंगे
हम भी अपने विरकल पुण्य के बल,
आपके समवशरण में पहुँच पायेंगे
दर्शन कर, वाणी सुन हर्षायेंगे,
नतमसतक हो जायेंगे जय जयकार लगायेंगे
देवाधिदेव, महादेव प्रथम तीर्थंकर
श्री ऋषभदेव स्वामी के समान।
आगामी तीर्थंकर को, भावी तीर्थंकर को
शत् शत् नमन, शत् शत् प्रणाम
वाणी को मौन, वाणी को विराम।

भारतीय संत विवेकानंद

✽ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✽

स्वामी विवेकानन्द (जन्म 12 जनवरी, 1863- मृत्यु 4 जुलाई 1902) वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथदत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुआत मेरे अमरीकी भाइयों एवं बहनों के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली परिवार में जन्में विवेकानंद आध्यात्मिकता की ओर झुके हुये थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे स्वयं परमात्मा का ही एक अवतार हैं, इसलिये मानव जाति की सेवा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानंद ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का पहले ज्ञान हासिल किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1983 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिये कूच किया। विवेकानंद के संयुक्त राज अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धांतों का प्रसार किया, सैकड़ों सार्वजनिक और निजी व्याख्यानो का आयोजन किया। भारत में, विवेकानंद को एक देशभक्त संत के रूप में माना जाता है और इनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस में मनाया जाता है।

भारत में स्वामी विवेकानंद की जयन्ती अर्थात् 12 जनवरी को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयानुसार सन् 1984 ई. को अन्तराष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया गया। इसके महत्त्व का विचार करते हुये भारत सरकार ने घोषणा की कि सन् 1984 से 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानन्द जयन्ती का दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में देशभर में सर्वत्र मनाया जाये। ऐसा अनुभव हुआ कि स्वामी जी का दर्शन एवं स्वामी जी के जीवन तथा कार्य के पश्चात् निहित उनका आदर्श-यही भारतीय युवकों के लिये प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत हो सकता है।

वास्तव में स्वामी विवेकानन्द आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। विशेषकर भारतीय युवकों के लिये स्वामी विवेकानन्द से बढ़कर दूसरा कोई नेता नहीं हो सकता। उन्होंने

हमें कुछ ऐसी वस्तु दी है जो हममें अपनी उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त परम्परा के प्रति एक प्रकार का अभिमान जगा देती हैं। स्वामी जी ने जो कुछ भी लिखा है वह हमारे लिये हितकार है और होना ही चाहिये तथा वह आने वाले लम्बे समय तक हमें प्रभावित करता रहेगा। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उन्होंने वर्तमान भारत को दृढ़ रूप से प्रभावित किया है। भारत की युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द से निःसृत होने वाले ज्ञान, प्रेरणा एवं तेज के स्रोत से लाभ उठायेगी।

अमेरिका में दिया गया भाषण, मेरे अमरीकी भाइयों और बहनों !

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में सन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रचारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृत दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मान कर स्वीकार करते हैं। मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुये गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में उन यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट को स्थान दिया था जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने महान जरथुष्ट जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाइयों मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ जिसकी आवृत्ति मैं बचपन से कर रहा हूँ और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम् । नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥

अर्थात् जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं उसी प्रकार हे प्रभो ! भिन्न भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है स्वतः ही गीता के इस अद्भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत के प्रति उसकी घोषण करती है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्तमानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥

अर्थात् जो कोई मेरी ओर आता है-चाहे किसी प्रकार से हो मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुये अन्त में मेरी ही ओर आते हैं।

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य की चुकी हैं। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं व उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को ध्वस्त करती हुई पूरे के पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि ये वीभत्स दानवी शक्तियाँ न होती तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया है और मैं आन्तरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टा ध्वनि हुई है वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार यो लेखनी के द्वारा होने वाले सभी उत्पीड़न का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारस्परिक कटुता का मृत्यु निनाद सिद्ध हो।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं -

1. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
2. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
3. बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिये।
4. धार्मिक शिक्षा पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिये।
5. पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिये।
6. शिक्षा, गुरु गृह में प्राप्त की जा सकती है।
7. शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक निकट का होना चाहिये।
8. सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जाना चाहिये।
9. देश की आर्थिक प्रगति के लिये तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
10. मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिये।

रोमां रोलां ने उनके बारे में कहा था-उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असम्भव है, वे जहाँ भी गये, सर्वप्रथम ही रहे। हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता था। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देख ठिठक कर रुक गया और आश्चर्य पूर्वक चिल्ला उठा-शिव। यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।



अथवा स्वास्थ्य योग

कैसे मिटाये प्यास की व्याथा

केला: दो दो केले रोजाना तीन बार खाने से प्यास कम लगती है। गला सूखना ठीक हो जाता है।

ज्वार- ज्वार की रोटी नित्य छाछ में भिगोकर खाये इससे प्यास लगना कम होता है। कमजोर और वात प्रकृति वाले ज्वार न खाये।

नमक: यह ग्रन्थियों का रस सुखाता है और उसी कारण प्यास अधिक लगती है। जिन्हें प्यास अधिक लगती हो, उन्हें नमक अल्प मात्रा में खाना चाहिये।

जौ: प्यास अधिक हो तो एक कप जौ कूट लें फिर दो गिलास पानी में आठ घण्टे भीगने दें फिर इसे उबालें इसके पानी को छानकर इस गरमा गरम पानी से गरारे करें।

तरबूज: तरबूज खाने से प्यास लगना कम हो जाता है। तरबूज के रस से मिश्री मिलाकर प्रातः पीना ज्यादा गुणकारी है।

नारंगी: प्यास अधिक लगने पर नारंगी खाने से प्यास कम होती है।

गुलकन्द: गुलाब का गुलकन्द नित्य तीन चम्मच सुबह शाम खाकर एक गिलास पानी पीये। इससे प्यास कम लगती है।

धनिया: हरा धनिया और सूखा आंवला दोनों की चटनी बनाकर नित्य खाने से अधिक प्यास, कण्ठ सूखना ठीक हो जाता है।

सेव: सेव का रस पानी में मिलाकर पीने से प्यास कम लगती है। जिन्हें वायु विकार हो उन्हें यह लाभदायक नहीं होगा।

आलु बुखारा: आलु बुखारे को मुँह में रखने से प्यास कम होती है।

अमरूद, लीची, शहतूत, खीरा- ये सब प्यास को दूर करने में सहायक हैं।

लौंग: प्यास की तीव्रता होने पर गिलास उबलते पानी में तीन लौंग डालकर पानी ठंडा करके पिलाये, इससे प्यास कम हो जाती है।

जायफल: प्यास किसी भी रोग में हो तो जायफल का टुकड़ा मुँह में रखने से लाभ होता है।

तुलसी: किसी भी रोग में यदि प्यास अधिक हो तो तुलसी के पत्तों को पीसकर, पानी में मिलाकर नींबू निचोड़कर, मिश्री मिलाकर पिलाने से प्यास कम हो जाती है।

पानी: यदि खुश्की की प्यास अधिक हो तो गर्म पानी से ठीक हो जाती है।

नींबू: पानी में नींबू निचोड़कर पीने से प्यास कम लगती है।

इलायची: बारह छोटी इलायची के छिलके एक गिलास पानी में उबालें। आधा पानी रहने से इसके चार हिस्से करके चार बार हर दो घण्टे से पिलाये। प्यास अधिक नहीं लगेगी। किसी भी बीमारी में यदि प्यास अधिक हो तो ठीक हो जाती है।

आजाद भारत में पाश्चात्य संस्कृति के गुलाम

✽ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ ✽

सैकड़ों वर्षों की अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद कराने हजारों भारत माता के सपूतों ने स्वाधीनता आन्दोलन चलाया। जेलों में अमानवीय यातनायें सही और शहीद हुये। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले अहिंसक आन्दोलन ने अंग्रेजों को मजबूर कर दिया कि भारत को आजाद करना ही होगा। वह शुभ घड़ी 15 अगस्त 1947 को आई जब हम गुलामी की जंजीरों से मुक्त होकर स्वतंत्र भारत के नागरिक गर्व से कहलायें।

भारतवर्ष को आजाद हुये 74 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। हमने भारत में आजादी के बाद हर क्षेत्र में तीव्र गति से विकास किया है। कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार क्रांति में अप्रत्याशित प्रगति हुई है। आम आदमी गुलामी के समय निर्धनता में जीवन यापन करता था। अब सम्पन्नता आई है, जीवन स्तर भी बदला है। खुशहाली आई है। इन अनेक उपलब्धियों और सफलताओं के बीच अनेक ऐसे प्रश्न हैं जो आजादी देने के साथ ही अंग्रेज हमें दे गये हैं जिन्हें 74 वर्ष से जोर शोर से जारी रखे हुये हैं। भारत को आजाद कराने के साथ ही अंग्रेजों ने देश के टुकड़े कर पाकिस्तान का गठन कर दिया। आज तक भारत और पाकिस्तान के बीच कटुता जारी है। मधुर संबंध बनने की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। सन् 1947 से पूर्व भारत एक था। आजादी के बाद दो भाई एक दूसरे के दुश्मन बने हुये हैं। पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से हम हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति से विमुख हो रहे हैं। हम जन्मदिन को पाश्चात्य रीति रिवाजों के अनुसार बर्थडे के रूप में मनाते हुये मोमबत्ती बुझा रहे हैं। मोमबत्ती बुझाकर प्रकाश से अंधकार की ओर जा रहे हैं। जबकि भारतीय संस्कृति अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का पावन संदेश देती है। कहा है तमसो माँ ज्योतिर्गमय। हम दीप जलाने की भारतीय परंपरा को भूल गये हैं। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के अनुसार नववर्ष का शुभारंभ विक्रम संवत्, गुड़ी पड़वा या दीपावली के पावन दिन से होता है। भारतीय नव वर्ष को भूलकर एक जनवरी को हम नया वर्ष प्रारंभ कर उत्सव जोर शोर से मना रहे हैं। 31 दिसंबर को रात्री बारह बजे से जश्न नाच गाने एवं नशे से प्रारंभ होता है जो रात भर चलता है। एक जनवरी को नया वर्ष विदेशों में आता है। साथ ही एक अप्रैल को भी नया वर्ष मनाने की देन अंग्रेजों की है। एक अप्रैल को अंग्रेज ही मूर्ख दिवस मनाते हैं। दूसरी ओर एक अप्रैल से नया वर्ष प्रारंभ कराकर अंग्रेज हमें मूर्ख बना रहे हैं। भारत में घी दूध की नदियां बहती थी। चाय अंग्रेज ही भारत में लाये। परिवार में विस्तर से उठते ही चाय चाहिये। आज दूध कोई नहीं पीता चाय पीते हैं। भारतवासियों को चाय का नशा अंग्रेज ही दे गये हैं। हमारी भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार की थी, मगर दुःख है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर संयुक्त परिवार टूट गये हैं। एकल परिवार की परंपरा प्रारंभ हो गई है। वृद्ध, बीमार, असहाय माता-पिता के जीवन के अंतिम समय में बेटा उनका सहारा न बनकर उन्हें उपेक्षित जीवन जीने मजबूर कर रहे हैं। जिन माता-पिता ने जन्म दिया, लालन-पालन किया, पढ़ाया,

सुखी जीवन जीने का मंत्र दिया उनको जीने का मंत्र दिया उनको जीवन के अंतिम समय में वृद्धाश्रम में रहने के लिये मजबूर करते हैं। माता-पिता को वृद्धाश्रम रखने की परंपरा पाश्चात्य संस्कृति की देन है। अपने माता पिता को हम अंग्रेजों का अनुशरण कर मोम, डेड कह रहे हैं। जीवित पिता को डेड कर रहे हैं और माता को मोम का पुतला बता रहे हैं। माता पिता का इससे ज्यादा अपमान और क्या होगा। माता-पिता पाश्चात्य संस्कृति में रच पच गये हैं वे भी अपनी संतान से मोम डेड कहलाने में अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। भारत के संविधान में धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को स्वीकार किया। सभी धर्मों का समान आदर किया जाता है। इसी सिद्धांत के अनुरूप भारत में ईसाई मिशनरियों द्वारा सारे देश में स्कूल और अस्पताल संचालित हैं। सारे देश में गरीब आदिवासियों को स्वावलंबन का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराया जाता है। उन्हें ईसाई बनाया जाता है। स्कूलों में जिन छात्र छात्राओं द्वारा प्रवेश लिया जाता है उन्हें ईसाई धर्म के नियम सिखाये जाते हैं तथा उन्हें इनका अनुशरण करने की शिक्षा दी जाती है। मिशनरी स्कूलों में दीपावली के स्थान पर गुड फ्रायडे मनाया जाता है। जिससे बचपन से ही बच्चे पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में चले जाते हैं। पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है आज लड़का लड़की एक सी ड्रेस पहन रहे हैं। यह पहचानना कठिन होता है कि लड़का कौन है लड़की कौन है। प्रेम विवाह, विवाह पूर्व फिल्मांकन (Pre Wedding Shoot) आदि कुप्रथाओं से भारतीय संस्कृति तार तार हो रही है। नई पीढ़ी में बढ़ रहे अपराध पाश्चात्य संस्कृति की ही देन है। हमारा दुर्भाग्य है अंग्रेज तो 74 वर्ष पूर्व भारत को आजाद करके इंग्लैंड चले गये। मगर ऐसी कुप्रथाएं या आदतें छोड़ गये जिससे समाज विशेषकर युवा पीढ़ी का नैतिक पतन हो रहा है। विश्व वंदनीय भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, भगवान श्रीराम के देश में आजादी के बाद भी पाश्चात्य संस्कृति का निरंतर

कविता

आत्म संतुष्टि

✽ श्रीमति सुनीता कठरया, बीना ✽

आत्म संतुष्टि सबसे बड़ा उपहार है किसी से प्राप्त नहीं होगा
कोई हमको लाकर नहीं देगा बाजार में भी यह अप्राप्य है।

आत्म संतुष्टि जीवन की बसंत बहार है

खुद को, खुद से मिलने वाला, सबसे बड़ा उपहार है।

बनता इससे जीवन सदा बहार है, आत्म संतुष्टि सबसे बड़ा उपहार है

सुख दुःख आते जाते हैं,

कोई अन्य नहीं है, मेरे सुख दुःख का आधार

अपने ही कर्मों से मैंने, पाये हैं ये पुरस्कार

बस इतनी सी समझ का मुझको करना विस्तार है।

आत्म संतुष्टि सबसे बड़ा उपहार है, जीवन की बसंत बहार है।

अंतरिक्ष पर्यटन

* सुरेश जैन, (आई.ए.एस) भोपाल *

अमेरिका में जुलाई 2021 के द्वितीय और तृतीय सप्ताह से प्राथमिक दृष्टि से अंतरिक्ष पर्यटन चालू हो गया है। अतः जब हम अंतरिक्ष पर्यटन के युग में प्रवेश कर रहे हैं। मनोरंजन के लिये मानवों की अंतरिक्ष यात्रायें आयोजित की जा रही हैं। प्राइवेट स्पेस ट्रेवल में उच्च स्तरीय कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। अंतरिक्ष के अनछुए क्षेत्र में भ्रमण कर रहे हैं।

ब्रिटिश अरबपति और वर्जिन गैलेक्टिक के संस्थापक एवं प्रमुख रिचर्ड ब्रेनसन, (Richard Charles Nicholes Branson) जिनकी आयु 71 वर्ष है, (जन्म 18 जुलाई, 1950 लंदन, यू.के.) 11 जुलाई 2021, रविवार को न्यू मैक्सिको से उड़कर अंतरिक्ष में 86 किलोमीटर की ऊँचाई पर गये। गुन्डू में सन् 1987 में जन्मी और दो बच्चों की माँ भारतीय मूल की एरोनाटीकल इंजीनियर सिरिशा बांदला उनके साथ गईं। इसके पूर्व कल्पना चावला और सुनीता विलियम स्पेस में जा चुकी हैं। यात्रा से लौटकर बांदला ने स्वयं को सम्मानित अनुभव किया।

9 दिन बाद ही 20 जुलाई सन् 2021 मंगलवार को अमेजान के संस्थापक वाशिंगटन पोस्ट के मालिक और दुनिया के सबसे अमीर, जेफ बेजोस (Jeffrey Preston Jorgensen) अपनी न्यू शेपेर्ड स्पेस राकेट से 107 किलोमीटर की ऊँचाई पर धरती से अंतरिक्ष में गये और भारहीनता की स्थिति में 4 मिनट रहे। उनके साथ उनके भाई मार्क और नीदरलैण्ड के 18 साल के भौतिक विज्ञान के छात्र ओलीवर डेमेन तथा एवियेशन से जुड़ी रही और नासा से प्रशिक्षित 82 वर्षीय वाली फंक भी गईं।

आधुनिक इतिहास के सबसे धनाइय बेजोस (Brezos) ब्रेनसन से अधिक ऊपर गये और तेजगति से गये। उनकी ब्लू ओरीजन कंपनी का यह यान पूर्णतः आटोमेटिक था। उन्होंने शून्य गुरुत्वाकर्षण का अहसास किया। इसके बाद पैराशूट से वापिस लैण्डिंग की। 12 जनवरी 1964 को जन्में जेफ बेजोस ने सबआरबीटल फ्लाइट से 10 मिनट बाद लौटकर कहा कि यह उनकी जिंदगी का सबसे बेहतरीन दिन था। उनके यान न्यू शेपेर्ड, प्रथम अमेरिकन एलन शेपेर्ड, जो वर्ष 1961 में स्पेस में गये थे, के नाम से रखा गया है।

हमारे पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि बेजोस अपने अंधविश्वास के कारण अपने लिये सौभाग्यशाली मानते हुये राकेट लांच के समय टेक्सास के गोपालक जूते पहिनते हैं। दक्षिण अमेरिका की सबसे बड़ी नदी अमेजान के नाम पर स्थापित अपनी कंपनी अमेजान के मालिक बेजोस ने अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई के दौरान मेकडानल में भोजन बनाने का कार्य किया। उन्होंने वर्ष 2018 में अमेजान के प्रतिनिधि अमित अग्रवाल को 5.5 बिलियन डॉलर के साथ भारत भेजा और यहाँ अमेजान के आपरेशंस चालू कराये।

इस संदर्भ में यह जानना उपयुक्त प्रतीत होता है कि अमोजन कंपनी का नाम देवनागरी के आद्य अक्षर और प्रथम स्वर अ के अनुरूप रोमन वर्णमाला के प्रक्षम अक्षर A से शुरु होता है। नाम रखते समय यह भी ध्यान रखा गया है कि A के कारण अमेजान कंपनी का नाम ग्राहकों को शीघ्र ही ऑनलाईन ज्ञात हो जाये। बेजोस का जन्म न्यू मैक्सिको के बड़े नगर एलबूकक्र

(Albuquerque) जो कि A अक्षर से ही प्रारंभ होता है, मैं हुआ है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के टेक्सास राज्य के पश्चिम में स्थित रेगिस्तान से राकेट कैप्सूल में बैठकर और सीट बेल्ट बांधकर यात्री, जिनहें एस्ट्रानाट कहा जाता है, पृथ्वी की सीमाओं को पार करते हुये अंतरिक्ष में प्रवेश कर जाते हैं। अंतरिक्ष में उन्हें यान की ऊँचाई गति समय और गुरुत्वाकर्षण शक्ति की जानकारी दी जाती है। कैप्सूल के अंतरिक्ष में पहुँचते ही राकेट अलग होकर वापस लौट आता है। यात्रियों को अंतरिक्ष में घुमाकर कैप्सूल तीन पैराशूट की मदद से अपनी जमीन पर लौट आता है और यात्रा पूरी हो जाती है।

अब शीघ्र ही नासा द्वारा चयनित टेस्ला के प्रमुख एलन मस्क अपनी स्पेस फ्लाइट से यात्रियों को लेकर चांद पर जायेंगे। अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा बृहस्पति ग्रह पर जीवन तलाशने के लिये मस्क के साथ काम कर रही है और फाल्कन हेवी राकेट लांच करने की तैयार कर रही है। यह उल्लेखनीय है कि सन् 1969 में इसी 20 जुलाई के दिन नील आर्मस्ट्रांग ने चांद पर अपना कदम रखा था। सर्वप्रथम वर्ष 2001 में अमेरिकी उद्यमी डेनिस टीटो ने रूसी सोयुज राकेट से अंतरिक्ष में स्थिति इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की यात्रा की थी।

अंतरिक्ष पर्यटन में रोमांच के साथ अनेक चुनौतियाँ भी हैं। किसी चीज को बहुत ऊँचाई से देखने पर हमें मनोवैज्ञानिक रूप से आत्मोत्कर्ष की अनुभूति होती है। पर्यटक अंतरिक्ष से धरती को देखने का आनंद उठाते हैं। हमें यह जानकर प्रसन्नता होती है कि नासा के वैज्ञानिक यात्री अपने साथ 55 भाषाओं में अभिवादन और चुनदा गीतों का संग्रह ले गये थे।

अंतरिक्ष पर्यटन का विस्तार करते हुये अब अंतरिक्ष में होटल बनाने और उसमें अतिथियों को ठहराने की व्यवस्था करने के समाचार मिल रहे हैं। अब अंतरिक्ष के रास्ते बड़े-बड़े नगरों के बीच पृथ्वी से पृथ्वी की उड़ानों की योजना कार्यान्वित की जा रही है। अंतरिक्ष यान से एक घण्टे में पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर में पहुँचने की संभावना बन रही है। इससे बड़े नगरों के बीच यात्रा का समय बहुत ही कम हो जायेगा।

धनाढ्य व्यक्ति पूरे विश्व में परिवर्तन लाने के लिये अपने अपार धन का सदुपयोग कर रहे हैं। अच्छे ढंग से पृथ्वी की गोलाई देखने के लिये अंतरिक्ष में जा रहे हैं। अब धनाढ्य व्यक्तियों का उद्देश्य केवल अपने लिये आनन्द प्राप्त करना नहीं है अपितु वे दूसरे व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन लाकर आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं। पृथ्वी पर रहते एलन मस्क का दिल भर गया है। अब वे मंगल पर रहना चाहते हैं। अतः वे मंगल पर रहने के लिये स्थान की खोज कर रहे हैं।

अंतरिक्ष यात्रियों को भोजन गर्म की सुविधा मिलती है, ठण्डा करने की नहीं। उन्हें नमक और मिर्च जैसे पदार्थ सूखे चूर्ण के रूप में नहीं अपितु तरल स्वरूप में मिलते हैं क्योंकि सूखे पाउडर जैसे पदार्थ यान में उड़कर फैल जाते हैं और यान तथा यात्रियों के लिये अनेक झंझटें पैदा करते हैं। हम अपने पेन और पेंसिल भी यान में नहीं ले जा सकते हैं।

अरबपतियों की अंतरिक्ष यात्रा का प्रभाव सकारात्मक होगा या नकारात्मक ? ऐसी यात्रा का अन्य पृथ्वी वासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? क्या अंतरिक्ष की सैर से आत्मिक उन्नति होगी ? क्या अंतरिक्ष यात्रा केवल मनोरंजन का साधन होगी ? इन प्रश्नों का उत्तर जो भी हो, अंतरिक्ष की यात्रा करने वालों को खुशी अवश्य प्राप्त होगी। अतः ऐसी यात्रा करने वालों को आर्थिक लाभ अवश्य ही प्राप्त होगा।

चलो देखें यात्रा

बीजापुर

क्षेत्र का महत्त्व: क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या : 3 महावीर मंदिर का निर्माण चालू है।

क्षेत्र पर पहाड़: नहीं

ऐतिहासिकता : यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की सातिशय प्रतिमा

1500 वर्ष पुरानी है। 1008 सर्पफणों से सुशोभित होने के कारण यह प्रतिमा सहस्रफणी कहलाती है। हर तरफ भीतर से जुड़ा होने के कारण अभिषेक का जल या दूध हर फण से उतरते हुये मूर्ति को अभिशिक्त करता है। क्षेत्र पर मंदिर जीर्णोद्धार के साथ अनेक विकास योजनायें प्रगति पर हैं। यहाँ कई दर्शनीय स्थल हैं जिनमें गोल गुम्बज प्रमुख है। उत्खनन करते समय भगवान महावीर की चतुर्थ काल की एक प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई, जो पद्मासन मुद्रा में है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र: बाबानगर - 28 किमी, थादामी - 120 किमी, ऐहोली - 130 किमी, पट्टदकल - 140 किमी. कुंभोज बाहुबली - 150 किमी, गोलगुम्बज, हंपी, कुंथलगिरि - 200 किमी. श्रवणबेलगोला - 600 किमी.

निकटतम प्रमुख नगर- सोलापुर (महाराष्ट्र) - 100 किमी.

प्रबन्ध व्यवस्था- संस्था श्री 1008 सहस्रफणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, बीजापुर

अध्यक्ष- परमपूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी भट्टारक महास्वामी जी

मंत्री- श्री डी.पी. नागावी - 08352-264045

कार्याध्यक्ष- श्री धन्यकुमार रामचन्द्र शहा, झण्डी - 08359-225970, 09448375970

आवागमन के साधन:- रेलवे स्टेशन - बीजापुर - 6 किमी, बस स्टैंड - बीजापुर 2 किमी,

पहुँचने का मार्ग- रेल अथवा सड़क व्हाया सोलापुर

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें: आवास कमरे (अटैच बाथरूम) - 20 कमरे, हॉल - 1,

यात्री क्षमता - 100, यात्री ठहराने की कुल क्षमता - 200

भोजनशाला - है, **विद्यालय** - नहीं, **औषधालय** - नहीं, **पुस्तकालय** - नहीं

टेलीफोन - 08352-272871, 272049, निजलिंगप्पा - प्रबंधक 08050461565

नाम व पता- श्री 1008 सहस्रफणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट बीजापुर

महेन्द्रगिरि, जत मार्ग, बीजापुर कर्नाटक - 586103

नारी शिरोमणि कालल देवी के बाहुबली

* ब्र. समता जैन मारौरा, इंदौर *

त्याग तपस्या, निर्ग्रन्थ भेष, सभी के मन को भाते हैं।
गोमटेश स्वामी मिलें कहीं पर, कालल शीश झुकाती हैं।
जिनके चरणों में प्राणी आकर, आतम सुख को पाते हैं।
त्रय भक्ति से नमन करे कालल गोमटेश चरण को भाती हैं।

हमारा भारत देश धार्मिक और संस्कृति प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति की नैतिकता आदर्श चारित्रवान नारी के विभिन्न रूपों के लिए संरक्षित है। जिसमें ब्राह्मी, सुंदरी, मनोरमा, चंदनबाला, मैना सुंदरी, अंजना सती अविस्मरणीय है। नारी की ममता, दया, करुणा, श्रद्धा की मूर्ति, कर्तव्य परायणता, शीलवती, वात्सल्यमयी, करुणामयी आदि विशेषणों से विभूषित किया है। धर्म का उद्योत करने वाले तीर्थंकर भी इसी नारी की कोख से जन्म लेते हैं।

नीतिकारों ने कहा है -

जननी परमाध्या जननी परमागतिः।

जननी देवता साक्षात् जननी परमोगुरुः॥

याकर्त्री परमात्री च जननी जीवनस्थवः।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोः नमः॥

नारी शिरोमणि कालल देवी धर्म परायणता, दया करुणा की मूर्ति तथा गंगवंशी **राचमल्ल चतुर्थ** के अद्वितीय मंत्री एवं सेनापति **चामुण्डराय** की जननी थी।

जैसे वन में गोसीर चंदन नहीं होता, सभी खान में हीरा नहीं निकलता सभी दिशाओं में सूर्य नहीं उगता, सभी सरोवरों में सहस्रदल कमल नहीं खिलते, उसी प्रकार सभी मातायें महापुरुषों को जन्म नहीं देती। कोई विरली माता ऐसी होगी जो महापुरुषों को जन्म देने वाली होती है। उसी माता का नाम है कालल देवी। जो अनेक गुणों से सुशोभित थी। वह अपनी पति की अति प्यारी थी। उसने एक प्रतिभाशाली पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम था चामुण्डराय। परन्तु माँ कालल देवी उसे **गोम्मट** नाम से पुकारती थी।

अगर आज कालल देवी से मातृभक्त-चामुण्डराय जन्म न लेते तो गोम्मट स्वामी का दर्शन न होता।

राजधानी तलकाडु के जिनालय में मातेश्वरी कालल देवी ने आचार्य जिनसेन स्वामी के महापुराण में आदि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव का चरित्र श्रवण किया। सम्राट भरत के साथ बाहुबली के युद्ध का आख्यान और बाहुबली के अनुपम वैराग्य की कथा श्रवण की, जो उन्हें विशेष प्रिय लगी।

बाहुबली के लोकोत्तर त्याग तपश्चरण का प्रसंग, बार-बार सुनकर उन्होंने हृदयंगम किया। तभी मंदिर में विराजमान एक मुनिराज से उन्होंने यह सुना कि भरत चक्रवर्ती ने बाहुबली की 525

धनुष अवगाहना वाली एक तदाकार प्रतिमा पोदनपुर में स्थापित की थी। वर्तमान में किसी पुण्य जीवी को ही उस महाविग्रह के दर्शन हो सकते हैं।

मातेश्वरी कालल देवी के मन में उस महामूर्ति के दर्शन की अभिलाषा जागृत हुई। श्रद्धास्पद जननी की संकल्प पूर्ति के लिए अधीर चामुण्डराय यह आग्रह टाल न सके और माँ की इच्छा पूर्ति के लिए उनके आज्ञाकारी सुपुत्र गंग राज्य के प्रतापी महामात्य वीर मार्तण्ड चामुण्डराय पोदनपुर की धर्मयात्रा के लिए तैयार हुए।

भगवान बाहुबली के दर्शन होने तक के लिए मातेश्वरी कालल देवी ने दूध का त्याग कर दिया था। इस प्रतिज्ञा ने चामुण्डराय को चिंतित कर दिया था। उन्होंने अपनी माँ की आज्ञा के पालन में क्षणमात्र भी विलम्ब नहीं किया।

चामुण्डराय श्रद्धावान, समर्थ और दृढ़ संकल्पी श्रावक था। उसने संकल्प कर लिया तो 978 ई. में भगवान बाहुबली को प्रकट करके ही दिखा दिया। कालल देवी ने भी भगवान बाहुबली की चिर कल्पित छवि का दर्शन एकटक निहारते हुए किया।

गोमटेश के चरणों में मानवकृत सारे भेद स्वतः समाप्त हो जाते हैं। गोमटेश के दर्शन के लिए जाति पाति का ऊँच-नीच का, छोटे-बड़े का बंधन नहीं रहता है। वे सबके भगवान हैं। वे जगत् के नाथ हैं। किसी एक के नहीं, वे सबके नाथ हैं। वे कामदेव होकर भी निष्काम वीतराग साधना से वे पूर्ण कामदेव हुए हैं। वे पुराण पुरुष होकर भी इस विग्रह में वेचिर नवीन हैं। वज्र की तरह कठोर होकर भी वे क्षमा पुरुष पांखुरी की तरह मृदुल हैं। अपराजेय शक्ति के स्वामी होकर भी अनन्त करुणा के धाम हैं।

भगवान गोमटेश का नित नूतन आकर्षण से भरा उनका दिव्य सौन्दर्य दर्शक की दृष्टि बांध लेता है।

भगवान बाहुबली मोक्षमार्ग के प्रथम पथिक, चक्रवर्ती विजेता, एक वर्ष अनुपम योग साधना, अनुपम वैराग्य जैसी विशेषताओं ने जनमानस में इतनी श्रद्धा तथा भक्ति उत्पन्न कर दी कि कालान्तर में तीर्थकरों के समान उनकी पूजा-अर्चना प्रारम्भ हो गई। अनीति पर नीति की, असत्य पर सत्य की, विजय के लिए प्रतीक पुरुष की तरह उन्हें आराध्य माना गया।

मोक्षपथ के किसी सामान्य साधक ने इतनी पूज्यता और कीर्ति अर्जित की हो, ऐसा कोई अन्य उदाहरण पुराणों अथवा पुरावशेषों में भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए बाहुबली की प्रतिमा का दर्शन का भाव काललदेवी ने बनाया तथा उसे पूर्ण किया।

यह गोमटेश्वर बाहुबली की पावन प्रतिमा सहस्रों वर्षों तक सहस्रों भव्य जीवों का कल्याण करती रहे तथा कालल देवी की संकल्प शक्ति एवं चामुण्डराय की मातृशक्ति की कीर्ति का प्रचार-प्रसार करती रहे।

अमर हुई चामुण्डराय की भक्ति विश्व विख्याता।
शिल्पी की कला, विन्ध्य की शिला, कालल देवी माता।
पोदनपुर के भूप, शिवपुर के स्वामी बने,
यह मन भावन रूप, मेरे मन में नित बसे ॥



सत्य ईश्वर रूप बताये: आप्त परीक्षा

न्याय ग्रंथों की शृंखला में आप्तमीमांसा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह ग्रंथ जैन दर्शन में मान्य ईश्वर की अवधारणा स्पष्ट करता है। जैन दर्शन में ईश्वर को हृदय से स्वीकार किया है। किन्तु जैन दर्शन ने ईश्वरकर्ता नहीं माना है इस तथ्य की विवेचना प्रस्तुत ग्रंथ में की गई है।

इस ग्रंथ में 124 कारिकाएँ, स्वोपज्ञ वृत्ति सहित निबद्ध हैं। इस ग्रंथ में परमेष्ठी गुण स्तोत्र की आवश्यकता प्रतिपादित करने के पश्चात् पर अपर निः श्रेयस् का स्वरूप बन्ध और बन्धकारणों की सिद्धि, अनेक अभाव की सिद्धि, सहेतुक निर्जरा की सिद्धि, परमेष्ठीगत प्रसाद का लक्षण मंगल की नियुक्ति और अर्य शास्त्रारम्भ में परमेष्ठी गुण स्तोत्र की आवश्यकता एवं पराभिमत आप्तों के निराकरण की सार्थकता बतलायी गयी है।

ईश्वर-परीक्षा प्रकरण में ईश्वर के मोक्षमार्गोपदेश को असम्भवता, वैशेषिकाभिमत षट्पदार्थ समीक्षा, द्रव्यलक्षण के योग से दो द्रव्य लक्षणों में एकता की असिद्धि, द्रव्यत्व के योग से एक द्रव्य पदार्थ की असिद्धि, गुणत्वादि के योग से एक-एक गुणादि पदार्थों की असिद्धि, इहेदम् प्रत्यय सामान्य से भी द्रव्यादि पदार्थों की असिद्धि, संग्रह से भी द्रव्यादि पदार्थों की असिद्धि, द्रव्यात्वाभिसम्बन्ध से एक द्रव्यपदार्थ मानने का निरास गुणत्वादि अभिसम्बन्ध से एक-एक गुणादिपदार्थ मानने का निरास, पृथ्वीत्वादि अभिसम्बन्ध से एक-एक पृथ्वी आदि द्रव्य मानने का निरास संग्रह के तीन भेद और उनकी समीक्षा, ईश्वर के जगत् नेतृत्व को समालोचना, ईश्वर के नित्य ज्ञान मानने में दोष-प्रदर्शन ईश्वर के अनित्यज्ञान की मीमांसा, अव्यापक ज्ञान में दोष ईश्वर के नित्य व्यापक ज्ञान में दोष, समवाय का स्वरूप और समीक्षा सयोग और समवाय की व्यर्थता सत्ता और समवाय के एकत्व का खण्डन सत्ता को स्वतंत्र पदार्थ न मानने में दोष एवं ईश्वर परीक्षा का उपसंहार आदि विषय वर्णित हैं।

कपिल परीक्षा के अंतर्गत कपिल के मोक्षमार्गोपदेशकत्व का निराध प्रधान के मुक्ताकत्व की कल्पना और उसकी समीक्षा एवं प्रधान के मोक्षमार्गोपदेशकत्व का समालोचन आया है।

सुगत-परीक्षा में सुगत के आप्तत्व का परीक्षण किया गया है। इस प्रकरण में सुगत के मोक्षमार्गोपदेशकत्व का निराकरण, सौत्रातिको के मत की समीक्षा, यौगाचार, संवेदनाद्वैत और चित्ताद्वैत का समालोचन विस्तारपूर्वक किया गया है।

परमपुरुष- परीक्षा के अंतर्गत ब्रह्माद्वैत-प्रतिभास सामान्य की सिद्धि की गयी है। सर्वज्ञाभाववादी भट्ट के मत को उपस्थित कर उसके मत का निराकरण किया गया है। बाधकाभावहेतु से अर्हन्त को सर्वज्ञ सिद्ध किया है और पुष्टि के लिये प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, अर्यापत्ति, आगम और अभाव प्रमाण के द्वारा सर्वज्ञ के बाधकर का निरास किया गया है।

अर्हत् - कर्मभूभूभेदत्व-सिद्धिप्रसङ्ग में सञ्चित और आगामी कर्मों के निरोध का कारण संवर और निर्जरा को सिद्ध किया है। इस संदर्भ में नैयायिक, वैशेषिक और सांख्य द्वारा अभिमत कर्म के स्वरूप का विवेचन कर उसकी पौद्गलिकता सिद्ध की गयी है।

अर्हन्त को मोक्षमार्ग का नेता सिद्ध करते हुये आत्मा, संवर, निर्जरा आदि के स्वरूप और भेदों का प्रतिपादन किया है। नास्तिक मत का प्रतिवाद कर मोक्षमार्ग का स्वरूप और उसके

प्रणेता को सर्वज्ञ सिद्ध किया गया है। यह ग्रंथ नि.लि. प्रकरणों में विभक्त है।

1. परमेष्ठी गुण स्तोत्र, 2. परमेष्ठी गुण स्तोत्र का प्रयोजन, 3. ईश्वर परीक्षा, 4. कपिल परीक्षा, 5. सुगत परीक्षा, 6. परमपुरुष परीक्षा या ब्रह्माद्वैत परीक्षा, 7. अर्हत्सर्वज्ञासिद्धि, 8. अर्हत्कर्मभूदभेदत्वसिद्धि, 9. अर्हन्मोक्षमार्ग नेतृत्वसिद्धि, 10. अर्हद्वन्धत्वासिद्धि।

प्रमाण- परीक्षा में प्रमाण का स्वरूप, प्रामाण्य की उत्पत्ति एवं ज्ञप्ति, प्रमाण की संख्या विषय एवं उसके फल पर विचार किया जाता है। आरम्भ में सम्यग्ज्ञान प्रमाण प्रमाणत्वानुपपत्तः। सन्निकर्षादिरज्ञानमपि प्रमाणं स्वार्थप्रमितौ साधकतमत्वात् इति नाशंकीयं, तस्य स्वप्रमितौ साधकतमत्वात् साधकतमत्वात्। अर्थात् सम्यग्ज्ञान प्रमाण है क्योंकि प्रमाणत्व की उपपत्ति अन्यथा नहीं हो सकती। सन्निकर्षादि अज्ञानमय होने के कारण प्रमाण नहीं है और न वे अर्थक्रिया के प्रति साधकतम ही है, जो स्वप्रमिति के प्रति साधकतम होता है, वही प्रमाण हो सकता है, अन्य नहीं इस प्रकार ज्ञान को प्रमाण सिद्ध कर सन्निकर्ष, इन्द्रिय आदि का खण्डन किया है। प्रमाण के प्रसंग में तादरूप्य, तदुत्पत्ति और तदकारता का भी निरसन किया गया है। विद्यानन्द ने अपने समालोचन को पुष्ट बनाने के हेतु उक्तञ्च कहकर अन्य व्यक्तियों की कारिकाएँ भी अधृत की हैं।

इस सन्दर्भ में सविकल्पक और निर्विकल्पक ज्ञान की प्रमाणता का भी विचार किया गया है। सौगत अभ्यास, प्रकरण, बुद्धिपाठ आदि के कारण निर्विकल्पक को प्रमाण मानता है। विद्यानन्द ने इस सन्दर्भ में सौगतमत की सुन्दर समीक्षा की है और स्वलक्षण का भी निरसन किया है। क्षणिकवादी बौद्ध स्थूल पदार्थों का अस्तित्व स्वीकार न कर स्वलक्षण परमाणु पदार्थ को ही ज्ञान का विषय मानता है। ब्रह्माद्वैतवाद और स्वलक्षणवाद की समीक्षा कर स्वप्नज्ञान की प्रामाणिकता का भी निरसन किया है। नैकं स्वस्मात्प्रजायते को उद्धृत करते हुये ज्ञान के ज्ञानान्तरवेधत्व का खण्डन किया है।

कपिलमत- समीक्षा और तत्त्वोपप्लवाद का विचार विमर्श करते हुये अनुमान और आगम प्रमाण की सिद्धि की गयी है। यहाँ उपमान और अर्यापत्ति का प्रत्यभिज्ञान और अनुमान में अन्तर्भाव दिखलाया गया है। प्रमेयद्वैविध्यात् प्रमाणद्वैविध्यम की समीक्षा करते हुये स्वार्थानुमान और पदार्थानुमान की सिद्धि की गयी है। प्रत्यक्ष के सांख्यवहारिक और अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष का निरूपण करते हुये अवग्रह, ईहा, अपाय और धारण का विचार किया गया है। साधनात् साध्यविज्ञानमनुमानम् का विचार करते हुये व्याप्ति, साध्य साधन का स्वरूप निर्धारण किया गया है। हेतु के त्रैरूप्य और पांच रूप्य की समीक्षा करते हुये अन्यथानुपपन्नत्व को ही हेतु का निर्दोष स्वरूप बताया है। पात्रकेसरी के त्रिलक्षणकदर्यन का उद्धरण देते हुये लिखा है-

अन्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किं, नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किं।

इसी के अनुकरण पर विद्यानन्द ने पाँचरूप्य के खण्डन के लिये निम्न कारिका रची है।

अन्याथानुपपन्नत्वं रूपै किं पंचामिः कृतं, नान्यथानुपपन्नत्वं रूपै किं पंचामि कृतं॥

पदार्थ के स्वरूप का विवेचन करते हुये उत्पाद, व्यय और धौव्ययुक्त पदार्थ की स्थिति स्वीकार की है। प्रमाण के फल का विवेचन करते हुये उसे प्रमाण से कथंचित् भिन्न और कथंचित् अभिन्न बताया है। अन्त में ग्रंथ का सार और उसका उपयोग बताते हुये लिखा है।

इति प्रमाणस्य परीक्ष्य लक्षणं विशेषसंख्याविषयं फलं ततः।

प्रबुध्य तत्त्वं दृढशुद्धयः प्रयान्तु विद्याफल मिष्टमुच्चकैः॥

शाकाहार के लोकव्यापीकरण हेतु मानवीय वैज्ञानिक आधार

*** अजित जैन, जलज, ककरवाहा ***

पृथ्वी पर जीवन की संभावनायें बढ़ाने के लिये भोजन अपनाने से बेहतर कोई विकल्प नहीं है। विश्व के सर्वकालिक महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का यह कथन आज के वैज्ञानिक युग का खरा सच है। सारे संसार में फैली क्रूरता को कम करने का सर्वोत्तम उपाय करुणा का प्रचार-प्रसार है। शाकाहार तो मात्र एक शुरुआत है, वस्तुतः इसे जीवदया से लेकर मानव मात्र के प्रति करुणा भाव तक व्यापक समझना और समझाना चाहिये।

धर्मग्रंथों में अहिंसा के उद्धरण असंख्य एवं जगजाहिर है अतः इनके स्थान पर आधुनिक विज्ञान के तथ्यात्मक नवीनतम प्रमाणों के माध्यम से अहिंसक आहार की समीक्षा करना अधिक समसामायिक रहेगा।

1. विश्व व्यापी मांसाहार- वर्ष 2010 में विश्व की आबादी 6.7 अरब थी, उसमें से 4.7 अरब लोग मांसाहारी थे। पूरे विश्व में 20 प्रतिशत आबादी ही शाकाहारी थी। वर्ष 2006 के आँकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 69 प्रतिशत लोग मांसाहारी हैं। यह तथ्य निराशाजनक लग सकता है, कि भारत में शाकाहारी वैश्विक स्तर से लगभग 10 प्रतिशत ही अधिक शाकाहारी हैं। परंतु अब दूसरे पहलू को देखें-

नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन मीट के अनुसार भारत में मांस का उत्पादन विश्व के उत्पादन के 2 प्रतिशत से भी कम है। भारत में खपत 5.5 किग्रा. प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है वहीं विश्व की औसत खपत 40 किग्रा प्रति व्यक्ति है। सीधी सादी बात है कि हमारे यहाँ मांसाहार मुख्य भोजन नहीं है। हमारे यहाँ शाकाहार के प्रचलन का मुख्य आधार हमारे धार्मिक विश्वास हैं जबकि विदेश में शाकाहार अपनाने का प्रमुख कारण वैज्ञानिक आधार है। यही कारण है कि विदेश में शाकाहार बढ़ रहा है, जबकि आधुनिक भारतीय युवा धर्म को दकियानूसी मानकर वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में मांसाहारी हो रहे हैं।

फ्यूचर डार्ट्स रिपोर्ट 2014 के अनुसार 1961 से 2009 तक के 48 वर्षों में भारतीय थाली में अन्न की मात्रा मात्र 3 प्रतिशत बढ़ी जबकि मांस मछली की मात्रा में 92 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जबकि दालों की मात्रा में 45 प्रतिशत कमी हो गई। संकेत स्पष्ट हैं कि हमारा आधार तो अच्छा है परंतु दिशा खतरनाक है।

2. मांसाहार की मारकता- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 26 अक्टूबर 2015 को इस बात की घोषणा की कि संशोधित मांस तथा लाल मांस के उपयोग से कोलेरेक्टेल (बड़ी आंत के हिस्से कोलन एवं रेक्टम) कैंसर बढ़ रहे हैं या इसके होने की संभावना बढ़ जाती है। वैज्ञानिक रिपोर्ट के 800 से अधिक वैज्ञानिक शोधों एवं अध्ययनों में पाया गया है कि संशोधित मांस एवं लाल मांस दोनों में कैंसर का खतरा बढ़ जाता है और 50 ग्राम संशोधित मांस प्रतिदिन खाने से कैंसर की संभावना 18 प्रतिशत बढ़ जाती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि संशोधित मांस खाने

से पूरी दुनिया में 34000 कैंसर से मृत्यु के मामले से आये हैं। इसी प्रकार लगभग 50000 मामलों में लाल मांस कैंसर से मृत्यु का जिम्मेदार माना गया है।

3. शाकाहार विश्व रक्षक एवं पोषक- अप्रैल 2016 में नेचर कम्यूनिकेशन में वैज्ञानिक अध्ययन बताता है कि शाकाहारी भोजन हो, तो माँसाहारी भोजन की तुलना में विश्व में कृषि भूमि की आवश्यकता आधी हो जायेगी। लेकिन अगर माँसाहारी भोजन हो तो भविष्य में हमें आज की तुलना में 52 प्रतिशत अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता पड़ेगी। यदि मांस के उत्पादन के लिये पशुओं को खिलाया जाने वाला अन्न मनुष्यों को उपलब्ध हो तो 4 अरब अतिरिक्त लोगों को पेट भर सकता है। जबकि भविष्य में विश्व की आबादी 2 से 3 अरब बढ़ेगी।

4. पशुपालन का भारतीय प्राचीन विज्ञान- विश्व के ताजे पानी का एक तिहाई भाग पशुपालन पर खर्च होता है। इस पानी का 98 प्रतिशत पशुओं के लिये अन्न के उत्पादन में होता है। गाय, भैंस के 1 किलो मांस पर अनुमानतः 15415 लीटर पानी लगता है जबकि 1 किलो अन्न के लिये मात्र 1644 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। दरअसल पाश्चात्य पद्धति में मांस के लिये ही पशुओं को पाला जाता है। दूध, चमड़ा, ऊन आदि अन्य अतिरिक्त उत्पाद होते हैं। इसके विपरीत भारत में पशुपालन अहिंसक ऋषि कृषि से जुड़ा रहा है। प्राचीनकाल से पशु-पक्षी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं। हमारे यहाँ पालतू पशुओं को खाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। हमारा पशुओं से पारस्परिक सहयोग का भरोसेमंद रिश्ता था। कृषि प्रधान भारत वर्ष में गाय, बैल, भारतीय समाज के अभिन्न अंग रहे हैं जो जीवन भर किसान के सहारे रहे हैं इसी व्यवस्था के चलते भारत सोने की चिड़िया बन सका है। जो हमारा भरण पोषण करे उसे सम्माननीय स्थान देना स्वाभाविक है परंतु आज दुःखद तथ्य यह है कि हम गोवंश की उपयोगिता स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। जिसका परिणाम यह हुआ है कि हम गाय, भैंस, बकरी का दूध निश्चित हो जाते हैं। तथा अनुपयोगी पाड़ा बकरा एवं वृद्ध गोवंश कल्लखानों में काटकर भारत को मांस निर्यात में अव्वल स्थान दिला देते हैं।

5. शाकाहार एवं गौ सेवा- जब भी शाकाहार जीवदया की चर्चा आती है तो सबके सामने जैन छवियाँ तैरने लगती हैं जबकि हिन्दू धर्म में भी शाकाहार पूरी तरह से रचा बसा है। हिन्दू गोमाता की पूजा करते हैं और इसकी रक्षा के लिये पूर्णतः चोकस दिखते हैं जबकि जैन गाय की पूजा तो नहीं करते हैं परंतु गौशालाओं के संचालन में हमेशा ही सबसे आगे रहते हैं। गौ सेवा एवं शाकाहार का अभी तक समुचित समन्वय नहीं हो पा रहा है। इस हेतु अगर हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों पर चर्चा कर सकें तो अहिंसक आंदोलन असरकारक हो सकता है। बापू कहते हैं- (क) गौ रक्षा आज जिस ढंग से हो रही है उसे देखकर मेरा हृदय एकांत में रोता है। (ख) गौ रक्षा करने वाले बहुतेरे हिन्दू दूसरे प्राणियों का माँस खाते हैं। वे गौरक्षा का दावा नहीं कर सकते। (ग) प्रत्येक गौशाला को आदर्श दुग्धालय और आदर्श चर्मालय बना डालना चाहिये।

6. शाकाहार एवं मानवीय करुणा- जब तक सभी शाकाहारी शक्तियाँ संगठित होकर एक मंच पर नहीं आती हैं तब तक शाकाहार एवं गौ सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति, आना

असंभव है आज सभी धर्मों के लोग आडंबरों में उलझे हुये हैं, बंटे हुये हैं तथा धार्मिकता दम तोड़ रही है। शाकाहार अथवा गौसेवा के लिये आक्रामकता पूरी तरह से अनुचित है बल्कि हमें वैज्ञानिक ढंग एवं मानवीय करुणा से ओतप्रोत होकर अहिंसा का प्रचार-प्रसार करना चाहिये। मदर टेरेसा मानवीय सेवाभाव के चलते स्वैच्छिक धर्मांतरण करती रही। इस पर सवाल उठाने वाले हमारे भाई, क्या मदर टेरेसा की भाँति देशभर में मानव सेवा के केन्द्र खोलकर शाकाहार एवं गौसेवा का जनमत नहीं बना सकते ?

7. अहिंसक आह्वान: धर्म एवं विज्ञान दोनों सत्य के उद्घोषक हैं। विज्ञान सतत प्रगतिशील है, इसीलिये समसामयिक, प्रासंगिक प्रामाणिक बना हुआ है। धर्म आडंबरों, आग्रहों, पंथों के बोझ तले दबा हुआ, जबकि असलियत में उसकी अस्मिता विज्ञान से कहीं बढ़कर है अतएव अगर हम वैज्ञानिक तर्कवाद से धर्म के मूल स्वरूप को प्रकट कर सकें तो यह धर्म विज्ञान की वेदी पर बैठकर मानव मात्र का कल्याण कर सकता है।

आइये हम सब मिलकर धर्म एवं विज्ञान को साथ लेकर, क्रूरता-मुक्त, करुणादयुक्त विश्व बनाने हेतु मानवता की सेवा करते हुये अहिंसक पथ पर अग्रसर हों।

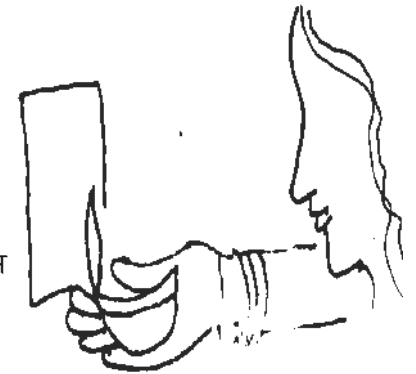
कविता

मन्नत पूरी कर दे

चंदा तू लारे चंदरियाँ (बाहुबलि भगवान की आरती)

अम्बर है दीपक प्यारा, तारों से उसको सजाया
चंदा जी ज्योत जला करूँ आरती
हो गुरुवर हम सब उतारे थारी आरती
आ..आ..आ..आ..

माँ श्रीमति का लाडला, दुनिया का पालनहारा
रागद्वेष को छोड़ चुके है वेश दिगंबर धारा
हो हम सब को तारने वाला
पार उतारने वाले हम सब उतारे थारी आरती
जीवन तुमने दिया है हमको बताया मार्ग ये पावन
महावीर के पथ पर चलकर पतझड़ कर दिया सावन
हो तेरी महिमा है न्यारी दिवानी दुनिया सारी
हो गुरुवर हम सब उतारे थारी आरती
सबकी झोली भरने वाले मुझपे दया तू कर दे
एक बार बस नजर उठा मन्नत पूरी कर दे
कब से चरणों में आये आकर के खुशियाँ पाये।
हो गुरुवर हम सब उतारे थारी आरती



समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
दिसम्बर 2021

मेरी प्यारी गुड़िया रानी

प्रथम-

खेल खिलौने अच्छे लगते
सबके मन को भाजे हैं
बच्चों के भावों को भी वे
सहज स्वभाव बनाते हैं
बाल सुलभ खेलों में बच्चे
खेलें बर्फ पानी
किलकारी से मोहित करती
मेरी प्यारी गुड़िया रानी

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़
द्वितीय-

बाल सुलभलीला से सबकी
बनती एक कहानी

पल-पल याद रहे हमको भी
श्रीमति अनिता जैन, इंदौर
तृतीय-
रामकृष्ण ने लीला रच दी
अपने सुंदर बचपन की
नटखट उनके याद करें सब
भले उमर हो पचपन की
मेरे घर को स्वर्ग बनाती
सदा लाडली बिटिया रानी
बेटों से भी अच्छी लगती
मेरी प्यारी गुड़िया रानी
श्रीमति इन्द्रा जैन, भोपाल

वर्ग पहेली क्र. 265
दिसम्बर 2021 के विजेता

प्रथम : श्री राजकुमार जैन, इंदौर
द्वितीय : पल्लवी जैन, सागर
तृतीय : आयुषी जैन, गंजाबासौदा

माथा पच्ची

1. र व ष अ र् अ य् उ ष् ण्
2. व् अ आ क् ई ष् ट् आ न् प् र्
3. अ प् अ अ श् अ ल् क् ष् अ ण् अ व् र्
4. अ प् अ र् अ आ अ ल् ह् अ क् अ ण् र् व्
5. अ अ त्र् य् अ व् न् प् व् द् अ

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

परिणाम :

दिसम्बर 2021: (1) संस्कार शिविर, (2) योग शिविर, (3) प्रशिक्षण शिविर,
(4) शिक्षण शिविर, (5) पूजन शिविर



पुराण प्रेरणा

पांडव पुराण में अनित्य भावना

क्षणमात्र स्थिरं लोके जी वितव्यं नृणां सदा ।
अभ्रवद्विभ्रमस्तत्र स्थायित्वेन कथं भवेत् ॥
शरीरं चंचलं वृक्षच्छायावद्यौवनं मतम् ।
जल बुदबुदवद्विद्वि वित्तं चलदोपमम् ॥
विषया यदि नश्यन्ति चक्रिणामपि का कथा ।
अन्येषां तु स्वयं व्याज्या विद्वद्भिः शिवसिद्धये ॥
नश्वरेण शरीरेण साध्यमत्राविनश्रम् ।
पदं प्रतिमया साध्यश्चन्द्रो वा चन्द्रिकालयः ॥
न किञ्चिच्छाश्वतं लोके विद्यते निजजन्मिनम् ।
विहायेन्द्र धनुस्तुल्यं दृष्टमात्र प्रियं परम् ॥
किं कस्य जीवितं दृष्टं भरतादेश्च चक्रिणः ।
किं ताम्यसि तदर्थं किं सफलं वा क्षणं नय ॥

शुद्ध मतिन से यों विचार करने लगे कि संसार में जीवों का जीवन क्षण-स्थायी है मेघ की भाँति नष्ट होने वाला है फिर इसमें स्थिरता का भान ही कैसे सकता है। शरीर चंचल है यौवन वृक्ष की छाया-तुल्य है या जल के बबूलों जैसा है तथा चित्त-मेघ तुल्य है विषय, पदार्थ, वगैरह जबकि चक्रवर्तियों के यहां भी स्थित नहीं रहते तब औरों के पास स्थिर रहने की तो कथा ही क्या है। अतः विद्वानों को चाहिये की वे मोक्ष की सिद्धि के लिये विषयों को स्वयं ही छोड़ दें और इस विनश्वर शरीर द्वारा अविनश्वर पद को साधने में कुछ भी उठा न रखें इसमें उनकी बुद्धिमानी है। सच पूछों तो इस लोक में अपने आत्मा के सिवा और कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। सब इन्द्र धनुष की भाँति केवल देखने मात्र के लिये प्रिय हैं, वास्तव में संसार में कोई प्रिय वस्तु नहीं। यदि कोई प्रिय वस्तु है तो वह एक आत्मा ही है। जबकि संसार में भरतचक्री आदि के जैसे महापुरुषों का जीवन भी स्थिर नहीं देखा गया तब फिर हे आत्मन् तू व्यर्थ ही क्यों दुःख करता है, अपने जन्म को सफल क्यों नहीं करता। मुझे तो यह चाहिये कि तू एक क्षण को भी व्यर्थ न जाने दे।

करियर



साइबर में धन कमाने के अवसर

इंटरनेट के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुये हैं, जिससे हमारे बहुत से कठिन कार्य आसानी से हो जाते हैं, इंटरनेट ने एक तरफ कार्यों में लगने वाले समय को कम किया है, तो दूसरी इसके माध्यम से अपराध की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है आज के समय में वेबसाइट हैकिंग, क्रेडिट कार्डों से लेन-देन में हेराफेरी, साइबर वायरस से सिस्टम छेड़छाड़ इत्यादि अपराध हो रहे हैं, इस प्रकार के अपराध को साइबर क्राइम कहा जाता है।

अपराधों को नियंत्रण में लाने के लिये अंतराष्ट्रीय कानून बनाये गये हैं, जिन्हें साइबर लॉ (Cyber Law) कहा जाता है, इस समय साइबर लॉ से सम्बंधित कोर्स विभिन्न संस्थानों में संचालित हो रहे हैं, भविष्य में इस क्षेत्र में एक्सपर्ट लोगों की बहुत मांग होने वाली है।

शैक्षिक योग्यता: साइबर लॉ के कोर्स में प्रवेश के लिये आपको बारहवीं या स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, आईटी या एल.एल.बी की पढ़ाई कर चुके व्यक्ति भी इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

पाठ्यक्रम: इस कोर्स में प्रवेश लेने के इच्छुक व्यक्ति इसमें पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा या सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं, अभी ऐसे शिक्षण संस्थानों की संख्या अधिक नहीं है, साइबर लॉ से संबंधित अधिकतम दो विषय पढ़ाये जाते हैं, इन विषयों में नेटवर्क सुरक्षा, हमलों के प्रकार, नेटवर्क सिक्योरिटी के खतरे, हमले और खामियां, सुरक्षा संबंधी समाधान और उन्नत सुरक्षा प्रणाली आदि महत्वपूर्ण है।

रोजगार के क्षेत्र: इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग से साइबर क्राइम में अत्यधिक वृद्धि हो रही है, इनको रोकने के लिये प्रत्येक संस्था अपने यहाँ साइबर लॉ एक्सपर्ट की नियुक्ति करती है, इन संस्थाओं में बैंकिंग सेक्टर, बीपीओ, आईबी, आईटी, शिक्षण संस्थान में आप सरकारी या प्राइवेट जॉब प्राप्त कर सकते हैं, इसके अलावा आप बड़े-बड़े प्राइवेट फर्म, निजी फर्म द्वारा साइबर लॉ एक्सपर्ट को जॉब प्रदान करते हैं, अन्य क्षेत्रों में आप एयरलाइंस, हेल्थकेयर, ट्रांसपोर्टेशन, इनफ्रास्ट्रक्चर, इमर्जेंसी रिस्पॉन्स सिस्टम आदि स्थानों पर साइबर लॉ एक्सपर्ट्स की मांग अधिक रहती है, आप यहाँ पर भी जॉब प्राप्त कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण संस्थान: डिपार्टमेंट ऑफ लॉ, डी.यू. एमिटी लॉ स्कूल, दिल्ली आई.एम.टी, गाजियाबाद, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जोधपुर, पश्चिम बंगाल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ज्युडिशियल साइंस, कोलकाता, इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद

वेतन: साइबर लॉ के क्षेत्र में आपको फ्रेशर के रूप में 15 से 20 हजार रुपये प्रति माह प्राप्त होते हैं, अनुभव बढ़ने के पश्चात् आपकी सेलरी लाखों में हो सकती है, इस क्षेत्र में फ्रीलांस कार्य करके भी आप अपनी इच्छानुसार वेतन प्राप्त कर सकते हैं।

दुनिया भर की बातें



■ 1 नवम्बर

- पटना के गांधी मैदान में नरेन्द्र मोदी की रैली के पहले 27 अक्टूबर 2013 को हुये विस्फोट मामले में एन.आई.ए की अदालत ने चार दोषियों को फाँसी तथा दो को उम्र कैद और एक को 7 साल की सजा सुनवाई।

- जापान के पी.एम. फेमियो किशिदा की चुनाव में 233 सीटें मिली।

- पंजाब के महाधिवक्ता ए.पी.एस ने पद इस्तीफा दिया।

■ 2 नवम्बर

- ग्लासगो: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक विश्व एकर सूर्य एक ग्रह का सूत्र जयवायु शिखर सम्मेलन में दिया।

- काबुल में फिर किदायनी हमला हुआ 25 लोगों की मौत हुई 50 लोग घायल हुये।

- म.प्र. उपचुनाव भाजपा के प्रत्याशी खंडवा से ज्ञानेश्वर पाटिल पृथ्वीपुर से शिशुपाल यादव और जोबट से सुलोचना रावत जीती तथा रैगाँव से कल्पना वर्मा ने

विजय हासिल की।

■ 3 नवम्बर

- खरगौन: कसरावद से पुलिस ने हवाला में खपाने निकले 24 लाख के नकली नोट पकड़े बड़ोदरा के अजहर मियाँ और मो. सलीम बोहरा को गिरफ्तार किया।

- बालाकोट एयर स्ट्राइक के हीरो अभिनंदन वर्धमान वायुसेना में ग्रुप कैप्टन बने।

- गमासगो: भारतीय छात्रा विनीशा के भाषण को कई राष्ट्र प्रमुखों ने स्टेडिंग ओवेशन दिया।

■ 4 नवम्बर

- नौशेरा: भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जवानों के बीच दीपावली पर्व मनाया।

- गोपाल गंज (बिहार): जहरीली शराब पीने से 29 की मौत हुई। तथा मरने वालों की संख्या 33 तक पहुँची।

- महोबा: झाड़फूक के शक में 5 साल के मासूम बेटे की हत्या पिता के सामने की।

■ 5 नवम्बर

- भोपाल: म.प्र. सरकार ने 4% वैट घटाया इससे पेट्रोल 107 रुपये और डीजल 90.7 रुपये हुआ।

- आर्यन खान ड्रस मामले में केन्द्रीय टीम जांच करेगी अब समीर वानखेड़े नहीं करेंगे।

- गुना: कंटेनर से मिनी बस भिड़ी 3 की मौत हुई आगलगी 4 गम्भीर रूप से घायल हुये।

■ 6 नवम्बर

- अहमदनगर: जिले में आइ सी यू में आग लगने से 11 कोरोना मरीज जिंदा जले। अस्पताल के अग्निशामक उपकरण खराब थे।
- राजौरी (जे.के.): जिला के थाना मंडी इलाके में मुठभेड़ के तहत दो आतंकी मारे गये।
- महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख को 14 दिन की हिरासत में पुलिस के जरिये मनी लैंडिंग मामले में जेल भेजा।

■ 7 नवम्बर

- भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के समापन सत्र को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संबोधित किया।
- अयोध्या से रामेश्वरम तक के 17 धार्मिक पर्यटन स्थलों का दर्शन करने वाली रामायण सर्किट ट्रेन शुरू हुई।
- तमिलनाडु के 11 जिलों में 20 से.मी से अधिक वर्षा हुई चेन्नई में बाढ़ से स्कूल बंद हुये।

■ 8 नवम्बर

- भोपाल: हमिदिया अस्पताल में बच्चों के बोर्ड में शार्ट सर्किट से आग लगी 127 बच्चे नवजात फंसे। 4 बच्चों की मौत हुई।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 7 को पद्म विभूषण, 10 को पद्म भूषण और 102 को पद्मश्री प्रदान किया।
- ग्वालियर: धर्मपुरा गुंडों ने भरी पंचायत में की फायरिंग गांव के लोगों ने दबोच लिया मॉब लिचिंग में लाखन सिंह और उसके साथी रामलाल बघेल की हत्या कर दी।

■ 9 नवम्बर

- पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन को पद्मभूषण एवं नेमिनाथ जैन इंदौर पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
- रोहित शर्मा को टी-20 टीम की कप्तानी सौंपी।
- जकाती: बारिश और बाढ़ से बंदरगाह तट और समुद्र का भेद मिटा।

■ 10 नवम्बर

- बाड़मेर: गलत साइड से आ रहे ट्राले से यात्री भर बस टकराने से दोनों में आग लगी 12 लोग जिंदा जले।
- यू.पी. के पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति को सामूहिक दुष्कर्म मामले में विशेष अदालत चित्रकूट ने दोषी करार दिया।
- जी.एम.सी डॉन डॉ. जितेन शुक्ला हमीदिया अधीक्षक डॉ. लोकेन्द्र दवे सहित 5 को हटाया गया।

■ 11 नवम्बर

- छतरपुर: गौरीहार के पास खड्डी गाँव में बैलगाड़ी से चार ले जाते समय हाईटेंशन लाइन के सम्पर्क में आने से दो सगी बहनों की विद्यापाल और ज्ञानकुंवर की मौत हुई।
- बरगी विधायक संजय यादव के बेटे वैभव ने गोली मारकर आत्म हत्या की वह 17 वर्षीय 11 वीं का छात्र था।
- दक्षिण अफ्रिका के पूर्व राष्ट्रपति नोबेल पुरस्कार विजेता एफ डब्ल्यू डी क्लार्क का निधन हुआ वे 85 वर्षीय कैसर से पीड़ित थे।

■ 12 नवम्बर

- झारखंड पुलिस ने 100 हमलों का मास्टर माइंड प्रशांत बोस उर्फ बूढ़ा और उसकी पत्नी को गिरफ्तार किया।
- राज्यसभा के महासचिव आइ.ए. एस पीसी मोदी को नियुक्त किया गया।
- उ.प्र. के पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति सहित 3 लोगों को विशेष अदालत ने सामूहिक दुष्कर्म मामले में उग्र कैद की सजा सुनाई।

■ 13 नवम्बर

- ओलांपिक में गोल्ड मेडल विजेता नीरज चौपड़ा सहित 12 खिलाड़ियों को खेल रत्न सम्मान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने दिया।
- राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विमल पटेल को इन्टरनेशनल लॉ कमीशन में चुना गया।
- इम्फाल: घात लगाकर चुरा चांदपुर जिले के सेहकन गांव कर्नल विप्लव त्रिपाठी पर उग्रवादियों ने हमला किया कर्नल सहित 4 जवान शहीद हुये।

■ 14 नवम्बर

- गया: मुखबरी के आरोप में नक्सलियो ने दो भाई उनकी पत्नियों को फाँसी पर टाँकर हत्या की।
- चीन से तनाव के बीच रूस ने भारत को एस 400 मिसाइल सिस्टम की आपूर्ति की।
- आस्ट्रेलिया ने टी-20 क्रिकेट विश्वकल पहली बार जीता।
- संस्कृत विद्वान सत्य व्रत शास्त्री का निधन हुआ वे 91 वर्ष के थे।

■ 15 नवम्बर

- प्रसिद्ध साहित्यकार कहानीकार उपन्यास मन्त्रू भंडारी का निधन हुआ। वे 90 वर्ष की थी। रंग मंच व्यक्तित्व पद्म विभूषण बलवंत मोरेश्वर पुरंदरे का निधन हुआ आप 99 वर्ष के थे।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भोपाल में कमलापति रानी रेल्वे स्टेशन का प्रारंभ किया एवं भगवान बिरसा मुंडा की जयंती सभा को संबोधित किया।
- मोरबी : 120 किलो हेराईन पकड़ी गई जिसकी कीमत 600 करोड़ रुपये मानी गई 3 लोग गिरफ्तार हुये।

■ 16 नवम्बर

- सीहोर: पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर व (भारत रत्न) बच्चों से किये वादा निभाने म.प्र. आये सी.एम. से मिले।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लेकर आया सुपर हरक्यूलिस सी 130 विमान पूर्वांचल एक्सप्रेस वे की हवाई पट्टी पर सुल्तानपुर जिले में उतरा।
- श्रीनगर: आतंकी मुठभेड़ के दौरान क्रास फायरिंग में दो कारोबारी मारे गये वे आतंकियों के समर्थक थे।

■ 17 नवम्बर

- म.प्र. 100% कोरोना प्रतिबंधों से मुक्त घोषित हुआ।
- ई.डी निदेशक संजय मिश्र का कार्यकाल 1 साल बढ़ा।
- कश्मीर में दो मुठभेड़ों में टी आर एफ कमांडर सहित 5 आतंकी ढेर हुये।

■ 18 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने पाक्सो एक्ट की धार-7 स्कैन यूस्कैन संपर्क न हो तब भी यौन उत्पीड़न घोषित किया।

- इस्लामाबाद: पाकिस्तान की इमरान खान की सरकार ने कट्टरपंथी संगठन तहरीक ए लबैक पाकिस्तान के हाफिज साद हुसैन रिजवी को रिहा किया।

- बुरहानपुर: जिले के जाफरपुर में निर्माणाधीन प्याऊ की दीवार खेल रहे स्कूली बच्चों पर गिरी एक बच्चे की मौत हुई 3 गम्भीर घायल हुये।

■ 19 नवम्बर

- तमिलनाडु आंध्र सहित दक्षिण भारत में बारिश ने रौद्र रूप धारण किया। 4 बच्चों से सहित 17 लोगों की मौत हुई।

- केन्द्र सरकार ने तीनों कृषि कानून वापिस लिये।

- जो बाइडन ने अपनी समस्त संवैधानिक शक्तियाँ उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को सौंपी कमला हैरिस पहली महिला राष्ट्रपति घोषित हुई।

■ 20 नवम्बर

- पंजाब के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिद्धू ने पाक के प्रधानमंत्री इमरान खान को बड़ा भाई कहा।

- आंध्र में बाढ़ बारिश में 24 लोगों की मौत हुई।

- लगातार इंदौर शहर 5वीं बार सबसे स्वच्छ शहर घोषित हुआ छत्तीसगढ़ सबसे स्वच्छ राज्य घोषित हुआ।

■ 21 नवम्बर

- लिवरपूल: आतंकी ने खुद को उड़ाया ड्रायवर ने खुद के साथ अस्पताल को भी बचाया।

- राजस्थान के अशोक गहलोत के कैबिनेट में विस्तार हुआ 4 दलित मंत्री बने।

- बराक मिसाइल से लैस आई.एन.एस. विशाखापटनम नौ सेना में शामिल हुआ।

■ 22 नवम्बर

- कैप्टन अभिनंदन वर्धमान को राष्ट्रपति रामनाथ ने वीर चक्र से सम्मानित किया।

- अमेरिका से लौटे अभिनेता/राजनेता कमल हसन कोरोना संक्रमित हुये।

- तालिबान ने फरमान जारी किया महिलाओं के टी.वी.शो बंद किया कहा महिला पत्रकार को हिजाब जरूरी।

■ 23 नवम्बर

- लदाख की गलवान घाटी में चीन के छक्के छुड़ाने वाले कर्नल संतोष बाणू को महावीर चक्र से सम्मान मिला।

- सेलम: (तमिलनाडु): करुंगल में सिलेंडर फटने से तीन मकान ढहे 5 लोगों की मौत हुई।

- सी.बी.आई विशेष अदालत में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री चारा घोटाला मामले में उपस्थित हुये।

■ 24 नवम्बर

- गौतम अडानी एशिया के सबसे अमीर शख्स घोषित हुये उन्होंने मुकेश अंबानी को पीछे छोड़ा।

- भाजपा सांसद गौतम गम्भीर को धमकी भरे दी ईमेल मिले।

- हिमाचल प्रदेश के शिमला मंडी जिले में और मंडी में भूकम्प झटके आये।

■ 25 नवम्बर

- मुम्बई: सुप्रीम कोर्ट द्वारा गिरफ्तारी पर रोक लगने बाद परमवीर सिंह पूर्व पुलिस आयुक्त प्रकट क्राइम ब्रांच 11 के आफिस पहुंचे।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यू.पी. के जेवर में बनने वाले इंटरनेशनल एयरपोर्ट का शिलान्यास किया।

- प्रवीण सिन्हा (सी.बी.आई.के.वि.निर्देशक) इंटरपोल कार्यकारी समिति में एशिया के प्रतिनिधि चुने गये।

■ 26 नवम्बर

- मास्को: रूस के साइबेरिया की एक कोयला खदान में आग लगने से 52 लोगों की मौत हुई।

- दुर्ग-उधमपुर एक्सप्रेस में आग लगी दो बोगी जली।

- दमोह: फर्जी दस्तावेज बनाकर रह रहा बांग्लादेशी विश्वास सारंग झलो न से गिरफ्तार हुआ।

■ 27 नवम्बर

- दक्षिण अफ्रिका से दो ओमिक्रॉन से संक्रमित यात्री लौटे।

- यूक्रेन सीमा पर रूसी सेना का जमावड़ा नाटो को चिंता का विषय बना।

- प्लास्टिक कचरे के ईशन से रॉकेट इंजन सफल चला परीक्षण सफल रहा।

■ 28 नवम्बर

- त्रिपुरा में भाजपा ने 334 सीटों में 329 वार्ड में जीत दर्ज की।

- यू.पी. में टेट अध्यापक पात्रता परीक्षा 2021 का पेपर लीक होने से परीक्षा रद्द हुई।

- नदिया: जिले में शव ले जा रहा वाहन ट्रक से टकराया 18 लोगों की मौत हुई।

■ 29 नवम्बर

- पराग अग्रवाल ट्रिबटर के नये सी.ई.ओ. बने।

- लोकसभा एवं राज्यसभा में 3 कृषि कानून रद्द हुये।

- जांच आयोग ने मुम्बई के पूर्व पुलिस आयुक्त परम वीर सिंह के खिलाफ जमानती वारंट रद्द किया।

■ 30 नवम्बर

- स्पेन के कैनरी द्वीप में पुनः ज्वालामुखी फटने से लावा नदी की तरह बहकर आवासीय इलाके की ओर बहा।

- बारबोडस अब औपनिवेशिक रिस्ते समाप्त कर गणतंत्र बना। पहली राष्ट्रपति साँद्रा मासोन बनी।

- एडमिरल आर. हरिकुमार ने नौसेना प्रमुख का पद सम्हाला।

इसे भी जानिये

राष्ट्रीय आंदोलन की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

- * भगत सिंह द्वारा केन्द्रीय असेम्बली भवन में बम विस्फोट 1929
- * काँग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता का माँग 1929
- * सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930
- * प्रथम गोलमेज सम्मेलन 1930
- * द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1931
- * तृतीय गोलमेज सम्मेलन 1932
- * साम्प्रदायिक निर्वाचक प्रणाली की घोषणा 1932
- * पूना पैक्ट 1932
- * प्रान्तीय स्वराज्य की घोषणा 1935
- * सात प्रान्तों में काँग्रेस मंत्रिमण्डल 1939
- * मुस्लिम लीग द्वारा मुक्ति दिवस मनाना 22 दिसम्बर 1939
- * मुस्लिम लोग द्वारा पाकिस्तान की माँग 1940
- * सुभाषचन्द्र बोस का भारत छोड़ना 1941
- * भारत छोड़ो आंदोलन 8 अगस्त 1942
- * क्रिप्स मिशन का आगमन 1942
- * आजाद हिन्द फौज की स्थापना 1943
- * केबिनेट मिशन का आगमन 1946
- * भारतीय संविधान सभा का निर्वाचन 1946
- * नौसेना का विद्रोह 12 फरवरी 1946
- * मुस्लिम लोग द्वारा सीधी कार्यवाही की घोषणा 16 अगस्त 1946

कविता

उनकी दास्तान के लम्हे अजीब से

उनकी दास्तान के लम्हे अजीब थे
पलको पर रुके आँसू कितने करीब थे
चारों तरफ सियाही ने सन्नाटा बुना बहुत
जो दीप जल उठे वे खुशनसीब थे
जिन्दगी गुजरी सदा उनकी जकात में
तन से थे तवंगर मरग मन से गरीब थे
मौत उनके पास से वापिस चली गई
मैं जानता नहीं था कि वे बदनसीब थे।



दिशा बोध

निलोभता



1. जो पुरुष सन्मार्ग छोड़कर दूसरे की सम्पत्ति लेना चाहता है, उसकी दुष्टता बढ़ती जायेगी और उसका परिवार क्षीण हो जायेगा।
2. जो पुरुष बुराई से विमुख रहते हैं, वे लोभ नहीं करते और न ही दुष्कर्मों की ओर ही प्रवृत्त होते हैं।
3. जो मनुष्य अन्य लोगों को सुखी देखना चाहते हैं, वे छोटे-मोटे सुखों का लोभ नहीं करते, और न अनीति का ही काम करते हैं।
4. जिन्होंने अपनी पाँचों इन्द्रियों को वश में कर लिया है और जिनकी दृष्टि विशाल है, वे यह कहकर दूसरों की वस्तुओं की कामना नहीं करते कि “ओहो! हमें इनकी अपेक्षा नहीं है।”
5. वह बुद्धिमान और समझदार मन किस काम का, जो लालच में फँस जाता है और अविचार के कामों के लिए उतारू होता है।
6. वे लोग भी, जो सुयश के भूखे हैं, और सन्मार्ग पर चलते हैं, नष्ट हो जायेंगे; यदि वे धन के चक्कर में पड़कर कोई कुचक्र रचेंगे तो।
7. लालच द्वारा एकत्र किये हुए धन की कामना मत करो, क्योंकि भोगने के समय उसका फल तीखा होगा।
8. यदि तुम चाहते हो कि हमारी सम्पत्ति कम न हो, तो तुम अपने पड़ोसी के धन-वैभव को हड़पने की कामना मत करो।
9. जो बुद्धिमान मनुष्य न्याय की बात को समझता है और दूसरों की वस्तुओं को लेना नहीं चाहता, लक्ष्मी उसे ढूँढती हुई उसके घर चली जाती है क्योंकि वह श्रेष्ठता को जानती है।
10. दूरदर्शिता हीन लालच नाश का कारण होता है; पर जो यह कहता है कि ‘मुझे किसी वस्तु की आकांक्षा ही नहीं’, उस तृष्णा विजयी की ‘महत्ता’ सर्व विजयी होती है।

आओ सीखे : जैन न्याय

अर्थ और प्रकाश को ज्ञान का कारण मानने की समस्यायें

कुछ दार्शनिक मन और इन्द्रिय को ज्ञान उत्पत्ति का कारण मानते हैं, तो कुछ दार्शनिक अर्थ और प्रकाश को ज्ञान कारण मानते हैं। नैयायिक ज्ञान को पदार्थ का ज्ञान का कार्य मानते हैं, वे इसके पीछे जो तर्क देते हैं वे निम्न हैं -

1. ज्ञान अर्थ और प्रकाश का कार्य है क्योंकि उनके साथ ज्ञान का अन्वय-व्यतिरेक पाया जाता है वह उसका अर्थ माना जाता है।
2. अर्थ और प्रकाश के होते हुये भी यदि ज्ञान का कारण माने जाए तो क्या आपत्ति ?
3. संशय और विपर्यय ज्ञान अर्थ से ही उत्पन्न होता है इसलिए ज्ञान भी पदार्थ से उत्पन्न माना जा सकता है। उक्त नैयायिकों के तर्क का खंडन करते हुये जैनाचार्य क्रमशः तर्क देते हैं -

अ) ज्ञान का अर्थ और प्रकाश के साथ अन्वय-व्यतिरेक नहीं हैं। इस विषय में उभय प्रसिद्ध दृष्टान्त उपरितव्य होता है। जिसे कामला रोग होता है उसे आकाश में बाल दिखाई देता है। जबकि कामला रोगी की आँखों की पलकों में बाल नहीं होती है। जब उसे आकाश में केशोन्डुक का ज्ञान नहीं होना चाहिये।

टूट के निमित्त पुरुष की भ्रान्ति भी देखी जाती है। अतः केशोन्डुक और टूट ज्ञान से व्यभिचार आता है। अतः अन्वय-व्यतिरेक रूप से पदार्थ ज्ञान का कारण नहीं बनता है।

ब) अर्थ और प्रकाश ज्ञान का कारण नहीं माना जा सकता है। यदि अर्थ प्रकाश को ज्ञान का कारण माना जायेगा तो वे चक्षु आदि के समान ज्ञान के विषय नहीं हो सकते हैं। ज्ञान अर्थ का कार्य नहीं है। यह बात प्रत्यक्ष से प्रतीत होती है। यदि यह प्रत्यक्ष से प्रतीत होती है या प्रत्यक्षान्तर से तो फिर इसमें विवाद नहीं होना चाहिये। प्रत्यक्ष तो इस बात को नहीं मानता है कि मैं अर्थ का कार्य हूँ। यदि प्रत्यक्षान्तर पक्ष को माना जायेगा तो प्रत्यक्ष ज्ञानान्तर द्वितीय ज्ञान को ग्रहण नहीं करेगा। अतः ज्ञान अर्थ का कार्य है। यह वह नहीं जान सकता है।

स). ज्ञान अर्थ का कार्य यह बात प्रमाणान्तर से जानी जाती है तो वह प्रमाणान्तर ज्ञान को विषय करता है या अर्थ को अथवा ज्ञान और अर्थ दोनों को। यदि प्रारम्भ के दो विकल्पों में तो वह प्रमाणान्तर चूँकि एक ही अर्थ को विषय करता है। अतः वह नहीं जान सकता है कि अर्थ और ज्ञान में कार्य कारण भाव है। जैसे- कुम्भकार और घट में से किसी एक को ग्रहण करने वाला ज्ञान कुम्भकार और घट में वर्तमान कार्यकारण भाव को नहीं जानता है।

तीसरे विकल्प - ज्ञान और अर्थ दोनों को जानने वाले ज्ञान से भी ज्ञान अर्थ का कार्य है ऐसी प्रतीति नहीं होती है, क्योंकि नैयायिकों ने अल्पज्ञों के इस प्रकार का ज्ञान नहीं माना है। नैयायिकों की मान्यता है कि ऐसा नहीं है कि ज्ञान को जानने वाला ज्ञान अर्थ को भी जानता है अथवा अर्थ को जानने वाला ज्ञान, ज्ञान को भी जानता है यदि यह मत नैयायिक स्वीकार करते हैं तो उन्हें पाँचवाँ प्रमाण मानना पड़ेगा। इस तरह अर्थ ज्ञान का कारण सिद्ध नहीं होता है।

द) नैयायिक दर्शन वाले पदार्थ को संशय और विपर्यय का कारण मानते हैं उनका यह कथन भी ठीक नहीं है। यदि संशय ज्ञान सामान्य अर्थ से उत्पन्न होता है तो संशय को अर्थ जन्य मानने पर विरोध आता है क्योंकि जो सामने मौजूद होता है वह अर्थ होता है और जो मौजूद नहीं होता है वह अनर्थ होता है। यदि सामान्य अर्थ से संशय की उत्पत्ति होती है तो कमला रोगी को केशोन्डुक का ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता। अतः सामान्य पदार्थ संशय का कारण नहीं है।

ई) विशेष पदार्थ का ज्ञान भी संशय का कारण नहीं है। यदि सामने स्थाणु पुरुष रूप विशेष पदार्थ विद्यमान होता है तो उसका ज्ञान अभ्यान्त कहलाता है।

फ) इन्द्रिय और मन में उत्पन्न होने वाले सुज्ञान में भी अर्थ को कारण मानने की कल्पना भी व्यर्थ है। अतः विशेष पदार्थ भी संशय आदि ज्ञान का जनक नहीं है।

ग) संशय आदि ज्ञान पदार्थ के अभाव में भी उत्पन्न होते हैं। तब अर्थ के अभाव में ज्ञान के अभाव की सिद्धि कैसे हो सकती है। जिससे ज्ञान को अर्थ का कार्य माना जाए।

ह) योगी ज्ञान पूर्व कालभावी पदार्थों और भूत काली पदार्थों को जानता है यदि पदार्थ ज्ञान का कारण होगा तो योगियों को ज्ञान नहीं हो सकेगा। वर्तमान भावी पदार्थ ज्ञान का कारण नहीं होते हुये भी यदि योगी के द्वारा जाने जाते हैं, तो हमारा ज्ञान भी ज्ञान के अकारण भूत पदार्थों को जान सकता है और यदि योगी ज्ञान वर्तमान और भावी पदार्थों को नहीं जानता है तो वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता है।

इ) जो ज्ञान का कारण है अर्थ होता है वही ज्ञान के कारण जाना जाता है। ऐसा मानने वाले दार्शनिक अर्थ की उत्पद्य मान्यता को कैसे जान सकते हैं, क्योंकि पूर्व काली भावी ज्ञान के समय अर्थ की उत्पद्य मान्यता नहीं है किन्तु उत्पद्य मान्यता है और उत्तरकालीन भावी ज्ञान के उत्पन्न है, उत्पद्य मान्यता नहीं है।

ज) जो ईश्वर के ज्ञान को नित्य मानते हैं, उसके मत से यही सिद्ध होता है कि ज्ञान अकारण भूत अर्थ को जानता है। उसी तरह हमारा ज्ञान भी जाने तो क्या हानि है ? अतः अर्थ अन्वय-व्यतिरेक भी ज्ञान का कारण नहीं है। प्रकाश भी ज्ञान का कारण नहीं है।

कुछ मत वाले प्रकाश को ज्ञान का कारण मानते हैं किन्तु जिसकी आँख में अंजन वगैरह लगा है उन्हें और बिल्ली वगैरह को प्रकाश का अभाव होने पर ज्ञान की उत्पत्ति देखी जाती है।

पंडित (डॉ.) दरबारी लाल जी कोठिया समाधि दिवस

* सुषमा जैन भिलाई *

जैन दर्शन एवं न्याय विद्या के विद्वान मनीषी, न्यायाचार्य, डॉ. दरबारी लाल जी कोठिया के समाधि दिवस पर मेरा शत शत नमन्। रत्नों की खान कहे जाने वाले बुन्देलखण्ड ने चमकीले पाषाण रत्नों के साथ अनेकों जीवन्त रत्न भी समाज को दिये।

बुन्देलखण्ड की परम पावन स्थली सिद्ध क्षेत्र नैनागिरि (मध्यप्रदेश) में 11 जून 1991 में आपका जन्म हुआ। आपने जीवन में ज्ञान की आराधना के साथ साथ संयम की साधना भी प्रारंभ की, आचार्य भगवन समंतभद्र महाराज से दूसरी प्रतिमा के व्रत लिये। जीवन के अंतिम समय में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी पावन चरणों के सदा व्रतों की दृढ़ता एवं समाधि मरण की भावना व्यक्त करते हुये नौवीं प्रतिमा के व्रत अंगीकार कर अपने जीवन को धन्य किया। ऐसा दुर्लभ संयोग कोठिया जी को मिला, उनका जन्म श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरि म.प्र. में हुआ और समाधिमरण भी श्री सिद्धक्षेत्र (नेमवार म.प्र.) में हुआ।

अल्प वय में ही आपको माता पिता का वियोग सहन करना पड़ा आपकी प्राथमिक शिक्षा सौरई ग्राम में मामा के यहाँ हुई। सादूमल ललितपुर के महावीर जैन विद्यालय में भी आपने अध्ययन किया। मानवतावादी संत पूज्य श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी का आपको सदैव आशीर्वाद प्राप्त रहा। उन्हीं के मार्गदर्शन में सन् 1930 में दरबारीलाल जी कोठिया ने स्यादवाद महाविद्यालय बनारस में प्रवेश लिया। सन् 1937 तक अध्ययन करते हुये विशारद, सिद्धांत शास्त्री, न्यायाचार्य, शास्त्राचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री कोठिया जी का अध्ययन सदैव चलता रहा। उन्होंने कुछ वर्षों तक वीर विद्यालय पपौरा जी, ऋषभ ब्रह्मचारी आश्रम मथुरा में, दिगम्बर जैन कॉलेज बड़ौत में अध्यापन कराया। दिल्ली के समंतभद्र संस्कृत विद्यालय में प्राचार्य पद पर रहे। अध्यापन के साथ साथ आपका अध्ययन भी निरंतर चलता रहा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में प्राच्यविद्या और धर्म विज्ञान संकाय में आप जैन दर्शन प्राध्यापक पद पर रहे।

जैन तर्क शास्त्र में अनुमान विचार ऐतिहासिक व समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। इसी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुये वे जैन बौद्ध दर्शन के आचार्य पद से सेवानिवृत्त हुये। अपने यशस्वी जीवन काल में आप अनेक संस्थाओं के सम्मानित पदों पर रहे। दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद के अध्यक्ष रहे, वीर सेवा मंदिर एवं वर्णी ग्रंथमाला के महामंत्री रहे। अनेक पत्र पत्रिकाओं में दो सौ से अधिक शोध आलेख प्रकाशित हुये।

श्री कोठिया जी द्वारा संपादित एवं अनुदिन ग्रंथ न्यायदीपिका, आप्त परीक्षा, स्यादवाद सिद्धि प्रमाण, प्रमेयकलिका, द्रव्य संग्रह, देवागम स्तोत्र आदि हैं संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान होते हुये भी आपकी यह विशेषता रही कि आपने अत्यन्त सहज सरल भाषा में वक्तव्य देकर जिनशासन की प्रभावना करी। देश में अनेक संस्थाओं द्वारा श्री कोठिया जी को समय समय पर सम्मानित किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती के अवसर

पर राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ विद्वान के रूप में सम्मानित किया गया। स्यादवाद विद्यालय वाराणसी द्वारा वर्णी पुरस्कार से सम्मानित किया। दिल्ली में आचार्य विद्यानंद जी के द्वारा आचार्य कुन्द कुन्द पुरस्कार गांधी नाथरंग जी दिगम्बर जैन जनमंगल प्रतिष्ठान सोलापुर द्वारा न्याय सिन्धु की मानद उपाधि दी गई। मूडबिदरी कर्नाटक द्वारा न्याय रत्नाकर की उपाधि से सम्मानित किया गया। श्री श्रवणबेलगोला द्वारा श्री गोमटेश्वर विद्या पीठ पुरस्कार से आप सम्मानित हुये। श्री दरबारी लाल जी कोठिया को साहित्य सृजन शैक्षणिक सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु सन् 1972 में श्री साहू श्रेयांस प्रसाद जी की अध्यक्षता में अतिशय क्षेत्र अहार जी में आपका अखिल भारतीय सम्मान समारोह हुआ, जिसमें आपको अभिनंदन ग्रंथ समर्पित किया गया।

26 जनवरी 1998 को दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन द्वारा राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ संस्कृत मनीषी की उपाधि से सम्मानित किया गया। कोठिया जी की सादगी और विनम्रता ही उनका सबसे बड़ा गुण रहा। कोठिया जी को हमेशा अपने चाचा पंडित श्री वंशीधर जी व्याकरणाचार्य एवं परिजन पंडित श्री बालचंद्र जी सिद्धांताचार्य का समागम मिलता रहा। अंतिम दिनों में बीना (म.प्र.) में अधिकांश समय परम पूज्य मुनि 108 श्री क्षमासागर जी के चरण सान्निध्य में चिंतन मनन पूर्वक व्यतीत हुआ। अंत में उन्होंने श्री सिद्धक्षेत्र नेमावर में संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी के चरण सान्निध्य में 3 जनवरी 2000 को मध्याह्न में समाधि पूर्वक जीवन यात्रा को विराम दिया। इस शताब्दी के जैन दर्शन के विद्वान मनीषी के रूप में पंडित डॉ. दरबारी लाल जी कोठिया को सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। ऐसे महामना का सान्निध्य एवं वात्सल्य मुझे मेरे बचपन से उनकी समाधि तक समय समय पर मिलता रहा। उनके चरणों शत शत नमन।

कविता

जिंदगी की बिसात है

गोटियां ढंग से जमाना जिन्दगी की बिसात है
बाजी उलट गई तो फिर दिन में भी रात है
चाल चलना दोस्तो आगे पीछे देखकर
ये कोई और नहीं वक्त की परवाज है
अब सम्हालें सभी अपनी-अपनी किशियाँ
तूफान बहुत तेज है ये डूबता जहाज है
फल तक जो सलतनत के बेताज ये बादशाह
फकीरी और फाको का मिला उन्हें कैसा राज है
जिन्दगी के घाव नासूर हो गये
पता नहीं तबीतों का कैसा इलाज है।





क्रमांक- 11 वरिष्ठ नागरिक

वृद्धावस्था में आशा, आस्था और साहस का महत्व

अपनी निराशा और दुःखों का वर्णन हर किसी से और हर समय न करें। इससे एक तो नकारात्मक भावनार्यें आप पर हावी होने लगती हैं, दूसरे सुनने वाले कभी ऊब जाते हैं।

बोलते समय उत्तेजित न हों, और अपनी वाणी को नियंत्रित रखें।

अनावश्यक बोलने से बचें। अकसर हाल-चाल पूछने पर लोग अपने ही हालात का रोना लेकर बैठ जाते हैं या इतनी विस्तार से अपनी स्थिति के बारे में बताते हैं कि सुनने वाले परेशान हो जाते हैं।

जिंदगी में जो आपको नहीं मिला या जो खो गया उसे लेकर हमेशा दुःखी या निराश न हों। इससे आप अपने दुखों से कभी भी उबर नहीं सकते। आप नई उमंगों से जीवन में कुछ और प्राप्त करने का प्रयत्न करें। आप पायेंगे कि जिंदगी उतनी बुरी या निष्ठुर नहीं, जितनी आप समझते हैं।

बात करते समय ध्यान रखें कि आपके शब्द साफ हो, आवाज न ज्यादा तेज हो न हल्की।

आपकी भाषा संयत शालीन और गरिमामय होनी चाहिये।

दूसरे व्यक्ति की बात न तो बीच में काटे, न ही अचानक विषय बदले।

मुस्कुराहट में आपके अंदर का संतोष झलकना चाहिये। कोई भी आपको देखे तो उसे लगे कि आप दुनिया के सबसे खुशमिजाज इंसान हैं।

अपनी भावनाओं को छुपाना मुश्किल काम है, लेकिन किसी से मिलते समय अपने क्रोध, तनाव या दुख को भुलाकर दिल से मुस्कुरायें।

अपने पूरे व्यक्तित्व में अनुशासन लायें। आप की सोच कार्य व चीजों के प्रदर्शन में तारतम्य हो।

जिंदगी को पीछे देखकर समझा जाता है और आगे देखकर जिया जाता है।

जवान रहने के तीन रास्ते हैं, पहला ईमानदारी से जियें, दूसरा कम खायें और तीसरा अपनी उम्र हमेशा कम बतायें।

हंसने के लिये दांत कोई जरूरी नहीं होते।

नास्तिक व्यक्ति प्रतिकूल या बिगड़े हुये हालात से टूट जाते हैं। वही आस्तिक शख्स

से विपरीत स्थितियों के मध्य भी यह हौसला बुलंद रहता है कि स्थितियां देर से सही, लेकिन सुधरेगी जरूर। इस विश्वास से आस्तिकों का आत्मविश्वास क्षीण नहीं हो पाता।

आस्तिक शख्स समाज और मानवता के लिये ईश्वर के नाम पर कोई कल्याणकारी कार्य करने के इच्छुक होते हैं।

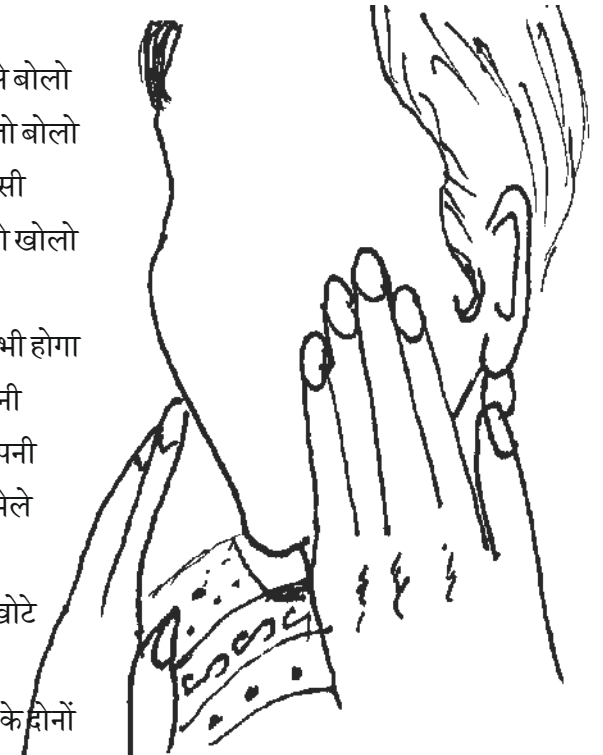
हम थोड़ी सी सावधानी से निखर सकते हैं, उसे प्रभावशाली बना सकते हैं। अपनी दिनचर्या में कुछ बातों का खयाल रखकर आप देखें, अपने व्यक्तित्व में तथा स्वयं में परिवर्तन महसूस करने लगेंगे।

ऊपर लिखी बातें 60 वर्ष की आयु से ऊपर वाले व्यक्तियों के लिये संजीवनी बूटी का काम करेंगी।

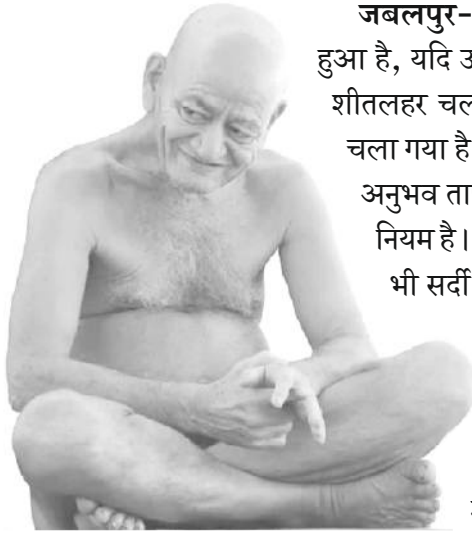
कविता

क्यों तकरार अपनी

हम एक कमरे में बैठे हो दोनों
न हम तुम से बोले न तुम हम से बोलो
अरे राज मन कर है क्या कुछ तो बोलो
अरे साथ कैसा हकीकत है कैसी
पट दिल के तुम अब जरा से तो खोलो
हम बोल लेगे मन साफ होगा
गुब्बारों का मन से निकलना भी होगा
ये चार दिन की है जिंदगी अपनी
क्यों छोटी बातों में तकरार अपनी
मिले है बिछुड जायेंगे ये सब मेले
अहं में बनाई दिवाले झमेले
कितने हम छोटे क्यों खयाल खोटे
इस वैर से तो सदा ही है टोटे
सहज जिंदगी जीले मिलकर के दोनों



प्रवचन

ऐसा पुण्य अर्जित करिये जो
कई पीढ़ियों तक खत्म न हो

जबलपुर- शीत अथवा ऊष्णता का अनुभव जिसे हुआ है, यदि उससे पूछा जाये तो वह कहेगा कि बहुत शीतलहर चल रही है अथवा तापमान कितना ऊपर चला गया है। पारा 50 को छूने लगा है, उष्णता का अनुभव तापमान के कारण हो रहा है। यह सामान्य नियम है। विशेष नियत तो यह है कि गर्मी के अंदर भी सर्दी लग सकती है और ठंड में भी गर्मी का अनुभव हो सकता है। 50 डिग्री तापमान में भी शीत का अनुभव कैसे हो सकता है। यह हम बताते हैं, आपके भीतर नाम कर्म का उदय है यदि शीत नाम कर्म का उदय है तो आपको शीत का ही अनुभव होगा, भले ही

तापमान 50 हो जाये, सुनकर या बड़ा अटपटा सा लग रहा है परंतु वास्तविकता यह है कि आप कर्म को मानते हैं नहीं, हम कर्म को भी मानते हैं और धर्म को भी मानते हैं आचार्य भगवान कहते हैं जो बाहर से देख रहे हैं वह कर्म है और भीतर के कर्म जाने जाते हैं। यहां वह कर्म चेतना है।

उक्त उद्गार आचार्य श्री विद्यासागर ने दयोदय तीर्थ में रविवार को मंगल प्रवचन में व्यक्त किये।

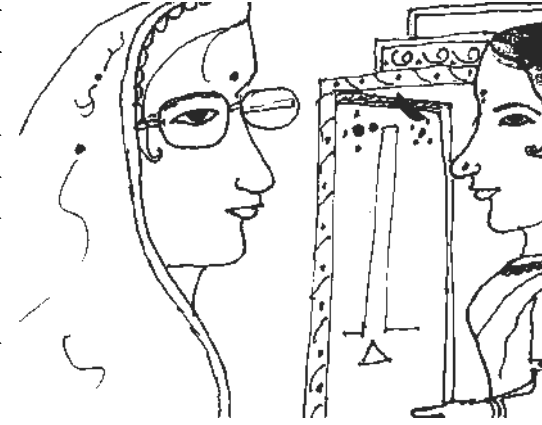
आचार्य श्री ने कहा, मनुष्य किस तरह कार्य करता है, हम आज उस तरफ ध्यान आकृष्ट कराना चाहते हैं। आपको लगेगा कि हल्दी लगे न फिटकरी और रंग चोखा। किसी के भी जीवन को देखिये तो कई रंग नजर आ जायेंगे। हर जीवन पूरी पुस्तक की तरह होता है। यह रंग होली का रंग होता है। बहिरंग और अंतरंग में रंग ही रंग हो जाये दूजा कोई रंग नजर न आये। आचार्य श्री ने कहा कि आपको ऐसा पुण्य अर्जित करना चाहिये जो कि पीढ़ियों तक खत्म न होने पाये। जब कभी आपके आंगन में डाकिया आये तो उसके बारे में गुस्सा कभी नहीं करनी चाहिये। वह तो माध्यम मात्र है कोई सूचना देने का इसलिये हमें अपने कर्मों की तरफ ध्यान लगाना चाहिये। उन्हें सुधारना चाहिये।

कहानी

उदास ऊषा

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

दीपावली
व्यतीत हो चुकी
थी पर्व के धूम -
धड़ाके हँसी के
ठहाके न जाने
कहां गुम हो
चुके थे ।
परिवार के दूर-
दूर से आये हुये
एक - एक
सदस्य विदा ले



लाडू चढ़ाने का
पहला अवसर
प्राप्त किया ।
ऊषा ने देखा श्री
महावीर जी क्षेत्र
को भी पहली
बार । ऊषा को
राजस्थान से
बहुत प्यार था
वह गुवहाटी में
रहते हुये भी
बचपन से

चुके थे ऊषा अपने पैतृक गांव वामनवास में रहती थी यद्यपि ऊषा ने एम.ए. तक पढ़ाई की थी किन्तु उसके पति संजीव पाटनी को किसी तरह की भी नौकरी कराना पसन्द नहीं था । राजस्थान की मारवाड़ी परम्परा के अनुसार सभी परिजन दीवाली पर अपने पैतृक गाँव अवश्य आते हैं पूरा घर खुशियों से भर जाता है । हर तरफ चहल-पहल नजर आती है । सात दिन कैसे और कब बीत जाते है यह किसी को पता नहीं लगता है ऊषा की शादी के बाद यह उसकी पहली दिवाली थी । इस दिवाली पर उसने पहली बार सबका प्यार पाया और रिश्तों की मिठास ने उसे पकवानों से ज्यादा आकर्षित किया ।

इस वर्ष अपनी योजना अनुसार पहले श्री महावीर जी लाडू चढ़ाने गये ऊषा ने

मारवाड़ की बातें अपनी दादी से सुनती रहती थी मारवाड़ की माटी में ही कुछ ऐसी तासीर है कि ऊंट कहीं भी मरे पर उस मुंह मारवाड़ की ओर ही होता है इन बातों को सुनने के बाद ऊषा ने यह सोच रखा था कि अगर मेरी शादी मारवाड़ में होगी तो मैं मारवाड़ के किसी सुन्दर से गांव में रहने का निर्णय अवश्य करूंगी क्योंकि गांव में पड़ोस की आत्मीयता और मिलनसारता जो मिलती है वह शहर में नहीं मिलती है शहरों में तो प्रदूषण ही प्रदूषण है ऊषा दिल्ली में भी रही और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये दिल्ली के प्रदूषण से उसने दो दो अवश्य किये अस्थमा की शिकार होते-होते बची दिल्ली में तो ध्वनि प्रदूषण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और प्लास्टिक का प्रदूषण जीना ही दुस्वार कर देता है इसीलिये

पर्यावरण की सुन्दर सी महक लेने के लिये ऊषा ने गांव में रहने वाले से ही विवाह करने की इच्छा जाहिर की थी उसकी किस्मत से उसे संजीव पाटनी जैसे वामनवास के जीवन साथी मिलें।

ऊषा ने श्री महावीर जी का तीर्थ दर्शन करके पाया की वही की वही भीड़ इस तीर्थ पर भी है उसने सुन रखा था तीर्थ तो वही होता है जहां शांति ही शांति होती है पर निर्वाण लाडू के दिन तो एक बड़ा मेला सा लगा हुआ था मुख्य मंदिर के बाहर भीतर इतनी भीड़ थी कि महावीर भगवान के दर्शन भी दुस्वार हो रहे थे ऊषा ने संजीव से बड़े धीरे से कहा क्या यहाँ ऐसे ही हमेशा रहती है, संजीव ने कहा नहीं यहाँ बहुत शांति रहती है फिर ऊषा ने कहा तो फिर भगवान महावीर स्वामी जिस दिन मोक्ष गये उसी दिन तो हम आर्येंगे मैं तो बचपन से ही महावीर जी का लाडू चढ़ाते आ रहा हूँ हमें जो मजा आनन्द यहां आता है वो कहीं नहीं आता है।

ऊषा ने कहा यद्यपि मुझे भीड़ से एलर्जी नहीं है फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि भीड़ में भगवान में दर्शन ठीक से नहीं हो रहे हैं तो संजीव ने कहा यदि आपको दर्शन ठीक से नहीं हो रहे हैं तो आप तो भाव से दर्शन करें इन मूंगावरणी भगवान महावीर में बहुत बड़ा अतिशय है हम जो सोच लें वह प्राप्त होता है ऊषा कोतूहल के साथ कहा तो आप हर साल कुछ न कुछ जरूर सोचते हैं संजीव ने कहा हाँ मैं जो भी सोचता हूँ वह मुझे प्राप्त अवश्य होता है ऊषा ने कहा- अच्छा बताओ आपने बीती

साल में क्या सोचा था संजीव ने कहा मैंने सोचा था कि मेरा विवाह तुम जैसी लड़की से हो जाये और देखो मेरा विवाह हो गया संजीव की बात सुनकर ऊषा गर्व के साथ मुस्कुरा उठी और बोली यह तो आपने संसार ही मांगा आपको तो मोक्ष मांगना चाहिये था संसार में तो क्षणिक सुख ही है। इस सुख से तो भगवान महावीर भी दूर हटे थे उन्होंने अपना विवाह भी नहीं कराया क्योंकि वे जानते थे कि दुनिया की मौज मस्ती सूरज के समान अवश्य ढल जाती है संजीव ने कहा ओरे तुम तो वैराग्य की बातें करने लगी चलो जल्दी चले लाडू चढ़ाकर घर दिवाली मनाना है।

ऊषा ने देखा कि माईक पर एक बड़े विद्वान भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र के बारे में बता रहे हैं वे कह रहे थे कि आज के दिन भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष की प्राप्ति पावापुर से हुई थी भगवान महावीर स्वामी ने मोक्ष पाने के लिये अहिंसा और वीतरागता का पथ अपनाया था सारे जगत् के प्राणियों के लिये अहिंसा का पथ देकर मानवता के सम्मान की बात कही थी भगवान महावीर की शिक्षाओं में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, का पंचशील पथ स्वयं भी अपनाया और दुःखों से मुक्ति का उपाय पाप शून्य साधना को बताया। ऊषा ने पंडित जी की बात को बहुत ध्यान से सुना और उसके मन में एक ही विचार चलने लगा कि भीड़ में मनोरंजन तो हो सकता है पर आत्मरंजन नहीं भीड़ सदैव पुण्य लूटने और परम्पराओं

का निर्वाह करने आती है। लेकिन यह भीड़ महावीर को तो मानती है पर महावीर की बात नहीं मानती खैर कोई बात नहीं। ऐसा कह कर ऊषा ने भी लाडू चढ़ा दिया था। और वह भी अपने परिजन के साथ वामनवास लौट गई थी।

आज वह अकेली सब परिजनों को विदा करने के बाद सोफे पर उदास बैठी न जाने कहां-कहां कि बाते सोच रही थी सारा सामान बर्तन फैले थे उसका कोई काम करने में मन नहीं लग रहा था पूरे दिन से थकावट महसूस कर रही थी अपने रोजमर्रा के करने की भी इच्छा नहीं हो रही थी जब से वह अकेली त्योंहार व्यतीत करने के बाद सोफा पर बैठी है तब से न जाने क्यों घबराहट हो रही है वह सोच रही थी कि अच्छे दिन गुजर गये अब मैं क्या करूँ एक दम खाली-खाली ही लग रहा था।

जब वह अपने आप में थकी हारी सी तनाव महसूस कर रही थी तभी उसी समय नीचे से किसी ने घंटी बजाई, घंटी की आवाज सुनकर ऊषा ने चिढ़चिढ़ाते हुये कहा लो ये एक और आफत आ गई कौन टपक पड़ा मेरी तो हिम्मत नहीं है उठने तक की और अब मुझे नीचे तक जाना पड़ेगा बड़े भारी मन से एक-एक सीढ़ी करके नीचे उतरना शुरू किया ऊषा ने जैसे ही अपने दरवाजे का स्टापर खोला और लान में देखा तो मीनाक्षी भाभी खड़ी हुई थी मीनाक्षी भाभी को देखकर के ऊषा के अन्दर उत्साह जागृत हो गया चहक कर ऊषा बोली भाभी आप, थोड़ा कॉल तो कर

देती कि आप आ रही हो मैं आपको नीचे खड़ी मिलती मुझे अच्छा नहीं लगा आप इतनी देर तक दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा करती रही मीनाक्षी ने कहा कोई बात नहीं जिस काम में प्रतीक्षा करनी पड़ती है उसका तो मजा ही अलग होता है बिना प्रतीक्षा के आकर्षण नहीं होता है घूँघट में छिपा चेहरा कर कोई देखना चाहता है और चेहरा देखने की तड़फन पैदा हो जाती है और जो चेहरा खुला होता है उसे देखने की कोई तड़फन पैदा नहीं होती है। ऊषा का चेहरा बुझा-बुझा सा क्यों है। जबसे दिवाली ने ली विदा तब से मेरा पूरा घर खाली हो गया है और हमारे साहब भी कुछ दिन के लिये जयपुर चले गये मुझे दो तीन दिन से तो मुझे ठीक से नींद ही नहीं आ रही है कुछ अच्छा सा ही नहीं लग रहा है।

ऊषा ऐसा होता है जब कोई त्योंहार आता है तो हमारे जीवन में एक नई ताजगी आती है और त्योंहार के माध्यम से मन में भारी उत्साह रहता है हमें बहुत सारे नये काम करना होते हैं पूरी दिनचर्या ही बदल जाती है हम हर रोज नये-नये काम करने लगते हैं। हम अपने रिश्तेदार मित्र संबंधियों से मिलते हैं इससे हमारे अन्दर एक नई ऊर्जा ही पैदा होती है किन्तु जब ये त्योंहार बीत जाते हैं तो हमारे जीवन में एक दम खालीपन हो जाता है और हम संदिग्ध हो जाते हैं कि अब हम क्या करें ऐसी स्थिति में कुछ लोगों को तनाव महसूस होने लगता है वे अपनी दिनचर्या में सामंजस नहीं बिठा पाते हैं और सहज भी नहीं रह पाते हैं।

मीनाक्षी की बात सुनकर ऊषा ने कहा भाभी जी लगता है आप तो एक मनोवैज्ञानिक हैं आपने जो भी बातें बताई हैं वो मेरे ऊपर पूरी की पूरी लागू हो रही हैं मीनाक्षी मुस्कुरा कर बोली ऊषा मैं मनोविज्ञान की विद्यार्थी रही हूँ। इसके साथ मैंने कई लोगों की समस्या पर अच्छे सुझाव भी दिये और परिणाम भी उनके सकारात्मक आये कई लोगों की जिन्दगी बदल गई। ऊषा ने कहा तब तो भाभी जी मुझे भी आप कुछ बताइये।

मीनाक्षी ने कहा अच्छा तो तुम मुझे बाहर से ही टरकाना चाहती हो अरे मुझे ऊपर ले चलो हम दोनों एक साथ बैठेंगे और बैठकर कुछ चर्चा करेंगे और तुम्हारी चाय भी पियेंगे। हँसते हुये ऊषा ने कहा अरे भाभी आपने ही तो मुझे समझाना शुरू कर दिया मैं आपको ऊपर क्यों नहीं ले जाऊँगी चाय भी पिलाऊँगी और साथ-साथ मैं नाश्ता भी कराऊँगी।

ऐसी क्या बात है हमें तो आपके साथ बैठने में बहुत अच्छा लगता है आप जैसे बात करने वाला है ही नहीं कोई इस मुहल्ले में।

मीनाक्षी ने कहा भैया मेरे पास तो बहुत काम है चलती हूँ फिर कभी और आऊँगी ऊषा ने मीनाक्षी का हाथ पकड़ लिया और जबरदस्ती ऊपर ले गई और सोफा पर बैठकर दोनों की बातें फिर शुरू हो गई। मीनाक्षी ने कहा देखा ऊषा जब अपने त्योंहार निकल जाते हैं तो हम अपने खाने पीने के समय में आये हुये बदलाव को पुनः दुरस्त करने में लग जायें तो हमारे थकान

और उदासी अपने आप कम होने लगती है हमें किसी भी प्रकार के तनाव को कम करने के लिये कसरत करना बहुत जरूरी होता है अपनी दिनचर्या में कम से कम 30 मिनट व्यायाम के लिये जरूर देना चाहिये इससे हम बोरियत से बच सकते हैं और एक और किया जा सकता है ऊषा कि हमने जितने भी मोबाईल से फोटो उतारी हो उन सब तस्वीरों का एल्बम भी बना सकते हैं तथा एक डायरी भी अगर हम बना लें तो त्योंहार के अविस्मरणीय क्षणों और अनुभवों को लिख सकते हैं तथा यह लिख सकते हैं कि हमने इस त्योंहार पर नया क्या सीखा तथा हम अपने त्योंहार के बाद एक योजना बना सकते हैं कि हम लोग आने वाले त्योंहार में क्या रचनात्मक कार्य करेंगे इससे त्योंहार के बाद आयी हुई उदासी अपने आप समाप्त हो जाती है और एक मन में फिर उत्साह पैदा हो जाता है और जीवन में फिर गतिशीलता आ जाती है।

भाभी आपने इतनी परफेक्ट बात की है कोई भी अगर इन बातों को अपने जीवन में उतार ले तो मेरा दावा है कि उसे उदासी तो आ नहीं सकती है आज से मैं आपके बताए हुये सभी कार्य अपनी दिनचर्या में शामिल कर लूँगी जब मीनाक्षी और ऊषा बातें करते-करते नाश्ता भी करते जा रही थी कि तभी सीढ़ियों पर जूते की खटखट की आवाज आई तभी ऊषा ने आवाज लगाई कौन, तो संजीव ने कहा मैं मीनाक्षी हँसकर बोली लो भैया आ गये अब मैं चली।

समयसार में विवेचित तत्त्व विद्या के स्रोत

✽ ब्र. सविता बहिन, पार्श्वोदय क्षेत्र ✽

समयसार का परिचय

आचार्य कुन्द कुन्द देव का परिचय

समयसार में विवेचित तत्त्व विद्या की व्यापकता

तत्त्व विद्या के स्तोत्र

तथ्य प्रदाता महान विभूतियों का स्वरूप

समयसार का परिचय- ईसा की पहली शताब्दि के पूर्व समयसार ग्रंथ की रचना हुई, प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द देव ने 439 गाथाओं के माध्यम से प्राकृत भाषा का अनूठा ग्रंथ निबद्ध किया है। इस ग्रंथ में तत्त्व विद्या का स्वरूप 11 विभागों में विभाजित किया।

1. पूर्व पीठिका, 2. जीवाधिकार, 3. अजीवाधिकार, 4. कर्ताकर्मधिकार, 5. पुण्यपापाधिकार, 6. आस्रवाधिकार, 7. संवराधिकार, 8. निर्जराधिकार, 9. बंधाधिकार, 10. मोक्षाधिकार, 11. सर्वविशुद्धाधिकार

इन तत्त्वों की विवेचना के माध्यम से वस्तु स्वतन्त्रता सिद्ध करते हुये निर्दोष आध्यात्म पथ का प्रगटीकरण समयसार के माध्यम से अनूठा बोध दिया गया है।

2. आचार्य कुन्दकुन्द देव का परिचय: आचार्य कुन्दकुन्द देव प्रथम शताब्दि के पूर्व अद्वितीय विद्वान हुये हैं जिनका जन्म आंध्रप्रदेश के अनन्तपुर जिले में स्थित कोण्डकोण्ड ग्राम में हुआ। आचार्य कुन्दकुन्द देव की प्रसिद्धि इतनी व्यापक हुई कि उनके नगर का नाम ही कोण्डकोण्ड अर्थात् कुन्दकुन्द के नाम से स्थापित हुआ। आचार्य कुन्दकुन्द देव की विलक्षण प्रतिभा एवं विलक्षण तत्त्व बोध सम्पूर्ण भारतीय दर्शन को अनेक प्रकार का अवदान प्रदत्त कर चुका है। इनका तत्त्व बोध आज भी प्रासंगिक है। तथा यह तत्त्व बोध वैज्ञानिक, क्रमबद्ध, वस्तु निष्ठ, असन्दिग्ध है। इस तत्त्व बोध के माध्यम से अनेक भव्यात्माओं के अपने जीवन को परिवर्तित किया है। तथा अनेक प्रकार के कष्टों से मुक्ति प्राप्त की है। आचार्य कुन्दकुन्द देव दिगम्बर परम्परा के अदभुत नक्षत्र हुये हैं जिन्होंने अपने अध्यात्म प्रकाश से माध्यम से सर्वलोक प्रभावित किया है।

3. समयसार से विवेचित तत्त्वविद्या की व्यापकता - समयसार ग्रंथ में अध्यात्म पक्ष की प्रधानता से तत्त्व विवेचित किया गया है। जीवादि तत्त्वों के माध्यम से सम्यक् दर्शन उत्पत्ति का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है। आत्म तत्त्व की संरचना को ज्ञान दर्शनमय बताते हुये उसका शुद्ध स्वरूप प्रगट करने का अनमोल प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत आत्मा के शुद्ध स्वरूप को स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से रहित तथा शब्द से शून्य बताते हुये आत्मा को उपयोग धर्मी सिद्ध किया गया है, एवं शुद्धात्मा के सिवाय मेरा कोई भी पर पदार्थ नहीं है यह अपरिग्रह वृत्ति की भावना को ज्ञानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ज्ञानी वह नहीं हो सकता है जिसमें पर

द्रव्य के प्रति परमाणु मात्र भी राग हो, भले ही उसमें द्वादशांग वाणी को अवधारित कर लिया हो। आत्मा को ज्ञानमय, प्रत्यख्यान स्वरूप, संवरमय सिद्ध करने के लिये आचार्य श्री ने अनेक प्रकार की गाथाओं को प्रस्तुत किया है इन गाथाओं की भाषा प्राकृत होने के साथ-साथ अर्थ भी सुबोध और ग्रंथ है।

4. तत्त्वविद्या के स्रोत- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने अपने अमूल्य ग्रंथ समयसार में जो आध्यात्मिक अनेक अदभुत तथ्य प्रस्तुत किये हैं वे जगत् की मान्यताओं से अनेक प्रकार की भिन्नता रखते हैं जिससे कि सारा जगत् अपनी असहमति करने को तैयार रहा है यहाँ तक कि जैन मत के भी लोग सहजता से आचार्य कुन्दकुन्द देव भी विलक्षण विवेचना को पचाने में तत्काल अनाकानी करते नजर आये थे अतः कुन्दकुन्द देव ने अपने ग्रंथ में यह आवश्यकता महसूस भी और यह बता दिया जाये कि मैं नहीं बोल रहा हूँ यह विवेचना महान श्रुत केवली, जिन, जिनवर, जिनेन्द्र, भगवन के समस्त जीवों के कल्याणार्थ प्रस्तुत भी है तथा सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, वीतरागी भगवान की प्रतिपादना मिथ्या नहीं होती है इसलिये कल्याणार्थी भव्य जीवों को सर्वविद परमार्थ दृष्टा जिनेन्द्र देव की वाणी को स्वीकार करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिये।

समयसार की 5वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने यह अनुभूत किया कि पंचम काल है और उस कलियुग में तत्त्व विवेचना को ग्रहण करते समय श्रोता छल ग्रहण कर सकते हैं अतः उन्होंने कहा कि मैं अपने आप को ज्ञान से उस एकत्व विभक्त का अर्थात् शुद्धात्म तत्त्व का वर्णन करूँगा यदि मैं किसी प्रकार से प्रमाण देने में चूक जाऊँ तो तुम छल ग्रहण नहीं करना। उक्त आचार्य देव के कथन से यह स्पष्ट होता है कि उन्हें यह ज्ञात था कि प्रमाण देते हुये भी साधक छल ग्रहण करके विषय भोगों में अपनी प्रवृत्ति कर सकता है। अतः उन्होंने यह बात बार-बार दोहराई है कि तत्त्वज्ञान के अमूल्य तथ्य मेरे ज्ञान की उपज नहीं है अपितु इन तथ्यों के स्रोत श्रुतकेवली को अपने इस सम्पूर्ण ग्रंथ का स्रोत स्वीकार किया तथा गाथा नं. 49,50,91, 157,434 इन गाथाओं में जिनदेव अपने ग्रंथ समयसार को स्रोत माना है। गाथा 51,64,168,169,170,210,263,271, इन गाथाओं में जिनवर को अपनी बोधि का स्रोत माना है। तथा 159,264 इन गाथाओं के आचार्य प्रवार के सर्वज्ञ देव को अपनी बुद्धिमत्ता का स्रोत माना है। एवं परमार्थ विद् जिनेन्द्र देव को गाथा 131,132,133 इन तीन गाथाओं में परमार्थ ज्ञाता जिनेन्द्र देव को अपनी अमूल्य अनुभूति का आधार प्रतिपादित किया है तथा 75,199 गाथा में आचार्य कुन्द कुन्द देव ने स्पष्ट घोषण की है कि प्रस्तुत तत्त्व विवेचना मेरी स्वयं भी उपज नहीं है अपितु यह सर्वदर्शी के द्वारा उपलब्ध सम्बोधि है।

तथ्य प्रदाता महान विभूतियों का स्वरूप: वैसे तो जिनेन्द्र भगवान के 1008 नाम जिन सहस्रनाम स्तोत्र में आचार्य जिनसेन जी ने उल्लेखित किये हैं इसी तरह आचार्य कुन्द कुन्द देव ने जिन, जिनवर, जिनवर वृषभ, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी केवली आदि नामों से वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी देव को संबोधित किया है तथा अनेक आचार्यों के इन्हें परिभाषित भी किया है उनकी परिभाषायें निम्न प्रकार हैं।

जिन- जो इन्द्रिय, कषाय, मिथ्यात्व, तथा काम, क्रोध, लोभ, मद, हर्ष, शोक को जीत लेना है उसे जिन कहते हैं।

जिनवर- जो जिनों में प्रधान श्रेष्ठ होता है उसे जिनवर कहते हैं।

जिनेन्द्र- जो जिनों में प्रधान होता है तथा जिसे सम्पूर्ण विश्व का युगपद् ज्ञान हो जाता है उसे जिनेन्द्र कहते हैं अथवा वीतराग, सर्वज्ञ, हितोपदेशी देव को जिनेन्द्र कहते हैं।

सर्वज्ञ- सभी त्रैकालिक द्रव्य, गुण, पर्याय को युगपद् जानने वाला महान आत्मा सर्वज्ञ कहलाता है।

सर्वदर्शी- लोकालोक के युगपद् दृष्टा को अथवा ज्ञाता को सर्वदर्शी कहते हैं अथवा जिसकी दिव्य दृष्टि में चराचर पदार्थ लोकालोक दर्पण के समान झलकता है उसे सर्वदर्शी कहते हैं।

परमार्थविद् - सर्वज्ञ का पर्यायवाची शब्द परमार्थ विद् है।

आचार्य कुन्द कुन्द देव की लघुता एवं प्रमाणिकता तथा मौलिकता और नवीनता ग्रंथ के स्रोत महान परमात्मा को बताने के कारण से स्पष्ट हो जाते हैं तथा इन स्रोत बताने से यह सिद्ध हो जाता है कि तथा इन स्रोत बताने से यह सिद्ध हो जाता है कि आचार्य कुन्दकुन्द देव अपने आपको महान ज्ञानी सिद्ध न करते हुये महान ज्ञानी परमात्मा को अपना क्रमशः मानते हैं।

कविता

उम्मीद- ए- किरण

* अपूर्वा अमित जैन, झांसी *

तालाब की तरह जीवन का एक अरसा गुजर गया
बस अब नदियाँ की तरह बह जाऊँ।

जब-जब गिरी, तब तब

खड़े होकर अपने मन को समझाया

मंजिल अब दूर नहीं है, इसी रास्ते से होकर जाती है

लेकिन अब गिरने का मन नहीं है मेरा,

अब मैं सिर्फ खड़ा और खड़ा रहना चाहती हूँ।

हर पल खुद से लड़ने के वजाय

खुद को तराशना चाहती हूँ।

जानती हूँ खुद को तराशना आसान नहीं,

लेकिन अब मेरे लिये ये सब मुश्किल भी तो नहीं है।

भले ही आज मैं ऐड़ी पर हूँ, पर अब मैं पर्वत की चोटी पर

फतह के झंडे फहराना चाहती हूँ।



हमारे गौरव

अमर शहीद हरिश्चन्द्र दगडोबा जैन

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हैदराबाद मुक्ति संग्राम का भी बड़ा महत्त्व है। हैदराबाद को निजाम राज से मुक्ति दिलाने के लिये भी देशप्रेमियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। इसी संग्राम के अमर शहीद हैं श्री हरिश्चन्द्र दगडोबा जैन। महाराष्ट्र के परभणी जिले के मानवत कस्बे में हरिश्चन्द्र जी सपिरवार रहते थे 1937 में हरिश्चन्द्र जी के एक भाई को रझाकारों ने छल से मार दिया था। इतने पर भी हरिश्चन्द्र हतोत्साहित नहीं हुये। वे समय-समय पर राज्याधिकारियों से लोहा लेते रहे। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के समय वे धर्माबाद (जिला-नांदेड़) जाकर बस गये थे। वहाँ उन्होंने स्वामी रामानन्द तीर्थ जैसे प्रभावशाली नेताओं के नेतृत्व में काम किया।

स्वामी जी के प्रमुख साथी श्री गोविन्द राव पानसरे के सहकारी बनकर हरिश्चन्द्र जी आंदोलन करते रहे। 1946 के अक्टूबर के निजाम सरकार ने गोविन्द राव तथा हरिश्चन्द्र जी को उनके अन्य साथियों के साथ हिरासत में ले लिया। जैसे तैसे वहाँ से छूटकर सभी जा रहे थे कि धर्माबाद से 7-8 किलोमीटर कुण्डलवाड़ी ग्राम में रझाकारों ने सबको घेर लिया। घटना स्थल पर ही श्री गोविन्द राव धराशाई हो गये। हरिश्चन्द्र जी भी मार से काफी जखमी हो गये थे। फल स्वरूप दो तीन-दिन बाद वे शहीद हो गये। हरिश्चन्द्र जी के पुत्र श्री मधुकर राव भी स्वतंत्रता सेनानी हैं।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)

फोन: 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

टीबी (ट्यूबरक्लोसिस) के लक्षण, कारण इलाज

* डॉ. अरविन्द प्रेमचन्द जैन, भोपाल *

टीबी की बीमारी को अनेक नामों से जाना जाता है। कई लोग टीबी को यक्ष्मा, कई लोग तपेदिक तो कई क्षय रोग कहते हैं। यह एक जानलेवा बीमारी है। आंकड़े बताते हैं कि हर साल भारत में करीब दो लाख बच्चे टीबी के शिकार होते हैं।

टीबी (क्षय रोग) क्या है?

टीबी का पूरा नाम ट्यूबरक्लोसिस है। यह कई लक्षणों से युक्त एक गंभीर संक्रामक बीमारी है। यह माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस नामक बैक्टीरिया से फैलती है, जो मुख्य रूप से फेफड़ों को नुकसान पहुँचाता है। यह एक धीमी गति से बढ़ते बैक्टीरिया के कारण होता है। यह बैक्टीरिया शरीर के उन भागों में बढ़ता है जिनमें खून और ऑक्सीजन होता है। इसलिये टी.बी ज्यादातर फेफड़ों में होता है। इस कारण इसे पल्मोनरी टीबी भी कहते हैं।

टीबी शरीर में अन्य भागों में भी हो सकता है। टीबी की बैक्टीरिया हवा के माध्यम से फैलाता है। संक्रमित व्यक्ति की खाँसी, छींक या उसकी लार के द्वारा बैक्टीरिया स्वस्थ व्यक्ति तक पहुँचता है। इससे दूसरे लोगों को भी टीबी हो जाती है।

टीबी रोग के प्रकार हैं: लेटेंट टीबी: इसमें बैक्टीरिया शरीर में निष्क्रिय रूप में रहता है, क्योंकि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली इसे सक्रिय नहीं होने देती। इसमें टीबी के लक्षण दिखाई नहीं देते। इस स्थिति में बीमारी एक से दूसरे में नहीं फैलती है, लेकिन भविष्य में यह सक्रिय होकर बीमारी बन सकती है।

एक्टिव टीबी: इसमें टीबी की बैक्टीरिया शरीर के अन्दर विकसित हो जाता है, तथा रोग के सभी लक्षण दिखाई देते हैं। यह संक्रमित व्यक्ति से स्वस्थ व्यक्ति में आसानी से फैल जाता है।

पल्मोनरी टीबी: यह टीबी का शुरुआती (प्राथमिक) रूप है, जो फेफड़ों को प्रभावित करता है।

एक्सट्रा पल्मोनरी टीबी: यह बीमारी फेफड़ों से अन्य जगहों पर होता है, जैसे: हड्डियाँ, गुर्दे और लिम्फनोड्स आदि स्थानों पर हो सकता है।

टीबी (क्षय रोग) के लक्षण: पल्मोनरी टीबी अक्सर बहुत ही कम उम्र वाले बच्चों में या फिर अधिक उम्र वाले वृद्ध लोगों में होता है। बच्चों और वयस्क लोगों में टीबी के ये लक्षण दिखाई देते हैं।

खाँसी का लगातार बने रहना, शुरुआत में सूखी खाँसी आना, बाद में खाँसी के साथ खून भी निकलने लगता है। यह मुख्य लक्षण है।

टीबी के कीटाणु बच्चे के फेफड़ों से शरीर के अन्य अंगों में बहुत जल्दी पहुँच जाते हैं। इसके कारण बच्चों में हल्का बुखार हमेशा बना रहता है। रात को सोते समय बच्चे को पसीना आने लगता है।

टीकी में बच्चों को खाँसी और बुखार रहने के कारण बच्चा सुस्त रहने लगता है। थोड़ा चलने और खेलने में भी वह बहुत जल्दी थक जाता है।

टीबी में बच्चे को भूख नहीं लगती। उसकी खाने में रूचि नहीं रहती। इसलिये बच्चों का वजन घटता जाता है। बच्चों की त्वचा बहुत जी नाजुक होने के कारण त्वचा का इन्फेक्शन होने की संभावना बढ़ जाती है।

आमतौर पर टीबी के रोगी में ये लक्षण दिखाई देते हैं: बिना मेहनत किये हुये थकान होना, खाँसी के साथ बलगम में खून आना, बुखार, रात में पसीना आना, सांस लेने के दौरान छाती में दर्द होना, सांस फूलना भूख ना लगना एवं भोजन के प्रति अरूचि लगातार वजन घटना, मांसपेशियों में दर्द (क्षति), पीठ में अकड़न, पेट में दर्द दस्त।

टीबी रोग के कारण ये अन्य बीमारियां भी हो सकती हैं: पीठ में दर्द और अकड़न मस्तिष्क को ढंककर रखने वाली झिल्ली में सूजन (मैनिंजाइटिस)। इसे दिमागी बुखार के नाम से भी जाना जाता है, लिवर व किडनी संबंधित समस्याएँ कभी-कभी कुछ मामलों में टीबी हृदय के आस-पास के ऊतकों को प्रभावित कर देता है। इससे ऊतकों में सूजन होने लगती है, और तरल पदार्थ का जमा होने लगता है। इस कारण हृदय के पंप करने की क्षमता पर असर पड़ने लगता है। यह एक घातक स्थिति होती है।

घरेलू उपाय: हल्दी और आक से टीबी का इलाज, तुलसी के सेवन से काली मिर्च का उपयोग कर काली मिर्च के 5 दाने, लेकर घी के साथ फ्राई करें। इसमें एक चुटकी हींग पाउडर डालकर मिलाकर रख लें। इसको तीन हिस्सों में बांटकर दिन में तीन बार लें।

लहसुन के सेवन से: लहसुन की 1-2 कली सुबह खाकर ऊपर से ताजा पानी पियें। इससे टीबी (यक्ष्मा) में बहुत लाभ होता है। बैक्टीरिया को बढ़ने से रोकता है। एक चम्मच पिसा हुआ लहसुन को एक कप दूध में मिला दें। इसमें चार कप पानी डालकर उबालें। यह यह दूध एक चोथाई रह जायें तब से पी लें।

नागबला से प्याज और हींग से सहजन से केला और नारियल पानी से लाभ एक पका केला लें। एक कप नारियल पानी, आधा कप दही और एक चम्मच शहद के साथ केला को मिलायें। इसे दिन में दो बार लें। नारंगी से फायदा

आंवला का उपयोग: आंवले की बीज से रस निकाल लें। इसमें एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट पियें। इसकी जगह आंवले का चूर्ण बनाकर भी शहद के साथ ले सकते हैं।

पुदीना का प्रयोग: पुदीना में एंटी-बैक्टीरियाल गुण होते हैं इसलिये टीबी के रोग में लाभदायक होती है। एक चम्मच पुदीने का जूस, दो चम्मच शहद, दो चम्मच सिरका और आधा कप गाजर का जूस मिलाकर रख लें। इसे दिन में तीन बार पिये।

मिश्री और घी से फायदा: 200ग्राम शहद, 200 ग्राम मिश्री, 100 ग्राम गाय का घी मिलाकर रख लें। इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में रोगी को दिन में कई बार चटायें। इसके साथ बकरी या गाय का दूध पिलायें।

एक चम्मच मिश्री और एक चम्मच देशी घी को मिलाकर सोने से पहले गर्म दूध के साथ लें।

सीताफल का प्रयोग: पीपल की बीज और अदरक एक गिलास गाय के दूध में 5-6 पीपल बीज और पिसी हुई छोटी अदरक डालकर पकायें। इस दूध को छानकर एक चम्मच शहद डालकर पियें। यह दूध टीबी (क्षय) रोग में होने वाले सभी लक्षणों को ठीक करता है।

एक गिलास गाय के दूध में 5-6 पीपल की बीज और एक छोटी अदरक डालकर हल्की आंच में पकायें। इसे छानकर एक चम्मच शहद डालकर पियें। यह खाँसी, कफ, बलगम बनना जैसे लक्षणों को ठीक करता है।

अन्य घरेलू उपाय: मुलेठी का एक छोटा टुकड़ा लेकर मुँह में रखकर चूसें। ताजा लौकी के जूस को सेंधानमक के साथ पियें। अखरोट एवं लहसुन का गूदा समान मात्रा में पीसकर गाय के घी में भूनकर खायें।

अखरोट का सेवन: यह इम्यूनिटी (रोग प्रतिरोधक) बढ़ाता है और टीबी के रोगी को बल प्रदान करता है। टीबी की बीमारी में आपका खान-पान ऐसा होना चाहिये।

भोजन में खिचड़ी का सेवन करें, दूध और पनीर का सेवन करें, ताजे फल एवं सब्जियों का सेवन करें, साबुत अनाज खायें।

ग्रीन-टी का सेवन करें। इसमें अच्छी मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसमें मौजूद पोलिफेनॉल्स बैक्टीरिया को कम करते हैं।

जीवनशैली: मेहनत काम नहीं करें। आराम करें। खांसने या छींकते समय किसी ऐसे स्थान पर चलें जायें, जहां कोई ना हो। नियमित तौर पर दवाओं का सेवन करें। डॉक्टर की सलाह का पालन करें।

परहेज करना चाहिये: टीबी में तले हुये खाद्य पदार्थ नहीं खाना चाहिये। इसके सेवन से टीबी में दस्त, पेट में ऐंठन और थकान जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।

ट्रांस फैट से युक्त पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। यह एक प्रकार खराब वसा है, जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर और शरीर में सूजन को बढ़ाते चाय और कॉफी का सेवन ना करें। इससे नींद ना आने की समस्या हो सकती है। टीबी के रोगी को ग्रीन-टी पीनी चाहिये।

मैथुन, धूम्रपान और शराब का बिल्कुल भी सेवन नहीं करना चाहिये।

टीबी की बीमारी के फैलने के ये कारण होते हैं : छीकना, खांसना, बोलना, गाना।

यदि बच्चों या वयस्कों में दो हफ्ते से ज्यादा खाँसी, कफ, बलगम बनने की समस्या हो, और घरेलू उपचार करने से भी लक्षण ठीन ना हो रहे हों तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिये।

सरकारी हॉस्पिटल में निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध है, कार्ड बनकर नियमित जरूर कराये और इसमें अधिक समय तक इलाज चलता है।

आवश्यकता अवसाद के विरुद्ध जोरदार शंखनाद

✱ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ✱

अवसाद एक ऐसी गंभीर बीमारी है जिसका उपचार दवाओं की अपेक्षा मनोचिकित्सक से संभव है। हमें अगर शुरु उच्च रक्त चाप या पथरी की बीमारी हो जाती है तो इन गंभीर बीमारियों का इलाज दवाओं अथवा शल्य क्रिया से संभव है। अवसाद को अंग्रेजी में डिप्रेशन नाम से जाना जाता है। अवसाद का प्रकोप पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को अधिक होता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार दस में से पांच महिलायें अवसाद ग्रस्त हो सकती हैं। जबकि दस पुरुषों में एक ही पीड़ित होता है। महिलाओं के अवसाद ग्रस्त होने के पीछे मुख्य रूप से स्त्री जन्य कारण बताये जाते हैं।

वर्तमान में हम देख रहे हैं पुरुषों एवं महिलाओं की अपेक्षा किशोर व युवा ज्यादातर अवसाद ग्रस्त हो रहे हैं। अवसाद किस कारण से होता है यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया जा सकता। मगर माना जाता है इसमें अनेक कारणों की मुख्य भूमिका रहती है। हमें उन कारणों को भी जानने का प्रयास किया है। नींद नहीं आती है या ज्यादा आती है, अकेलापन, बेरोजगारी, वित्तीय समस्या, वैवाहिक अन्य रिश्तों में खटास, शराब या अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन करना, कार्य का अधिक बोझ, भोजन की अनियमितता। अवसाद से पीड़ित व्यक्ति किसी भी काम में अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता है जो काम वह आसानी से कर लेता था उस काम को करने में उसे अब कठिनाई है। मोबाईल का रात दिन उपयोग करना भी इसका प्रमुख कारण है। आधुनिक संचार साधन हमारे लिये जितने उपयोगी है उससे अधिक इनका दुरुपयोग आज की युवा पीढ़ी कर रही है। अचानक लोगों से गुडवाय करने लोगों को फोन करना भी व्यक्ति के असामान्य लक्षण माने जाते हैं। पढ़ाई का अधिक बोझ भी इसका कारण है। आप अपने को निराशा और उदास महसूस कर रहे हैं या तो आपको भूख नहीं लग रही है या आप ज्यादा भोजन कर रहे हैं। आपको ऐसा लगता है आप जीवन से निराश हैं और आत्महत्या का मन बना रहे हैं। बहुत ज्यादा अवसाद की वजह से व्यक्ति आत्महत्या करने तक की सोचता है। अवसाद के दौरान व्यक्ति खुद को बिल्कुल असहाय महसूस कर सकता है। उसे समस्याओं का हल जीवन समाप्त करने में दिखने लगता है। कोई आत्महत्या करने की बात करता है तो आप मान लें वह डिप्रेशन या अवसाद से ग्रसित है।

वर्तमान में पुरुषों, महिलाओं से ज्यादा किशोर जिनकी आयु 12 से 18 वर्ष के बीच होती है ऐसे किशोर अवसाद ग्रस्त ज्यादा मिल रहे हैं। किशोरावस्था में अत्यधिक चिड़चिड़ापन अवसाद का सबसे बड़ा लक्षण होता है। इस आयु में इस बीमारी से ग्रसित युवक आसानी से क्रोधित हो सकता है। दूसरों से अशोभनीय व्यवहार कर सकता है। बच्चों पर माता

पिता द्वारा पढ़ाई के लिये डाला गया अत्यधिक दबाव और दूसरों से स्वयं का आंकलन कम करने से भी किशोरों में डिप्रेशन का प्रमुख कारण हो सकता है।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध नगर कोटा को देश के प्रमुख शिक्षण नगर के रूप में आज जाना जाता है। यहाँ इतने बड़े कोचिंग संस्थान संचालित हैं जिनमें एक लाख तक छात्र छात्राओं को प्रवेश देकर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का विभिन्न विषयों का कोचिंग दिया जाता है। विगत वर्षों कोटा में कोचिंग कर रहे छात्र छात्राओं द्वारा आत्महत्या करने से अनायास ही हमारा ध्यान इस ओर उत्कृष्ट हुआ है। लगातार एक ही नगर में छात्र छात्राओं द्वारा पढ़ाई करते हुये निराश होकर आत्महत्या करने की घटनाओं से पूरे देश ही स्तब्ध हो गया था।

जीवन से निराश होकर अवसाद की स्थिति में पहुँचे छात्र छात्राओं किशोर अवस्था में थे उन्होंने आत्महत्या करने का निर्णय ले लिया।

चार वर्ष पूर्व 2 मार्च 17 जैनचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रिय शिष्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज ने इंदरगढ़ जिला बूंदी राजस्थान में जिनवाणी चैनल पर प्रसारित होने वाले जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में मेरे प्रश्न अवसाद की स्थिति में छात्र छात्राओं द्वारा आत्महत्या किये जाने को कैसे रोके। कहा माता पिता का शिक्षा के लिये दबाव, सहशिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण भौतिक चकाचौध आदि अनेक कारणों के युवक युवती जीवन से निराश होकर अवसाद की स्थिति में पहुँच कर आत्महत्या कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की ओर युवा पीढ़ी को आकर्षित कर अवसाद या आत्महत्या करने से रोका जा सकता है छात्र छात्राओं द्वारा जीवन से निराश होकर अवसाद ग्रस्त होने की घटनायें रोकने, उनमें जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से मेरे गृह नगर राघौगढ़ में गत तीन वर्ष पूर्व शासकीय स्नातक महाविद्यालय में मन चंगा तो कठौती में गंगा अवसाद के विरुद्ध शंखनाद विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान माला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। व्याख्यानमाला में वक्ताओं में कहा नकारात्मक सोच बदलना होगी। जिनका सोच अगर नकारात्मक है तो हम उनसे दूरी बनायें। इस बात को भी समझें कि जीवन में जब तक असफलता नहीं होगी, तब तक सफलता का मूल्य भी नहीं समझ आयेगा। इसलिये असफलता से हर चीज का अंत नहीं समझना चाहिये। यदि आप किसी व्यक्ति को जानते हैं जो कि अवसाद या डिप्रेशन की वजह से कोई गलत कदम या आत्महत्या करने का मन बना रहा है अथवा सोच रहा है तो तत्काल उसके सगे संबंधियों को सूचित करें। परिवार की ओर से मिली थोड़ी सहानुभूति किसी का जीवन बचा सकती है। कार्यक्रम में छात्र छात्राओं को कभी भी जीवन में आत्महत्या नहीं करने की शपथ दिलायी।

अवसाद की स्थिति से हर किसी को बचाने के लिये समाज के हर व्यक्ति को अवश्य ही रचनात्मक प्रयास आवश्यक है।

मोटापा में जीवन शैली से बचाव संभव है

संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन
गौरीनगर-9977051810

शरीर में अनावश्यक रूप से वसा (फैट) का संचय होने से अधिक वजन को मोटापा के रूप में परिभाषित किया जाता है। मोटापा यानी ओबेसिटी हर रूप में खतरनाक है पिछले कई वर्षों से यह समस्या तेजी से बढ़ रही है जिससे बच्चों से लेकर युवावर्ग प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में बढ़ते वजन को जीवन शैली का हिस्सा न समझे, समय रहते वजन कम करने का प्रयास करना अति आवश्यक होता है। आमतौर पर यह समस्या तब होती है जब दैनिक क्रियाओं में खर्च होने वाली कैलोरी से अधिक कैलोरी लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों की औसत आयु भी सामान्य से कम होती है। पुरुषों की अपेक्षा महिलायें अधिक प्रभावित होती हैं जिसका कारण हार्मोनल बदलाव होता है।

मोटापा कुपोषण का भी एक कारण है जिससे पेट, लिवर, मसल्स या किडनी में वसा जमा होने से शरीर की सामान्य कार्य प्रणाली बिगड़ने लगती है। कूल्हे, त्वचा पर बाहरी तौर पर चर्बी बढ़ने से शरीर कमजोर होने लगता है। भोजन करने के बाद शरीर में फ्लूइड बढ़ जाता है, भोजन करके आराम करने से कैलोरी नष्ट नहीं होती है तथा शरीर में वसा बढ़ जाता है।

मोटापा की श्रेणी नापने के लिये बी.एम.आई (शरीर में वसा नापने का तरीका) जिसमें व्यक्ति का वजन किलों में ऊँचाई × ऊँचाई मीटर में नापकर भाग देने से ज्ञात हो जाता है। यदि शरीर कि किसी व्यक्ति की बी.एम.आई 18.5 से 24.9 के बीच है तो पूरी तरह ठीक है, यदि 25 से ऊपर है तो सामान्य व 30 से ऊपर होने पर मोटापे की श्रेणी में आते हैं।

मोटापा 6 प्रकार का होता है 1. **डायबेसिटी**- यह डायबिटीज और मोटापे से मिलकर बनता है, मोटे लोगों में डायबिटीज का खतरा कई गुना अधिक होता है किन्तु उन्हें पता नहीं रहता कि उन्हें टाइप 2 डायबिटीज है। 2. **ग्लैडूर**- बचपन में ग्रंथियों की विकृति से शरीर में वसा जमा होने लगती है जिससे पेट, जांघ, हाथ, कमर मोटे होने से साथ ही पूरे शरीर में मोटापा दिखने लगता है। 3. **फ्रॉलिच**- बचपन में किसी हार्मोन से जुड़ी बीमारी विशेषकर हाइपोथैलेमसग्रंथि में खराबी, ट्यूमर होने के कारण मोटापा सीना, पेट व कमर वाले हिस्से में बढ़ता है। 4. **कुशिंग सिंड्रोम**- यह मुख्य रूप से एड्रिनल ग्रंथि में सूजन आने के कारण कई बार इसमें गांठें बन जाने से स्टेराइड हार्मोन अधिक मात्रा में निकलने से होता है जिसका पता बहुत समय तक नहीं चलता है। 5. **मोरबिड**- यह जब बी.एम.आई. 40 से अधिक हो जाता है जिससे कई गम्भीर रोग होने लगते हैं व समय पर ध्यान न देने से जान का खतरा हो जाता है। 6. **हाइपोथैलेमिक**- हाइपोथैलेमस ग्रंथि भूख व नींद को नियंत्रित

करती है। किन्तु ट्यूमर बनने व चोट से प्रभावित होने पर व्यक्ति को सोकर उठने पर तेज भूख लगती है, भोजन न मिलने पर गुस्सा आता है एवं अधिक भोजन करने से मोटापा बढ़ जाता है।

मोटापा से कई रोग होने लगते हैं जैसे डायबिटीज, हृदय रोग, उच्च रक्त चाप उच्च एल.डी.एल, कम एच.डी.एल, केरोनरी आर्टरी, कोलेस्ट्रॉल, स्ट्रोक, तनाव पित्ताशय के रोग, किडनी के रोग, स्लीप एपनिया, सांस फूलना, गठिया रोग कैंसर आदि की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। मोटापे से जुड़े कई सर्वे में यह पाया गया है कि जो बच्चे बचपन में मोटे होते हैं, उनमें बड़े होने पर वजन तेजी से बढ़ने की संभावना रहती है। शादी होने के बाद संबंध बनाने में असंतुष्टी से कभी कभी परिवार में विखराव हो जाते हैं।

बढ़ते हुये वजन को समय रहते अपने शारीरिक संरचना, कार्य क्षमता अनुसार आवश्यक कैलोरी की आवश्यकता डाइटेशियन से ज्ञात करके वजन नियंत्रित करना चाहिये जिसमें निम्न बातों का समावेश रखें।

1. उच्च प्रोटीन भोजन- दूध, बींस, अंकुरित अनाज नट्स आदि जो वसा कम निर्माण करते हैं। 2. सीमित मात्रा में चीनी नमक व तेल का उपयोग करना, भोजन करने के बाद भारी चीजों का सेवन नहीं करें। भोजन में ऊपर से चीनी व नमक उपयोग करने से किडनी पर दबाव पड़ता है। मौसमी ताजे फलों का सेवन करना व ज्यूस की जगह फल खाएँ जिनमें फाइबर होता है।

प्रासेस्ड और पेकेज्ड फूल् को अपने आहार का हिस्सा न बनायें। बच्चों को अत्याधिक चाकलेट कैंडी, केक, कन्फेक्शनरी मिठाईया आदि सीमित मात्रा में देना चाहिये। रिफाईंड चीनी की जगह प्राकृतिक चीनी का उपयोग करें।

प्रतिदिन 30-45 मिनट की मध्यम तीव्रता वाली शारीरिक गतिविधियाँ कसरत, योग, तैराकी, सीढ़ी चढ़ना, किचिन गार्डन, बागवानी करना चाहिये। प्रतिदिन कुछ काम करें जिससे गहरी सांस लेना पड़े। जो बच्चे बचपन से मोटे होते हैं ऐसे बच्चों को स्वीमिंग, फुटबॉल व अन्य शारीरिक गतिविधियों के खेलों में भाग लेने के लिये प्रेरित करना चाहिये।

मोटापे से छुटकारा पाने की गतिविधियों के साथ हमें अपने 14 अंगों के विकास उपयुक्त श्रृंगार जीवन में सादगी, उत्तम चरित्र, बोलने की मृदुता शैली, किसी विशिष्ट गुणों से युक्त विषय में विशेष योग्यता से शरीर में प्राप्त दोष को छुपाया जा सकता है।

सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज संभव है किन्तु होम्योपैथी में शारीरिक रचना व दोष के आधार पर चिकित्सा की जाती है जिसमें फाइटोलेक्का बेरी, कैलकोरियाकार्ब, फ्रकस वर्सी कुलोसस, ऐन्टिमफूड, थाइरॉडीनिम, गेफाइटस आदि उपचार पूर्व अनुभवी चिकित्सक की देखरेख में इलाज समय पर करना चाहिये।



हास्य तरंग

1. पति-पत्नी में झगड़ा हो गया पत्नी कुछ ज्यादा बोल गई। पति- मैं कहता हूँ कि अपने शब्द वापिस ले लो। पत्नी मैं नहीं लूंगी। पति (गुस्से से) आखरी बार कहता हूँ अगर तुमने अपने शब्द 15 मिनट में वापिस नहीं लिये तो ? पत्नी-अगर मैंने 15 मिनट में शब्द वापिस नहीं लिये ? पति-तो तुम्हें कितना समय चाहिये।
2. जापानी व्यक्ति इन्दौर आया और एयरपोर्ट से ऑटो लिया तथा एक कार पास से गुजरी, जापानी बोला-टोयेटाम्बेरी फास्ट, मेड इन जापान। ऑटो चालक होटल पर छोड़ते हुये किराया एक हजार रूपया मांगता है। जापानी बहुत ज्यादा चालक मीटर मेरी फास्ट इन इंडिया।
3. शिक्षक (छात्र से) पिता जी का नाम बताओ छात्र श्रीमति राम, शिक्षक तुम्हें इतना ज्ञान नहीं है कि बड़ों के आगे श्री लगाते हैं। छात्र मुझे मालूम हैं, मेरे पिता का नाम मतिराम है।
4. डॉक्टर साहब आपके बेहतरीन इलाज से मेरा बड़ा भला हुआ है। डॉक्टर- पर मुझे तो नहीं मालूम की मैंने कब आपका इलाज किया है मेरा नहीं, डॉक्टर साहब आपके इलाज से मेरे ससुर परलोक सिधार गये और मेरी पत्नी सारी जायजाद की अकेली बारिस बन गई।
5. एक व्यक्ति डॉक्टर के पास जाकर कहता है कि मुझे सर्दी खाँसी है डॉक्टर चेक करने के बाद कहता है कि आपकी तो ब्लड प्रेसर बढ़ा हुआ है। व्यक्ति डॉक्टर साहब आपकी देखने की फीस पांच सौ की प्लेट देखकर ही बढ़ गया है।

संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* बगुला भगत

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल के बीच में एक रुमाल रखा होगा। शिक्षक जिस खिलाड़ी का नाम या अंक बोलेगा वह एक पैर पर कूदता हुआ आयेगा तथा हाथ पीछे बाँधकर मुँह से रुमाल उठायेगा।

* जहर की पुड़िया

खिलाड़ियों की संख्या- 5-30

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- सब मंडल में खड़े हो जाते हैं। एक पत्थर उनके हाथ में होता है। शिक्षक मोबाइल में भजन या घंटी बजाते हैं। जब तक घंटी बजती है। तब तक खिलाड़ी कम से कम क्रम एक-दूसरे को पत्थर देते जाते हैं। घंटी या गति रुकने पर जिसके हाथ में पत्थर होता है। वह बैठ जाता है। अंत में एक बच्चा आखिरी बचता है।

जीत-हार के नियम - प्रथम, द्वितीय, तृतीय निकलते हैं।

सावधानी- पत्थर जिसके सामने गिरेगा, उसको भी आउट किया जायेगा

* जय जिनेन्द्र

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल/वृत्त/ गोले का खेल

खेल विधि- गोले से बाहर दो खिलाड़ी ही निकाले जाते हैं जो एक दूसरे से विपरीत दिशा में दौड़ते हैं। आपस में मिलने पर हाथ जोड़कर जय-जिनेन्द्र कहते हैं। इसके बाद उन्हें अपने स्थान खड़े होना होता है।

जीत-हार के नियम- जो खिलाड़ी अपने स्थान पर पहुंचता वह जीता हुआ माना जाता है।

बाल कहानी

मुँह दिखायें या माक्स लगाएं जरूरी कौन



मंगलवार का दिन था 6 अप्रैल को नगर के युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कोरोना का विकाराल रूप से अपने गांव को बचाने के लिये दो गज की दूरी माक्स जरूरी अभियान चला रखा था वे सभी रोको-टोको की तर्ज पर जागरण यात्रा निकाल रहे थे उसमें सबसे ज्यादा सक्रिय रवि सोधिया नेतृत्व कर रहे थे जरूआखेड़ा के दुकानदार भाईयों से वे कहते चले जा रहे थे कि माक्स लगाओ नीचे मत रखो। दाडी पर रखने का नहीं है और न ही गले में फंसा कर रखने का अच्छी तरह से मुँह और नाक दोनों में फंसाकर रखने का अच्छी तरह से मुँह और नाक दोनों माक्स से ढको रवि सोधिया की

बात सुनकर सभी लोग अपने-अपने माक्स से नाक और मुँह ढक रहे थे।

जब रवि सोधिया रोको-टोको की बात को आगे बढ़ाते हुये सुशील जैन के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि सुशील जैन का माक्स टेबिल पर रखा है और वे अपनी दुकान चला रहे। रवि सोधिया ने सुशील से कहा भैया जय जिनेन्द्र माक्स लगा लो। तो सुशील ने हंस कर कहा रवि भैया मैं माक्स तो लगा लू पर मैंने वर्षों की मेहनत से इन मूछों को इतना बड़ा कर पाया है और ये मूछे ही मेरी पहचानते हैं और यदि मैं माक्स लगा लूंगा तो मेरी पहचान ही ढक जायेगी। तो रवि सोधिया को हँसी आ गई और उन्हें बस स्टैण्ड की एक घटना भी याद आ गई, जब उन्होंने एक बहन से माक्स लगाने को कहा तो वह युवती कह बैठी मैंने इतना मंहगा लिपिस्टिक लगा रखा है वह फिर किसको दिखेगा। मूछ और लिपिस्टिक दिखाने के चक्कर में यदि कोरोना संक्रमित हो गये तो इन्हें कौन बचायेगा।

सुशील से रवि ने एक बार फिर हाथ जोड़कर माक्स लगाने का आग्रह किया पर सुशील ने इसे टाल दिया। आठ दिन बाद रवि के मेडीकल स्टोर पर खबर आई कि सुशील पॉजीटिव हो गया। तब रवि ने सोचा कि बीमारी से बचना जरूरी था या मूछ दिखाना।

अंधेरी दुनिया का बिंदुओं से कम्प्यूटर तक का सफर

✱ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✱

लुई ब्रेल ने ब्रेल लिपि का आविष्कार किया था उनका जन्म 4 जनवरी 1809 को हुआ था 4 जुलाई को उनकी याद में विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है।

लुई ब्रेल ने एक दुर्घटना में अपनी दृष्टि खो दी थी, उन्होंने महज 15 साल की उम्र में इस लिपि का आविष्कार किया था।

दुनिया में नेत्रहीन दृष्टिहीन या आंशित रूप से नेत्रहीन लोगों की जिंदगी आसान करने और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने में ब्रेल लिपि का बड़ा हाथ है।

ब्रेल कोई भाषा नहीं है, ये एक कोड़ है, ब्रेल लिपी में उभरे हुये बिंदुओं से कोड बनाया जाता है इनमें 6 बिंदुओं की तीन पंक्तियाँ होती हैं, जिनमें कोड़ निहित होते हैं।

लुई ब्रेल को ब्रेल लिपि का आइडिया नेपोलियन की सेना के एक कैप्टन चार्ल्स बार्बियर से आया था बार्बियर लुई के स्कूल आये हुये थे, उस दौरान उन्होंने ने बच्चों के साथ नाइट राइटिंग की विध शेर की, जिसमें सैनिक दुश्मनों की पकड़ में न आने के लिये उभरे हुये बिंदुओं में छिपे संदेश का इस्तेमाल करते थे।

अब ब्रेल लिपि कागजों से प्रगति कर कम्प्यूटर तक पहुंच गई है। दृष्टिहीन लोगों के इस्तेमाल के लिये इलेक्ट्रो-मैकेनिकल डिवाइस बनाई गई है, इसे रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले या ब्रेल टर्मिनल कहते हैं।

इस कम्प्यूटर में गोल-नुकीलें बिंदु उभरे होते हैं, जिनकी मदद से व्यक्ति इसे इस्तेमाल कर पाता है।

लुई ब्रेल (4 जनवरी 1809-6 जनवरी 1852) फ्रांस के शिक्षाविद तथा अन्वेषक थे जिन्होंने अंधों के लिये लिखने तथा पढ़ने की प्रणाली विकसित की। यह पद्धति ब्रेल नाम से जगप्रसिद्ध है। फ्रांस में जन्मे लुई ब्रेल अंधों के लिये ज्ञान के चक्षु बन गये। ब्रेल लिपि के निर्माण से नेत्रहीनों की पढ़ने की कठिनाई को मिटाने वाले लुई स्वयं भी नेत्रहीन थे।

लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी 1809 में फ्रांस के छोटे से ग्राम कुप्रे में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता साइमन रेले ब्रेल शाही घोड़ों के लिये काठी और जीन बनाने का कार्य किया करते थे। पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं होने के कारण साइमन का अतिरिक्त मेहनत करनी होती थी इसीलिये जब बालक लुइस मात्र तीन वर्ष के हुये तो उनके पिता ने उसे भी अपने साथ घोड़ों के लिये काठी ओर जीन बनाने के कार्य में लगा लिया। अपने स्वभाव के अनुरूप तीन वर्षीय बालक अपने आस पास उपलब्ध वस्तुओं से खेलने में अपना समय बिताया करता था इसलिये बालक लुइस के खेलने की वस्तुयें वही थी जो उसके पिता द्वारा अपने कार्य में उपयोग की जाती थीं जैसे कठोर लकड़ी, रस्सी, लोहे के टुकड़े, घोड़े की नाल, चाकू और काम आने वाले लोहे के औजार। किसी तीन वर्षीय बालक का अपने नजदीक उपलब्ध वस्तुओं के साथ खेलना और शरारतों में लिप्त रहना नितांत स्वाभाविक भी था। एक दिन काठी के लिये लकड़ी को काटते में इस्तेमाल किया जाने वाली चाकू अचानक उछल

कर इस नन्हें बालक की आंख में जा लगा और बालक की आँख से खून की धार वह निकली। रोता हुआ बालक अपनी आंख को हाथ से दबाकर सीधे घर आया और घर में साधारण जड़ी लगाकर उसकी आँख पर पट्टी कर दी गयी। शायद यह माना गया होगा कि छोटा बालक है सो शीघ्र ही चोट स्वतः ठीक हो जायेगी। बालक लुइस की आंख के ठीक होने की प्रतीक्षा की जाने लगी। कुछ दिन बाद बालक लुइस ने अपनी दूसरी आंख से भी कम दिखलायी देने की शिकायत की परन्तु यह उसके पिता साइमन की साधन हीनता रही होगी अथवा लापरवाही जिसके चलते बालक की आँख का समुचित इलाज नहीं कराया जा सका और धीरे धीरे वह नन्हें बालक आठ वर्ष का पूरा होने तक पूरी तरह दृष्टिहीन हो गया। रंग बिरंगे संसार के स्थान पर उस बालक के लिये सब कुछ गहन अंधकार में डूब गया। अपने पिता के चमड़े के उद्योग में उत्सुकता रखने वाले लुई ने अपनी आँखें एक दुर्घटना में गवां दी। यह दुर्घटना लुई के पिता की कार्यशाला में घटी। जहाँ तीन वर्ष की उम्र में एक लोहे का सूजा लुई की आँख में घुस गया।

यह बालक कोई साधारण बालक नहीं था। उसके मन में संसार में लड़ने की प्रबल इच्छा शक्ति थी। उसने हार नहीं मानी और फ्रांस के मशहूर पादरी वैलेन्टाइन की शरण में जा पहुंचा। पादरी वैलेन्टाइन के प्रयासों के चलते 1819 में इस दस वर्षीय बालक को रायल इस्टीट्यूट फार ब्लाइन्ड्स में दाखिला मिल गया। यह वर्ष 1821 था बालक लुइस अब तक बारह वर्ष का हो चुका था। इसी दौरान विद्यालय में बालक लुइस का पता चला कि शाही सेना के सेवानिवृत्त कैप्टन चार्ल्स बार्बन ने सेना के लिये कूटलिपि का विकास किया है जिसकी सहायता से वे टोलकर अंधेरे में भी संदेशों के पढ़ सकते थे। कैप्टन चार्ल्स बार्बन का उद्देश्य युद्ध के दौरान सैनिकों को आने वाली परेशानियों को कम करना था। बालक लुइस का मस्तिष्क सैनिकों के द्वारा टोलकर पढ़ी जा सकने वाली कूटलिपि में दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिये पढ़ने से मुलाकात करना चाहता है। पादरी ने लुइस की कैप्टन से मुलाकात की व्यवस्था करायी। अपनी मुलाकात के दौरान बालक ने कैप्टन के द्वारा सुझायी गयी कूटलिपि में कुछ संशोधन प्रस्तावित किये। कैप्टन चार्ल्स बार्बर उस अंधे बालक का आत्मविश्वास देखकर दंग रह गये। अतः पादरी वैलेन्टाइन के इस शिष्य के द्वारा बताये गये संशोधनों को उन्होंने स्वीकार किया।

कालान्तर में स्वयं लुइस ब्रेल ने आठ वर्षों के अथक परिश्रम से इस लिपि में अनेक संशोधनों किये और अंतः 1829 में छह बिन्दुओं पर आधारित ऐसी लिपि बनाने में सफल हुये। लुइस ब्रेल के आत्मविश्वास की अभी और परीक्षा होना बाकी था। इसलिये उनके द्वारा आविष्कृत लिपि को तत्कालीन शिक्षा शास्त्रियों द्वारा मान्यता नहीं दी गयी और उसका माखौल उड़ाया गया। सेना के सेवानिवृत्त कैप्टन चार्ल्स बार्बर के नाम का साया लगातार इस लिपि पर मंडराता रहा और सेना के द्वारा उपयोग में लाये जाने के कारण इस लिपि को सेना की कूटलिपि ही समझा गया परन्तु लुइस ब्रेल ने हार नहीं मानी और पादरी वैलेन्टाइन के संवेदनात्मक आर्थिक एवं मानसिक सहयोग से इस शिष्य ने अपनी आविष्कृत लिपि को दृष्टिहीन व्यक्तियों के मध्य लगातार प्रचारित किया। उन्होंने सरकार से प्रार्थना की कि इसे दृष्टिहीनों की भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की जाये। यह लुइस का दुर्भाग्य रहा कि उनके प्रयासों को सफलता नहीं मिल सकी और तत्कालीन शिक्षा शास्त्रियों द्वारा इसे भाषा के रूप में मान्यता दिये जाने योग्य नहीं समझा गया। अपने प्रयासों को

सामाजिक एवं संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिये संघर्षरत लुइस 43 वर्ष की अवस्था में अंततः 1852 में जीवन की लड़ाई से हार गये परन्तु उनका हौसला उनकी मृत्यु के बाद भी नहीं।

उनका देहान्त 6 जनवरी 1852 को हुआ। लुइस ब्रेल द्वारा अविष्कृत छह बिन्दुओं पर लिपि उनकी मृत्यु के उपरान्त दृष्टिहीनों के मध्य लगातार लोकप्रिय होती गयी। लुइस की मृत्यु की घटना के बाद शिक्षा शास्त्रियों द्वारा उनके लिये किये गये कार्य की गम्भीरता को समझा जाने लगा और दृष्टिहीनों के मध्य लगातार मान्यता पाती जा रही लिपि के प्रति अपने पूर्वाग्रहपूर्ण दकियानूसी विचारों से बाहर निकलते हुये इसे मान्यता प्रदान करने की दिशा में विचारित किया गया। अंततः लुइस की मृत्यु के पूरे एक सौ वर्षों के बाद फ्रांस में 20 जून 1952 का दिन उनके सम्मान का दिवस निर्धारित किया गया। इस दिन उनके ग्राम कुप्रे में सौ वर्ष दफनाये गये उनके पार्थिव शरीर के अवशेष पूरे राजकीय सम्मान के साथ बाहर निकाले गये। उस दिन जैसे लुइस ग्राम कुप्रे में उनका पुर्नजन्म हुआ। स्थानीय प्रशासन तथा सेना के आला अधिकारी जिनके पूर्वजों ने लुइस के जीवन काल उनका लगातार उपेक्षित किया दृष्टिहीनों के लिये उनकी लिपि को गम्भीरता से न लेकर उसका माखौल उड़ाया अपने पूर्वजों के द्वारा की गयी गलती की माफी मांगने के लिये उनकी समाधि के चारों ओर इकट्ठा हुये। लुइस के शरीर के अवशेष ससम्मान निकाले गये। सेना के द्वारा बजायी गयी शोक धुन के बीच राष्ट्रीय ध्वज में उन्हें पुनः लपेटा गया और अपनी ऐतिहासिक भूल के लिये उत्खनित नश्वर शरीर के अंश के सामने समूचे राष्ट्र ने उनसे माफी मांगी। राष्ट्रीय धुन बजायी गयी और इस सबके उपरान्त धर्माधिकारियों के द्वारा दिये गये निर्देशन के अनुरूप लुइस से ससम्मान चिर निद्रा में लीन होने प्रार्थना की गयी और इसके लिये बनाये गये स्थान में उन्हें राष्ट्रीय सम्मान के साथ पुनः दफनाया गया। सम्पूर्ण वातावरण ऐसा अनुभव दे रहा था जैसे पुनः जीवित हो उठे है।

इस प्रकार एक राष्ट्र के द्वारा अपनी ऐतिहासिक भूल का प्रायश्चित्त किया गया परन्तु लुइस द्वारा किये गये कार्य अकेले किसी राष्ट्र के लिये न होकर सम्पूर्ण विश्व की दृष्टिहीन मानव जाति के लिये उपयोगी थे अतः सिर्फ एक राष्ट्र के द्वारा सम्मान प्रदान किये जाने भर से उस मनीषी को सच्ची श्रद्धांजलि नहीं हो सकती थी। विगत वर्ष 2009 में 4 जनवरी को जब लुइस ब्रेल के जन्म को पूरे दो सौ वर्षों का समय पूरा हुआ तो लुई ब्रेल जन्म द्विशती के अवसर पर हमारे देश ने उन्हें पुनः पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जब इस अवसर पर उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया।

यह शायद पहला अवसर नहीं है जब मानव जाति ने किसी मान आविष्कारक के कार्य को उसके जीवन काल में उपेक्षित किया और जब वह महान आविष्कारक नहीं हरे तो उनके कार्य का सही मूल्यांकन तथा उन्हें अपेक्षित सम्मान प्रदान करते हुये अपनी भूल का सुधार किया। ऐसी परिस्थितियाँ सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अक्सर आती रहती हैं जब किसी महान आत्मा के कार्य को समय रहते ईमानदारी से मूल्यांकित नहीं किया जाता तथा उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके द्वारा किये गये कार्य का वास्तविक मूल्यांकन हो पाता है। ऐसी भूलों के लिये कदाचित् परिस्थितियों को निरपेक्ष रूप से न देख पाने की हमारी अयोग्यता ही हो सकती है।

ऐसे अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी जिन्होंने अंधेरी दुनिया में सफर करने वालों को एक नयी ज्योति प्रदान की।

संस्कार गीत

मैं आत्मा तू परमात्मा



तू परमात्मा तू है शुद्ध रूप तू परमात्म भूप
तू रहे स्व में लीन मैं रहूँ तुझ में लीन

1.

तेरे सब करम कटे चेतन के दोष हटे
तू है शुद्ध रूप मैं अशुद्ध रूप

2.

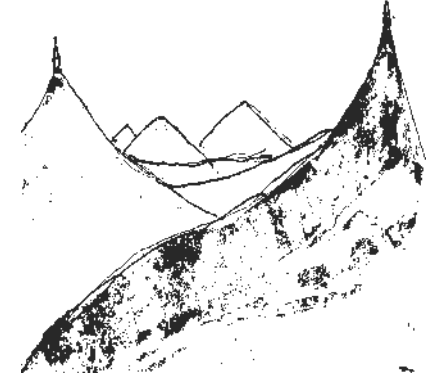
तेरे में झलके जगत् मैं तो भटका हूँ जगत्
तू सर्वज्ञ रूप, मैं अज्ञान रूप

3.

तेरे में सुख अबाध, मेरे में दुःख का साथ
तेरे में शुद्ध ज्ञान में तो मेरा अज्ञान

बाल कविता

सम्मेद शिखर है तारनहारा



जग में सुन्दर तीर्थ प्यारा
सिद्ध भूमि है तीर्थ हमारा
बीस तीर्थकर मुक्तिधाम
श्रद्धा से सब करें प्रणाम
चढ़े चढ़ाई पर्वतराज
जीवन का है पहला काज
मधुवन हरा भरा मनहर है
कहाँ जगह इससे सुन्दर है
ऊँची टोंक है पारसनाथ
यात्री चढ़ते मिलकर साथ
रिमझिम रिमझिम गिरे फुहार
मिला प्रकृति का यह उपहार
सम्मेद शिखर है तारनहारा
सिद्धक्षेत्र यह जग से न्यारा

समाचार

समाधिमरण

उदगांव (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री सूर्यसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री सुगुणमति माताजी का समाधिमरण 18 दिसम्बर 2021 को सांय 5.37 मिनट पर हुआ।

दीक्षाये

बांसवाड़ा-आचार्य श्री सुंदरसागर महाराज जी के करकमलो से 10 दिसम्बर 2021 को ब्र. नीता दीदी, ब्र. पूजा दीदी, ब्र. सुरभि दीदी, ब्र. लक्ष्मी दीदी, ब्र. रश्मि दीदी, ब्र. विश्वलता दीदी को दीक्षाये दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री सुकाव्यमति माताजी, आर्यिका श्री सुलक्ष्यमति माताजी, आर्यिका सुरम्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुतथ्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुनम्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुपथ्यमति माताजी रखा गया।

ईडर- गणिनी आर्यिका शुभमति माता जी के करकमलों से 10 दिसम्बर 2021 को क्षुल्लिका सुयशमति माताजी तथा कुसुम बहन मुंबई को दीक्षाये दी गई जिनका नाम क्रमशः आर्यिका सुपर्वमति माताजी, क्षुल्लिका सुधर्ममति माताजी रखा गया।

सागर-आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन तपोवन तीर्थ बहेरिया टिगड्डा सिद्धगुवां सागर में 11 दिसम्बर 2021 को रमेश भैया भोपाल को क्षुल्लक दीक्षा दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक श्री भूदत्तसागर रखा गया।

बांसवाड़ा- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से 14 दिसम्बर 2021 को ब्र. मैना दीदी इंदौर, ब्र. अंगूरी दीदी शाहगढ़ को दीक्षाये दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री स्वाध्यायश्री माताजी, क्षुल्लिका श्री सामायिकश्री माताजी रखा गया।

महमूदाबाद (उ.प्र.)- आचार्य श्री विमर्शसागर महाराज जी के करकमलों से कैलाशचन्द्र जी कोटा एवं मीरा दीदी शिवपुरी को दीक्षाये दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री विश्वगसागर जी महाराज, क्षुल्लिका विदिक्षांत श्री माताजी रखा गया।

पंचकल्याणक

भिण्ड- मुनि श्री विहसंतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 13 जनवरी से 17 जनवरी 2022 किया जायेगा।

बानपुर (उ.प्र.)- मुनि श्री सुप्रभसागर, मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर अतिशय क्षेत्र बानपुर ललितपुर (उ.प्र.) में 22 से 27 जनवरी 2022 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ब्र. जयकुमार जी निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगी।

गिरार (उ.प्र.)- मुनि श्री सुप्रभसागर, मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर अतिशय क्षेत्र गिरार ललितपुर (उ.प्र.) में 8 से 14 फरवरी 2022 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ब्र. जयकुमार जी निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगी।

चंदेरी- मुनि श्री निर्णयसागर महाराज तथा मुनि श्री पद्मसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 8 से 14 दिसम्बर 2021 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा श्री विमल कुमार जी सौरया टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न हुई।

श्री 1008 सिद्धचक्र

महामंडल विधान संपन्न

इंदौर- श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान ब्र. संजीव भैया टीकमगढ़ के विधानाचार्यत्व में दिनांक 15 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2021 तक श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर छत्रपति नगर इंदौर में संपन्न हुआ। समापन अवसर पर भगवान की 24 पालकियों के माध्यम से शोभायात्रा निकाली गई।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच परीक्षा

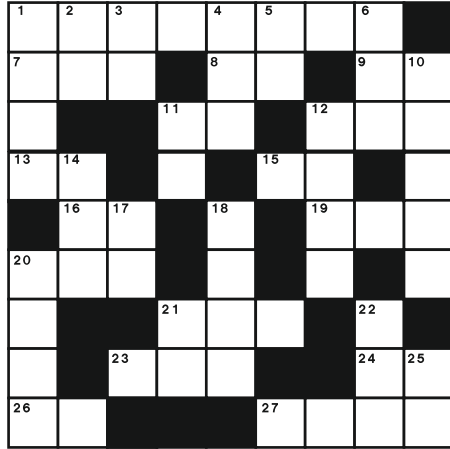
संस्कार सागर हिन्दी मासिक श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर से आयोजित जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच का आयोजन 16 जनवरी 2022 रविवार को श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आप से पूछे गये 1000 प्रश्नों में से 100 प्रश्नों के उत्तर लिखित में देना होगा। जिसका समय 2 घंटे रहेगा।

अतः आप अपने आने की सूचना पूर्व कार्यालय में देने का कष्ट करें। ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। आपको अपने साथ संस्कार सागर में प्रकाशित दस माह के कूपन को जोड़कर लाना अनिवार्य है।

इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः 1 लाख रूपया नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री गजेन्द्र जैन (गिन्नी गुप) इन्दौर, 51000 रूपया नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री आजाद मोदी (मोदी प्रिंटर्स) इन्दौर, 31000 नगद एवं स्मृति चिन्ह श्री नीरज जैन (गजेन्द्र पब्लिकेशन) दिल्ली की ओर से दिया जावेगा। समान अंक अधिक लोगों के आने पर डॉ. सिस्टम से पुरस्कार पात्रता का निर्णय होगा। उत्तर सीट पर काटा पीटी होने पर उत्तर सीट को अमान्य किया जायेगा। पुरस्कार पात्रता के लिये संस्कार सागर का सदस्य होना अनिवार्य है।

प्रत्येक माह इन ग्रंथों से 100 प्रश्न पूछे गये हैं- (1). मार्च-छहदाला दर्पण, (2). अप्रैल-तीर्थकर 108 ज्ञातव्य, (3). मई- विराट स्वरूप विद्यासागर, (4). जून-मेरी जीवन गाथा भाग-2, (5). जुलाई-आदिपुराण भाग-1, (6). अगस्त- लघु जिनचक्र विधान, श्रीपुर पार्श्वनाथ विधान 50-50 प्रश्न, (7). सितम्बर-संस्कार सागर चातुर्मास विशेषांक सितम्बर, (8). अक्टूबर-कहानी संग्रह (एलक सिद्धांतसागर जी द्वारा रचित), (9). नवम्बर-जैन गौरव (श्री हुकुमचंद जी सावला), (10). दिसम्बर-सन्मति तर्क सूत्र।

वर्ग पहेली 267



ऊपर से नीचे

1. पुराण संग्रह ग्रंथ के रचयिता आचार्य -4
2. भूल, भ्रम, वस्तु स्वरूप की भूल झूठा लगाव -2
3. समूह, सेना, संगठन, टुकड़ी -2
4. पपीहा -3
5. अमरूद, जामफल -2
6. चाँदी -2
10. सागर जिले का वह नगर जहाँ पहाड़ी पर किला हो और बीना नदी के तट पर बसा गांव -5
11. सांझ, संध्या -2
12. समतल, तेज बहाव -4
14. दृष्टि -3
17. धूल -2
18. प्रथम तीर्थंकर का नाम -4
20. 26 जनवरी को आने वाला पर्व -4
21. म.प्र. के मालवा का एक जिला -2
22. शोक, गहरा दुख -3
25. स्वामी, घर वाला -2

बाये से दाये

1. चापेकर परिवार के एक क्रांतिकारी का नाम -8
7. भवन, अलय -3
8. वृक्ष, झाड़, पादय -2
9. बुढ़ापा -2
11. सन्जी, हरी तरकारी -2
12. परत, लेयर -3
13. दुखी, गरीब, निर्धन -2
15. हाथ, हस्त -2
16. सम्पत्ति, दौलत -2
19. आसमान में रंग बिरंगी उड़ने वाली -3
20. इच्छा, स्वार्थ -3
21. अपराध -3
23. स्वामी रहित, सहारा शून्य -3
24. इच्छा का निरोध करने वाला अनुष्ठान -2
26. दो इंद्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव -2
27. आ.विद्यासागर जी की एक श्रेष्ठ शिष्या आर्यिका माताजी जिनका जन्म रहली तहसील में हुआ हो। -4

वर्ग पहेली 266 का हल

1	2	3	4	5	6	7
स	ना	त	न	अ	ष्टा	प
8	र	ह	म	त	ज	9
र	ग	र	ह	र	क	त
10	ग	र	ह	र	क	त
म	ग	र	म	प	क्ष	14
15	रा	ह	सं	क	ट	मा
17	ग	ग	न	फ	मा	वा
ण	स	र	ल	ता	न	21
22	ध	र	म	त	मी	ज
27	र	ज	त	प	ट	ल
28	ल	ल	क			

.....सदस्यता क्र.
पता :
.....

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे



नियम

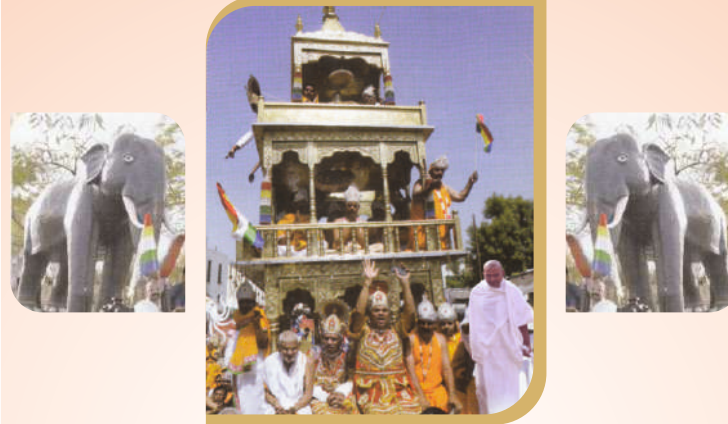
१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक
कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शीलड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पड़े, पंचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरु, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध हैं।



विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कतश, रजत कतश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कतश आदि जो एक्सेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काते नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बाद जूट बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कतश का समय पर आईर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इब्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आईर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक
Click पर

www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

